

शिक्षा विभाग, राजस्थान
के लिये



सूर्य प्रकाशन मन्दिर
दिससों का चौक, पीपनेर

वीरपी कृष्णमरी

सम्पादक
अन्नाराम सुदामा



द्वितीय संस्करण 1982

प्रकाशक : शिक्षा विभाग राजस्थान के निम्न पूर्व प्रकाशन मंदिर, बीकानेर /
मुद्रण : - नाइस ऑफसेट प्रिण्टिंग इन्फ्रा-२० / प्रथम संस्करण :
५ दिसम्बर १९७६ / पाठ्यक्रम : मुकुमार कदबी / मूल्य : ती सयें बीसठ पैसे

KORNEE KALAM REE

(Rajasthani Vividha)

Edited by : Anna Ram 'Sudama'

Price Rs. 9.64 P.

आमुख

मेरे विचार में अब विभाग की शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना का परिचय देने की आवश्यकता नहीं रही है। इस सुपरिचित योजना के अन्तर्गत प्रकाशित शिक्षक रचनाकारों की साहित्यिक कृतियों का सर्वत्र स्वागत हुआ है और देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में इन प्रकाशनों की चर्चा हुई है। प्रसन्नता का विषय है कि साहित्य सृजन को गति देने में राजस्थान ने अन्य राज्यों के समक्ष एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

योजना के प्रारम्भिक वर्षों में प्रयत्न यह रहा कि शिक्षक साहित्यकारों की सर्जनात्मक प्रतिभा को प्रकाश में लाया जाय। एक सीमा तक विभाग का यह प्रयाम सफल रहा है। वस्तुतः शिक्षक दिवस प्रकाशनो ने राज्य में शिक्षक साहित्यकारों की एक पीढ़ी तैयार की है। राज्य के इन अग्रणी रचनाकारों ने नई-नई विधाओं और शैलियों में नये-नये प्रयोग किये हैं और अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त की है। इनकी रचनाओं ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान कायम की है। अब आवश्यकता यह है कि अधिकाधिक संख्या में नये-नये लेखक इन प्रकाशनो से प्रेरित होकर अपनी लेखन प्रतिभा को विकसित करें।

शिक्षक दिवस प्रकाशनों को पल्लवित, पुष्पित करने में देश के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। समय समय पर हमारे अनुरोध पर इन प्रख्यात साहित्यकारों ने प्रकाशनों का संपादन-दामित्व वहन कर अंकुरित होते रचनाकर्मियों का मार्ग प्रशस्त किया।

आज तक इस योजना के अन्तर्गत कुल इकसठ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। संख्यात्मक दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

इस वर्ष के पाँच प्रकाशन और उनके संपादक हैं—

१. एक कदम आगे (कहानी संकलन) : संपा० ममता कालिया
२. लगभग जीवन (कविता संकलन) : संपा० सीताधर जगूड़ी
३. जीवत यात्रा का कोलाज/नं० ?

(निबंध संकलन) : संपा० डॉ० जगदीश जोशी

४. कीरणी कलम री

(राजस्थानी संकलन) : संपा० अन्नाराम मुदामा

५. ये किताब बच्चों की

(बाल साहित्य) : संपा० डॉ० हरिकृष्ण देवसरे।

सम्पादकों को अपनी अपनी विधाओं में महारत हासिल है। इन यशस्वी सम्पादकों ने अल्पावधि में ही ढेर सारी रचनाओं में से चयन कर संपादन किया इसके लिए मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है इनके द्वारा संपादित प्रकाशनो का पाठक स्वागत करेंगे।

बच्चों के लिए एक अलग पुस्तक प्रकाशित किया जाना इस वर्ष के प्रकाशनो की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। विश्वास है बच्चों को बाल वर्ष में अपने अध्यापकों की यह सौगात पसंद आयेगी।

मैं सभी रचनाकारों को, जिनकी रचनाएँ इन प्रकाशनो के लिए चुनी गईं अथवा नहीं भी चुनी गईं, बधाई देता हूँ क्योंकि सभी के सम्मिलित प्रयास से ही इन पुस्तकों का प्रकाशन संभव हो सका है। पुस्तकों के प्रकाशक का भी मैं आभारी हूँ।

अनिल वंश्य

निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक
शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

सम्पादकीय

राजस्थान शिक्षा विभाग, आए साल शिक्षक दिवस पर, राजस्थान रँ सृजनशील शिक्षका री रचनावां रा, भिन्न-भिन्न विधावा में केई संकलन छपा'र, छविवन्त करै । मन मे एक प्रश्न उठै, कै शिक्षा विभाग रँ ई गोरख धन्धै सू किसा सिद्धा नीपजै है, क्यों करै इतो तसियो बो ? सरळ चेतना, सँज अर जी नै जचतो उत्तर देवै कै "हाँ नीपजै है सिद्धा बीरै, मोत्यां सू ही जादा भूँघा, जिकां री आब में धरती हँसै अर मानखो मुळकै ।" विभाग न ठूँठिया खोदै अर न रम-तिया वणा वणा'र बजार मे बेचै । यो धरती रो उद्देश्य मूर्तिमन्त करण रो बीपार करै । आपरै बीपार नै कुण को चावैनी ऊँचो करणो ? बाळ प्रतिभा रा, सहस-सहस सूरजमुखी अंखुवा, सिद्धा वणन रँ कोड मे, हर साल सरस्वती री धरती पर मूँ निकाळै । वा नै खाद चाईजै, यूरिया अर फास्फेट री नही—सृजनशील खाद जिकी मानस रो निर्माण करै । विभाग बी पोछ रँ रुन्नाळै गुर्यां री मानस—धरती मे सृजनात्मक, कोई सोई खदाण सोधै । बी नै ऊपर लावण रो बहुमुखी योजना वणावै, आ प्रकाशन योजना बी रो ही एक ठोस भाग है । अध्यापका में ऊपर आवैती प्रतिभा री आ खाद, 'ज्यू खरचै त्यू त्यू बढै', काई अन्त है बीरो ?

अबार आ बरसा मे, उच्च प्राथमिक पाठशाला सू ले'र, उच्च माध्यमिक विद्यालय तांई, बाळ प्रतिभावा री हस्तलिखित अर मुद्रित पत्र पत्रिकांवां, केई जग्या देघणी मे आवै । स्कूल मे एक दो अध्यापक ही जे जागता अर बी खाद रा घनी है, तो बाळ प्रतिभा नै बैगी वधण रो मौको मिलै अर मिलै बीरै चौमुखी छिटकतै डाळां नै गुरु

८ री अनुभूति रो नुवों अर विस्तृत आकास । कालान्तर मे, कुण जाण
 किसी प्रतिभा बाढ़ावन्दी रो आधी इकाई तोड़ती कठे जा पूगै—
 जिन्हें नै मान्यता बड़ीकै । ई सूं विभाग अर गुरु दोनूं गौरवान्वित
 हुवै, अर धरती हुवै बड़भागण । विभाग रै बौपार री साख
 (गुडविल) विद्या अर विवेक रै बजार में लोह लीक बणै । विभाग
 तयार करै गुरवा नै अर गुरु करै शिष्या नै । प्रतिभा विकास रो ओ
 मंगलमय चक्र चालै जितो ही शुभ । ई सूं धरती पर प्राणदायी सुगन्ध
 री सृष्टि हुवै ।

विविधा री सगळी विधावां, एकै कांती जठे सृजनशील शिक्षक सू
 जुडी है, बठे बीरी बास आवास री परिधि—जनमानस सू भी ।
 भिन्न भिन्न छेला मे बसतां थकां भी, परिधि बीरी आधी देश
 ही समझो । वो भीड़ सू भरयै सहारा में भी है, जठे आम आदमी
 मसीन बण्यो घडी रै सूइया दाईं समै रै घेरै मे बन्ध्यो है । बठे कुठा,
 पीड़ा, शोषण, हत्या, आत्महत्या, ठगी, चोरी, धूसखोरी, पाकेटमारी
 अर बेईमानी सै मिलै । बठे अयंचालित जीवन है, स्वाभाविक कम
 अर बणावटी जादा । वो प्रकृति रै खुल्ले अंचल मे भी है, जठे
 स्वाभिमान सूं सिर उठाया डूंगर-डूंगरघा री धरती है, बीरी गोद मे
 कठे ही आरसी सा ऊजळा, अर धब्बा खावती दही सा उछळता
 ताल अर झीला है । सीढ़ीनुभा खेत, बांरें आसै पासै छोटा छोटा गांव
 अर उदास झूपड़घा री बस्तियां झुरमुटा मे बिखरी । भील, कांजर
 भीणा, बाबरी, आदिबास्या रा टाबर अर कठोर प्रकृति सूं जूझता
 बारा अपठ अभिभावक । वो बठे ही है जठे धार री धरती पर, उप-
 निवेमयादी सा अणमीत घोरा, अर बांसूं घिरघा गांव अर छीदी-
 छीदी दाण्या । बांसूं निकळ निकळ आंवता, अधभूखा, अधनागा अर
 उषाणा भोळा टाबर । बांरा अभिभावक प्रकृति री उदासी सू
 लडता, आधी परम्परावा मे डूब्या अर गळत ब्यवस्था सूं दुख पांवता
 जीवन यापन करै ।

प्रकृति रै भिन्न भिन्न परिवेश नै ओढतै, अनुभवतै, सृजनशील
 अध्यापक रा चित्तराम सिद्धहस्तता अर गुणात्मकता लिया ऊंचा अर
 अनूठा हुणा चाहीजै हा । बा में जठे सहरी घुटन अर कृत्रिमता रै
 विरुद्ध विद्रोह रा स्वर सूजणा चाहीजै हा, बठे दाण्यां अर झूपड़घां री
 कमर भी चुपनही रहणी चाईजै ही । भिन्न-भिन्न भू-भागों-रा लोक
 जीवन अर लोक संस्कृति, बां रचनावां मे जे मुखरित हुंता तो
 निश्च ही बा एक प्रामाणिक उपलब्धि हुंती । हूं सोचूं हूं विभाग री

६ ई विविधा रो जिया जिया प्रचार प्रसार हुसी, बहुमुखता लिया सबली सू सबली रचनावा आसी। आयोई चितरामां मे घणा ही चितराम दसा है जिका सिद्धहस्तता कानी तो नही, पण गुणात्मकता कानी जरूर है वै। सिद्ध हस्त हुणें नैं हूँ इत्तो जरूरी को समझूनी, जितो कै लेखक रो, आपरी रचना यातर ईमानदार हुणों है। ईमान-दारी री-परख आ है, कै बा रचना आसैं पासैं रैं जनजीवण सूं जुड़ी हुवैं। अन्याय अर अन्धविश्वास री प्रतिक्रिया मे बा कोई सळ राख'र नही, खुल'र अभिव्यक्ति करती हुवैं। साधारण सूं जुड़'र सामी आवैं, बा रचना असाधारण बणै—आज नहीं तो काल अर असाधारण री चिन्ता में, साधारण नैं पूठ दै, बा रचना तीन कौड़ी सूं ऊपर को उठैनी।

एक सिद्धहस्त लेखक आज जे घरती सू बेमनो हु'र चांद सितारां रा गीत लिखै, धर्म कर्म री मरो परम्परावां नैं कलम रो छिड़को दे'र खड़ी करै, मिनख नैं भगवान बणा'र बीरी अर्चना मे रचना करै, कूडी जासूसी रा किला खड़ा करै, आर्घि अर अल्पायु प्रेम अर सस्ती संवस रा घासछोटी चितराम उभारै, अर आँधी राजनीति रैं साकड़ें छीलरां मे छपछप करतो राग दरबारी आलापें तो बीरो सिद्धहस्त हुणों हूँ बेकार ही नही, घातक समझू हूँ कै वो अणपक्की आम चेतना नैं सही दिसा देखण सूं भ्रमित कर, बाधा पैदा करै। आ सिद्धहस्तता नैतिक अपराध है।

वारी सिद्धहस्तता नैं भी हूँ ठीक को समझूनी जिका अवार रोटी कपड़ें अर सिर घुसोवण घासफूसी आवास नैं तपै, तकै, तरसैं बानें कोई निमन्त्र, छन्देदो, खेजड़ो, लीलटास, उड उड म्हारा काळा कागला, बाजरी री रोटी ऊपर फोफळियां रो साग, लग ज्यासी तावडियो, भूमल अर मरवण रा गीत सुणायें। बुझतैं आदमी नैं चाहीजें स्नेह शक्ति अर सही दिसा, कवि अर गायक घांटें बानें, 'कद म्हारा पिवजी घर आसी'। सन्निपात अर गुजराती आळें नैं कोई टडाई अर रूहअफजा घामें, तो बीनैं घातक ही समझणों चाईजें।

अंमरजैसी रैं सम्बा दिनां मे चोटी रैं अखबारां मे, आकासगमन करते साधुवांरी चमत्कारी बातां, काळभैरवी अर भूताना किस्सा, तन्त्रमन्त्र रा गुप्त अर अनुठा रहस्य महीना महीनां किस्तां में रूपायित हुया। आम चेतना नैं गुमराह करण रो ओ काळो बीपार हो। सिद्धहस्तता री ईसू बेसी दयनीय अवस्था और काई हुवैं ही? ई विविधा में लेखक री पीठ जठें आपरी नही आम रो रही है, वठें बा

१० आम पाठक नै दाय आसी। सिद्धहस्तता में जे कीं कमी है तो ही भविष्य बीरो ऊजळो है। सरूप देखतां सम्भावना नै मूरजमुखी आंकणी चाईजै।

‘आ कोई बात है, ब्यावरो विज्ञापन, ठंडी मुळक, बाळगोठियो, दूजो चक्रव्यूह, वखत रो बेली, म्हारी उणरी बात अर तीन जाळी खागी, कहाण्यां हैं, जिकें में पैली कहाणी आंगण सूं स्कूल ताई रो सैज वातावरण उपस्थित करती एक सबळी अर जीवन्त रचना है। दूजी में प्रवाह सैज, भासा मुहावरेदार अर व्यंग उछळतो फूटतो फवें, पण बीमे अतिरंजना बेसी अर असलियत कम है। शब्द गठन में स्थानीय मोह नही हुतो तो कथा और निखरती। ठंडी मुळक अर वखत रो बेसी दोनू ही चरित्र प्रधान है, अर है सरल सम्बेग तियां। बाळगोठियो केई जाग्यां बे जचतें शब्दों सूं बोझिल है। अणऔपतो आवृत्ति अर अतिरंजना सूं बचणी चाईजै ही बा। दूजो चक्रव्यूह, अर म्हारी उणरी बात, विकास खातर दोना नै ही की-की कँनवास और चाईजै। तीत जाळी खागी, घटना प्रधान है—कसाव माँगै है। वूजी, ठाकुर सा’ब, म्हारो भोळो भाळो गोपाळ, अर बापडो लीडर रेखा चित्र है। ठाकुर सा’ब रो स्वाभिमान और उभरणों चाईजै हो। ‘गोपाळ में शब्दावळी केई जाग्यां अतिरंजित हुणो। फलक की लम्बो हुणो चाईजै हो। ‘वूजी’ कसाव अर संशोधन चाई है। ‘बापडो लीडर’ में अभिव्यक्ति स्थानीय संकटाई में कैद है। बीनै कसाव अर सुधार दोनू ही चाईजै। मिनी कहाण्यां सरल अर प्रेरणादायक है। ‘एक जन वैज्ञानिक’—सूठ साच अर अतिरंजना तो लेखक जाणै पण है प्रेरणादायक। इसी रचना में कल्पना अर अग्दाज रो निवास कम खटै। पड़दा भरम रा—वार्तालाप रा बोत, भरम पर चोट करता फिट अर फवता है।

कवितावा में ‘हूँ जनता हूँ’ अर ‘सूटो’ दोनू ही बड़ी काया री है। पैली सत्रिम्ब अर सबळी है, पण वर्तमान रै परिप्रेक्ष्य में पण पसारण नै की जाग्यां और चावै बा। दूसरी री भासा तो मंजी है पण है शब्द जंगल में भटकपोडी। बार बार री आवृत्ति सूं असली उणिपारी डकतो सो सागं बीरो। सूटो, आधी, बाढ अर बिरखा जिसा सूं प्रार्थना करणी कै ये गरीबां रो ध्यान राख्या, घोधी भावुकता अर अरुण्यरोदन है। ‘अँ हाय’, हाय सहयोगी हाथां सूं सबळा अर हावी हाथां सूं दुबळा वर्ण है—हकीमत है। ‘मरुधर बीच’ एक तुकान्त सबळी अभिव्यक्ति है। बाकी सगळी, अरदास, आक्रोस, ओळभो,

उपदेस अर खार-खोझ लियां आप आपरो हेला करै है ।

११

गीतां में गीतकार जठै, अरुंठिया, चरुंठिया, भरुंठिया, आवड़ी अर ताकड़ी, जिसी तुकबन्दी खातर हांफळो है बठै गीत रो ढाँचो जरूर खड़ो हुबै, पण हुबै प्राण हीण । बीरी पूर्ति कंठां सूं को हुबैनी । सगळां में गेयता है—संज है जठै सरसता चोबै है ।

आं रचनावां मे सबळी, निबळी अर काम चलाउ—सब तरै रो है पण शिक्षक रै बाल संसार रो समस्यामूळक, अर बीरै समाव रो तह ताई पूगती रचनात्मक, अर प्रेरणादायक कोई अभिव्यक्ति सजीव हुंर फो चमकी नी । चमकणी चाईज ही । घोड़ो गणगोरां नै हीं नहीं, तो फेर कद ? बाळक रो शिक्षक सूं बेसी अभिव्यक्ति करण आळो और कृण हुसी ? बो बीरी चेतना सागै रमै, बीनै टंटोल-टटोल देखै अर बीमे जीवन भरै ठोक बजा'र, पण बीनै टूटण को देनी । बो जीवन आगै जा'र राष्ट्र अर विश्व समूच रै सुख दुख सूं जुड़ै । कोई सृजनशील अध्यापक रा, इसी मिद्धि नै पूगण रा पगोदिया, जे आम अध्यापक रो मार्ग स्तोरो करै—दिसा सूचक बणै तो कितो आछो । साची पूछो तो शिक्षा संसार रो सफलता ही ई में है । ओ म्हारो न कीनै ही ओळभो अर न उपदेस, सुझाव है खाती । एक रै अनुभव रो लाभ अनेकां नै मिलै । विविधा, शिविरा अर नया शिक्षक ई खातर ही तो है ।

केई केई शिक्षकां रो तीन तीन च्यार च्यार विधावा आई, केयां फाईलां रो फाईलां अर रजिस्टर रा रजिस्टर भेज दिया । बी जंगल मे उतरण नै पूरो समे चाईजै । फेर हो कोसीस तो आ ही रही है कं जादा सूं जादा रचनाकार संकलन सागै जुड़ै । दो गद्य रचनावां, ई खातर छोडणी पड़ी कं बाने पढण खातर कोई सिलालेख बांचणियो चाईजै—पुराणा सिलालेख । एक घडी बांछ्यां तेडू तो एक पानों ही पूरो पल्ले को पढ़ैनी । ई अवस्था मे बाने, मै सरघा सूं हाथ जोड़'र हो सन्तोस कर लियो । एक पद्य रचना ई खातर छोडणी पड़ी कं बीं मे शब्द पूरा, पण अर्थ सिर पटक्या ही को लाधैनी ।

अध्यापकां सूं, छोटी बड़ी भात्रा रो गळती रो आस तो नहीं करणी चाईजै पण राजस्थानी बोलणी स्तोरी, लिखणों की अभ्यास मार्ग । की काई मोनळो ही समझो । अभ्यास रै अभाव में गळती हुणी कोई अस्वाभाविक नही, ठीक करदी बाने, पण जिकां पर स्थानीयता रो रंग खूब गैरो है बाने औरां खातर तो पछै, पैली आप खातर सोचणो चाईजै कं बीरा सृजनात्मक उणिपारा जादा सूं जादा पाठक ओळखै

ता बढ़िया है। रचना रो उद्देश्य ही ओ है कै बा जादा सू जादा गळां मे उतर'र आपरो इष्ट पूरो करै। आ बात ठीक है तो बाँत आम आदमी रा शब्द जिका नै फुटपाय रो आदमी बोलै, समझै, तोड़ना मरोड़ना नही चाईजै जियां दिन (दन) छिडकी (छिडकी) मिलना (मलना) फटाफट (फट्याफट) साफ (स्याफ), इतिहास (अतहास) आघो (आदो) दूध (दूद) मे (मं) छँ (छ) कै (क) इयां ही और घणां ही शब्द है। हुयो, हुया नै ब्हियो, ब्हिया, हूँ नै म्हूँ, मैं नै म्है अर घणखरै एकल ओकार माथै 'औ' री डबल सवारी जियां घोवणो (घोवणो) दूजो (दूजौ) दियो (दियो) मुख-मुख तो कुबै मे पढ़ायो अँ नुबै पाठक री अडचल और बघावै। यधता पाठक जे स-सकं नही चाबै आ बात, तो लेखक रै काई वाई रो ब्याव बिगडै है, बो भणूतो मोह करै ही बयो ? हाँ कोई पात बिसेस आपरी अभिव्यक्ति कठै ही ब्हियो अर भूँ सू करै तो कोई बात भी—स्वाभाविकता ही है। लेखक एकै कानी तो संस्कृत, उर्दू अर अंग्रेजी शब्द घड़ल्लै सू काम में सेवै अर दूजै कानी इसो संकोच करै कै आम शब्द री कामा तोड़ मरोड़ ओपरी करदैं।

विभाग री रचनात्मक नीति नै ध्यान में राखता जादा सू जादा सृजनशील प्रतिभावा ने आए साल सकलना मे रूपायित हुणो चाईजै—खाली बध्या बंधाया शिक्षक ही नही। रचनारमक सौन्दर्य जितै जादा शिक्षका मे ऊपर आसी बित्तो ही जादा फायदो बाळकां नै पूगसी—मूळ मे आ ही मनस्या विभाग री है। शुभम् भूयात्।

उदयरामसर (बीकानेर)

—अन्नाराम 'सुदामा'

आ ई कोई बात है ?

□ डॉ० नृसिंह राजपुरोहित

टण ! टण ! टणण !

तो स्कूल री झुजोडी घंटी ई लागणी । मरिया आज तो । हाल बस्ती जमावणी, मूडो घोवणी अर बाळ ई ओसणा । गैर हाजरी तो लाग इज गी । कितरी ई उतायळ करूं पण ठेट पुगूं जितरें तो छोरा प्रेयर ग्राउंड मायें पूग इज जावला । मूछंदर पी० टी० आई० हाथ में डंडी लियां मारकणा पाडा रै ज्युं डोळा काढतौ गेट मायें तयार मिळैला ।...लेट कमरसु एक तरफ ! अलग साईन ! क्यूं के प्रार्थना खतम व्हिया पछें आप परसाद बांटै लानी, पुरसगारी में कोई लारै नी रैय जावें ।

घर मे कितरी बार कंय दियो के टैमसर नी जागू तो जगाय दिया करो पण कुण परवा करै । उल्टी सतरै बातां सुणवाने मिलै ।...अबै आप कोई बोबी बूधता गीगा कोनी सो आपनै जगावां । सोळे बरस रा टोगड़ा व्हिया । बळद ब्यायें नी अरबूडो व्हे नी । चिता राखनै उठो क्यूं नी टैमसर । जद तो लाट साव आधी रात ताई हें हें-फें फें करता रोवता फिरैला अर अबै फा फू व्हियोडा हड़बड़ाट करैला ।...तो बोली आई कोई बात है ? नीद हायें खुलती व्हे तो पारी गरज ई कुण करै । घणी ई कोमिस करूं पण आख्या तो साळी खुलै इज नी । जोर कर नै माडांणी खोलू तो पाछी बंद व्हे जावै । आखी रात में पसवाडो ई फेरण री काम नी पड़ै । सूता के जाणें गळी बाढियो । एक नीद ई पूरी नी व्हे के कुकडू कू ! कुकडू कू ! रीस तो इसी आवें के फजलू मियां रा सगळा कूकड़ा नै पकड़ैर दड़वा मे घाल दू ।

दादोसा साव साची कं वें—आ उमर इज इज भातरी । वे किसी उमर कं वें इज नै ?...पनर पन्चीसी ? ना-ना गधा पन्चीसी । आप री गधा

पञ्चवीसी उमर रा वे कई मजेदार किस्सा सुणावे । सुणतां-सुणतां हंस-हंस नै पेट दुखणौ भाम जावे ।...पण अबै फुरती करौ नीं तो ठेट गमां पेट रो ठोड़ हयाळियां दुखणी आग जावैला ।

बो-गले मांठाळी गंगाराम हयाळी माथे पड़तां ई सगळी सरीर कासो रो याळी रें ज्यू झरणाट करण लाग जावे । वाळ तो ठीक कर लू थोडा । पण काच है कठे ? म्हं केवू इण घर में कईई कोई चीज ठामे माथे नीं लाधे । काम पड़यां पूछां तो कंधी कठे, के घट्टी नीचे, काच कठे, के चूल्हे लारें, पैन कठे के, सिनानपर में । वे देखो पप्पूजी महाराज काच लियां ऊमा । सूरज साम्ही राख नै चिळकणो करे । अरे अठी दे भई, दौड़ मत । मिनकी रे तो रौळ व्हे अर ऊंदरे रो घर भागे । यनें तो भर्जा आवे अर अठे जीव रो पड़ी । दे-दे, भाई है नीं । अर ओ काच ई कांई ठा मोहन जोदड़ी रो खुदाई में सूं निकळ्योड़ी के दादीसा रें दायजे मे आयोड़ी । आंख्यां फाड़ नै नीं देखां जितरें तो पत्तो ई नीं लागे । उण दिन मुलेमान क्लास में साची के बं हो—अबे थारो ई होठ सावळो पड़ण लागग्यो...होठां पर हंमाळी साफ दीसे । पण ठीक है धार धारें ज्यू रोज उस्तरी तो नीं रगड़णो पड़े । मियां एक पत्ती रोज खराब करतो व्हेला । ...उतावळ में बाळां में टाळ ई ठीकको नीं पड़ी, पण अबै पड़ी जिकीई चोवी ।

म्हू काह्यो नीं गेट माथे जमदूत तयार साधेसा । लो देख लो अबे । बिना बघावणा किया मांयने पग ई नीं देवण दे । पण आज तो राम वापरग्यो दीसे । कलेबो करनै नीं पघार्या व्हेला । मारकणो पाहो ई मूखो व्हे जितरें कोई रो नाम नीं लेवे । धाध्यां पछे इज फूफाड़ा करे । मीचो भायो घाल नै सोकड़ मनावो जिकी बात करो । इण में इज खेरियत है । पूठ में दो ओख्यां तीर रें ज्यू खुबती लागे तो लागण दो ।

हेडमास्टरजी पल्टी व्हेनै नुंवा पघारया । नुंवी मुल्ली जोर सू बांग देवे । कीं आपनै बोतण रो अणूतो बळो । बोतणा सब व्हे तो धीमान जी बंद ई नीं व्हे ।...प्यारा विद्याधियो !...तो अबै गई आध पूण घंटा री । ऊमां ऊमां टांगड़ा दुखणा आम जावे पण आपरो भासण पूरी नीं व्हे । अर भासण पूरी श्मियो के फौजी ओर्डर तयार—सेट आवण बाळा सगळाई मुरगा बण जावो । फौरन ! बणा सा बणां ! आप फरमावो तो मुरगा काई कबूतर ई बणांला । अबे तो बारें महीना फेर काढणा है । पछे तो थारें सारें...

मुलेमानियो क्लास में से सूं मोटी गर्घड़ी । फेर मुरगो बणे जद तणको तूताह व्हे जावे । इण हुरामी रें देखादेखी दूजां नै ई तणकी व्हेणो पड़े । नी तो प्रभात रा पोहर में दूगां माथे तड़ाक ! जाणे तकियो हाटकियो । अबे चम-गादड़ा ऊंधी लटकें ज्यू सटक्योड़ा टांगड़ा रें बीपली बारी मे ह्योय नै देखवो करो । वे देखो धोती रो एक पत्तो हाथ में लियां सपटक झड़ाक करता संस्कृत बाळा

पंडितजी पधारें। अब यां नै पूछी के गुरुदेव काई स्कूल रा नियम कानून फगत विद्याधियां खातर ईज है ? म्है तो एक मिनट ई लेट आवां तो मुरगा बणी अर गुरु जी एक घंटी लेट पधारें तो चिड़ी बणण रो ई काम नीं। आ ई कोई बात है ? पछे केवा के विद्याधियों में अनुसासन कोनी। अनुसासन तो आप इज सिखावो देवताजी ! 'विद्या ददाति विनयम्' मूंडी घांरो है, कैयबो करी। म्हारें मायें तो इण थोथी बातां रो कीं बसर नी पई। अर जे हिम्मत व्हे तो पधारो देखाणी, बणी म्हारे भेला मुरगा अर खमो अंकाधी डंडी। तो जानी गुरुदेव साची फरमावे।

"अ मुलेमानिया ! इतरो ऊंचो बयूं व्हे रे हरामी ! थोड़ी नीचो मर नी। घारें सारें सगळां नै ई दोरो व्हेणो पई। अर घणो ऊंचो व्हियां कोई ईनाम तो मिले कोनीं बेटा !"

"ओ कुण गणमणाट करे रे ? मौल आई है काई ?...ऊभा व्हे जावो सगळाई। चालो आज तो सस्ता में इज छूटा। नीं तो अबार मेंढक चाल रो हुकम व्हेतां ई मुरगा सू डेकरियो बणतां किसी जेज लागती। कईयां रा मूंडा तो देखो लाल बुट्ट व्हेया। सागण बादरा व्हे ज्यू सागें। पण मुरगा बण्यां एक आणंद तो है, ऊंघें मायें देखण रो मजो आवे—जाणें सिनेमा चालण लाग्यो।"

"यें अंग्रेजी रो होमवर्क कर लिथो मुलेमान ?"

"कठें कियो यार ! सिम्या रा तो सिनेमा देखण नै गया परा अर पछे नींद आयगी। ये कर लिथो ?"

"हां, म्है तो कर लिथो।"

"नकल टीपी व्हेला बेटा।"

"जा-जा घारें ज्यू ठोट थोड़ा इज हां

"अरे बाह रे हुंस्पार री पूछड़ी।"

"यें किसी पिक्चर देख्यो रे ?"

"जंगली।"

"यूं खुद ई जंगली है साला।"

"अरे यार गजब पिक्चर। काई तो स्टोरी, काई सीन सीनेरी अर काई हिरोईन। बस छम्क-छत्तो-सटकाबंद। मजो आयग्यो यार।"

"बाई फादर ?"

"पिता री कसम।"

"तो कार्ल फेर म्हारें सागें चालणो पइसी।"

"गणितवाळा माट सा'ब ई देखण नै आया। म्हारें बेन सारें इज निराज्या। मार सिगरेट पर सिगरेट। दो पकेटतो छतम कर इज दिया व्हेता।"

आ ई कोई बात है ? / १५

“यने ई बाढ़ तो आयगी न्हेला बेटा ?”

“बाढ़ तो आवे इज बार, कोई कने बैठो यू घूआघार सिगरेट फूके व
कियां रहीजे बता ?”

“कहभी कोनी गुरुजी एक फूंक बठोने ई ।”

“इंटरवेल पछे म्हुं तो अलगी जाय नें बैठग्यो ।”

“बलास मे तो श्रीमानजी किसीक मोटी-मोटी बातें करे ।”

“से ठीक है बार, यनेकई असली भेद री बातें बताय दू तो घू मानेलाई
कोनी । खुद गुरुजी बैगण खावे, दूजां नें परमोद बतावे । आई कोई बात है ?”

“अे बरडा मे कुण ऊमा रे ? घंटी मुणो को नीं काई ? कान फूटीया
है ?” मरिया ! भागो ! घुसो बलास में !

आज बीजगणित री बारी दीस । माट साँव फेक्टर कटावे । दूसरन
में जावे उषाने समझ में आवेला । आपाने तो कीं समझ में नीं आवे । क
पात दो अर ख पात च्यार अजब मोरख घंघो । पिताजी फेर जीव ग्यारी
दावे—ये स्कूल मे काई पढी रे ? थां नें साधारण हिसाब ई नीं आवे । म्हे
काई पढ़ा अर काई नी पढा जिको म्हारी जीव जाणे । एक दिन बलास में आप
नें बैठो तो ठा पड़े । बिहारो रा बूहा ! अेकूई दूहे रा तीन-तीन अर
निकळ । “देखन मे छोटे लगै, घाय करे संभरी । अर बीजगणित रा फेक्टर
नें कामरसियल प्रेक्टिस रा सवाल ? भगवान बचावे । भाषो खराब म्हे जावे
भाषो । चारें जमाने मे ककियो कंचळो नें खधियो खाजळो । सिढी बरणो
नें समा मनाया । घणी जोर तो बिषायकां रट नें कटबामित सीधी के पढ़ाई
पूरी । अठे कितरा तो विषय नें कितरा दूजा अफंडा । फगत एक जणा री सगळी
किताबा-कापियां भेली करने गवे भाषे लादी न्हे तो बापड़ी नीठ ऊपाई । उण
जमाने मे पाटी नें पैण-बस । खावण नें घापोघाप थी दूध अर भाखण रा लूदा ।
अठे बालडा रा ई जादा पड़े । उणदिन राम निकळग्यो सो दूध भाषली थोडी-
सीक मळाई चाटली तो भा कऊण लागी । इण उपरांत तुलना फेर ग्यारी
करे—रामलालजी री भंवरीयो चारे सूं दो बरस नैनो पण कितरो हुंस्पार ?
आवगी दुकान संभाळ । पक्की दुकानदार बण्योही । जवाब मे म्हुं कैय दू के
रोसन कुमार री बाप उमर मे थासूं ई नैनो पण कितरो हुंस्पार ! पूरी जितो
संभाळ । घाकड कलेक्टर बण्योही । तो कितोका खारी लागला । फालतू मे
कोई री अणूती तुलना करणी । आ ई कोई बात है ?

“ओ गुलेमानियो बदमास काई करे ? कोई अंट संट किताय बांचतो न्हेला ।
ऊपर गणित री किताब री कवर अर मायने ‘बंगाल का जादू’ । अे इणरा रोज
रा घंघा ।”

“काई करे रे ?”

“चुप रैय यार !”

“ब्रता तो खरी हराभी यूँ वाँचै काँई है ?”

“गुलसन नंदा रो उपन्यास ।”

“किसी ?”

“मन का पंछी ।”

“किसीक लागी रे ?”

“दूजो बात छोड़ दे ।”

“धै खुद मोल लियो ?”

“ना, भाई सा'ब लाया ।”

“...घेंड ! घेंड ! घेंड ! सुलेमान रँ मोरां मे मुक्का उडणा सर ज्हिया ।

माट सा'ब की नै उपन्यास पढ़तो देख लियो । वे उणरै हाथ सँ उपन्यास खोस नै सगळा नै बतावता कँवै—देखलो इय बदमासां रा मजा (इगरी मतलब सुलेमान अंकली इज बदमास नी है) ...रात नै सिनेमा मे रोवता फिरला । रीसिस में बाउंडरी बारै जाय नै बोड़ियां फूँकला अर गणित रा घंटा मे ‘मन का पंछी’ वाँचला । मन में तो आई के उठ नै कँय दू के गुरुदेव सिनेमा मे तो आप ई भेला इज हा । रही बात धूम्रपान री सो आप सिगरेट अरोगी अर ओ बापड़ी बोड़ी पीवै—इतरी फरक जरूर है । ...नोनसँस ! इंडिपट ! गेट आउट ! मोनीटर इणनै हेडमास्टर भी कर्न ले जा ! सगळी बात बताय दीजै ! ...पण रीसिस री घंटी लागगी अर सगळी नाटक उठै इज रकथी ।”

‘दिनूगै ई मुक्का पढ़्या बापड़ै रे अर सगळी र सांम्ही बेइज्जती न्यारी रही । मियै नै राजी करणी पड़सी । कठी गयो ? बारै निकळ ग्यो दीसै ।”

“असलाम उलेकम खां सा'ब !”

“चुप रैय यार ।”

“कयुं हजुर री तबियत की खराब है ?”

“मजाक मत कर यार ।”

“तो ज्हियो काँई साळा ? मुक्का तो कुल तीन पढ़्या । बारै तो माखी ई नी उठी ज्हेला ।”

“मुक्कां री कूज परवा करै यार !”

“तो पछे काँई दैण है ? क्लास में आपरी बेइज्जती रही यूँ ?”

“ना रे आपणी इज्जत फेर कर्दे ही ।”

“तो पछे काँई रोग है ?”

“म्हारी वा किताब माट सा'ब कर्न रैयगी । घरै गयां भाईसा फोड़ुंसा ।”

“काली पाछी माँग लीजै के सर पढी रहे तो गरीब री किताब तो पाछी

बचसाय दो।”

“हंसी कोई यार ! यनै तौ मजाकां सूजे अर अठे जीव री पड़ी।”

“तो रोवू किणनै, यनै ? दूजी खरीद लीजै साळा। मू मरु-मरुं कोई करे।”

“की दिन बीड़ी सिनेभा बद करणा पड़सी।”

“ठीक इज है। आगलौ घंटौ किणरी रे ?”

“अप्रेजी री।”

“इणरे पछे ?”

“सेती बाड़ी री।”

“आहा। जद तो मजौ आयग्यो प्यारा। माची पूछे तो इण घंटा रे अलावा म्हारी तो मन ई नो लागे।”

“तुका सेती माट सांव आदमी तो बढिया है।”

“आदमी कोई है अणमोल हीरो है।”

“च्यार महीना मे स्कूल रे बगीचे री काया पलट धैगी।”

“हर महीनै सच्ची कितरी विकै ठा है यनै ? च्यार सौ रुपियारी। धेल क्वालिफाईड है ओ आदमी—एम० एस० सी० ए० जी० पण हाथ मू काम कितरी करे ?”

“हा यार पावडी लेय नै माटी खोदण लागे तो जाणै चौधरी ठिकियो। इण आदमी री सरीर ई गजब री। जाणे तोप री गोळी।”

“वोली घतळावणी ई कितरी मीठी। जीकारा मिथा तो बात ई नी करै। मुळक तो जाणै मूडै छापीडी।”

“जद इज तो काम करण री मजौ आवै यार। म्हा बाळी क्यारी मे मटर देखी ? राजा मनी नुवी वीनणी रे ज्यू लुळ-गुळ नै जमी पूगसी है।”

“अ म्हा बाळी पागध ई किमी फोरो है ? मोटा घर री सेठानी रे ज्यू पसरतो इज जा गही है। क्यारिया ऊफण आयगी है।”

“इण मेगन मे लागे सेती बाड़ी सू आपणै अकूकै रे खाते मे दोय-बांघ मी रुपिया जमा धै जामी।

“ओ सै सेती माट सांव री प्रताप हे।”

“स्कूल मे मास्टर नाम एक दो इज है याग। बाकी तो सगळी भगार। राजा रे गजाने मे सीर है ओ पड्या चुगे अर मटर गू करे बापडा।”

“उण दिन धमदान मे याद है यनै ? सेती माट सांव तो पावडी लेय नै आपणै भेळा आपळिया अग वाणी सगळा पेंटा री जेबा मे हाथ घाल नै तणका तूसार धिड्योडा अळगा ऊभा। समिति रा प्रधान सांव ई खांगी पोतियो बांध नै कने त्यार। अर ऊबरडा साफ करवा नै विद्यार्थी। न्यू भाई, पां रे

हाथों रै मेहदी लाग्योही है ?”

“अर वे ऊपरखी गली वाला गेठ जी आय नै किताक बोल्या—प्यारी गली ई साफ कर दीजो मा ! क्यूँ सा ? गली थारी अर माक कग रहै । आई कोई बात है ? गरज रहै तो पचागे तगारी तेपनै अर दुवौ म्हार भेला ।”

“...अंग्रेजीवाला माट साँव क्लास मे गया दीस । मापरै जायता ई आप यही मोट सू ब्यारु मेर देखेला—कुण ऊभा न्हिया नै कुज नी न्हिया ? थोछा जागीर रा ठाकर नै पुजरे रो अपरती । पछे बाव जोर-नोर मू नाक मे बोलेला—सिट डाँन ! मिट डाँन ! जगियारी इज किसी कडोपो—बदर मुग्गम् । भूने तो देखतां इज रीम भावै । द्यूमनगोर । राँव फेर ग्यारी साँव भाप । अंग्रेजी मिवा तो बात इज नी करै । पण गरज रहै जद मल मे पल जाई ।” अरे भाई सुलेमान ! थाहा आपणे घरा जाईवै—आँटी गीमावणी है । सुलेमान इज ए गुड बाप । बाजकाल ओ मँगल करण लाग्यो है । बैरी गुड । बैरी गुड !...डोट हुर्यार । दूजा नै तो आप सफा बोफा दज समहै ।”

“ले सुलेमान चाल यार, उठीनै बारै छिया में बैठा । अंग्रेजी रो घटी उतरिया क्लास मे जायला ।”

“आज ए नोटिस बोर्ड कनै माणियां घणी शीमे रे, काई बात है ? कोई नुबी फरमान निकल्यो दीसे ।”

“धनै ठा कोनी आज अेम० अेम० अं० मा'र पधार रह्या है । चीगा घटा बाद स्कूल री छुट्टी है । सगला नै वारै स्वागत मे चालणी है ।”

“मुणाव नैदा आयग्या दीसे वाकी तो अेमले मा'व यमु तकलीफ देखता । रात री बयल कागला उडणा माई जद भमज तैपणी के दुकाळ पढण वालो है ।”

“यात तो घारी साची, आ नेताचा री तां जात इज कुजात ।”

“भारत मे आजादी फाई आई जाने वागला नै पीर मिली । धानिया-भगवानिया ई निहाल भूँग्या ।”

“कैवै फेर काई—हम गरीबी हटायेंगे ।”

“दूजा री तो ठा कोनी पण घारी खुद री गरीबी तो हटगी । पाँच बरस पै' ली इण जेमले रे घर मे कैवै भुआजी भच्चोड़ा लेवतो । आज पक्का मकान बणया अर कारां ई छरीद ली । पूछी इण चोर नै के घारे बाप कदेई बाँहो गयो ई मोलायो ?”

“अर ओ पचायत समिति री प्रधान ? मणा बद अमल (अफीम) बेच दिया रहैला इण । पुरे भोग्यले नै अमलदार बणाय दिया ।”

“मगळा एक भाळ्य रा मणिया रे । कोई छोटी तां कोई मोटी । अ

मन में आणता व्हेला के ए छोरा बापड़ा काई समयों ! एण यां नै ठा कोनी के ओ धोरा ई बाप हँ ।”

“...टणण ! टणण ! टणणण !

“काई छुट्टी व्हेगी रे ?”

“मैं कहाँ नी ओमले आवण बाळो हँ ।”

“एण ओमले तो आवै आपरो पापड़ सेकण नै अर छुट्टी व्हे स्कूल मे—
आ ई कोई बात हँ ?”

व्याव को विज्ञापन

□ अर्जुन 'सरविंद'

कुमारी कुसुम कली कोरा बत्तीस बसंत देखी छी । धनवंता बाप की पगौ छौं मे बी० ए० करी, एम०ए० में भरती हुई कै बाप श्रीराम जी की शरण सिधारग्या । कुमारी कुसुम कली का जीवन में बसंत की रूत आगी । पण बेगी ई भावुकता अर हिम्मत का फूल जीवन की डालां ऊपर खिलवा लाग्या अर वा बी० एड० को प्रशिक्षण ले'र डाक्टरेट की इस्कूल में मास्टरणी बणगी ।

कुसुम कली का जीवन मे ठंराण आयी तो सरवर-सी ठंरगी । बत्तीस पार कर'र भी वा आपका ब्याव का बारा मे नई सोच सकी । जीवन को फल खूब पाकर'र जद खूब फलपिलाबा लाग्यो तद कुसुमकली ई अणछुया अणभौ ने सजोबा की बात सोची । ऊँ में एक बिसेसता या छै कै जिस्या काम नै एक बार हाथ मे ले-ले, फेर सगळा गोरखघंघा छोड़'र जुट पड़े छै अर पूरो करपा पछे ई साँत ले छै । कुसुम कली का हाथ मे अब यो नुँबो काम आग्यो छै । पण ऊँके सामे मुश्किल या छी के नुवा काम नै करबा वास्ते पहल कुण सूँ कराती ? कोई के सामे हाथ फैलाबो वा सीधी ई कोने छी । ई वास्ते स्वाबलंबन की नीत अपना'र वा आप ई वर खोजबा की निरज करली ।

कुसुम कली की मासी दसा इतनी कोरी कोने छी कै कोई भांत की कमी ऊँका मारण मे रोड़ो पालती । फेर भी वा बर हैरबा कठी जासी ? एक दन आपका सलाट का पाना ऊपर ई उलझाण को नेतो भी वा काढती ! सुबे कलेवा की टेबल ऊपर एक महीनावार पतिका का पाछेला पाना पलट री छी कै दीठ ब्याव का विज्ञापन की पत ऊपर पड़ी । साबचेत एकू-एक विज्ञापन पढ़बा लागी । कई-कई रंग का विज्ञापन छै । कुसुम कली आपू आप कोई नै कामद मोड़'र बरदास करबो नई चाहै छी । ई वास्ते ऊँ दन की डाक सूँ ई आपनी वास्ते एक ब्याव को विज्ञापन माछ'र पतिका का दफतर में छपाया वास्ते घुसा बियो—

‘पच्चीसेक बरम की स्नातक, गोरी-फूटरी डावड़ी मुजब एक चोखो बर चावै छै । धुनासा वोरो चित्राम की लार पुगाओ ।’

कुसुम कळी की औरथा बत्तीस पण साखड़ी-तोड़ मोटापा कारण तामे चालीस सू ऊपर ई छै । रग अतरो गोरी केँ सैब भी सरमा जावै । नाक-मूडो भी फूटरो छै । पण वा विज्ञापन मे औस्था सात बरस कम ई मांडी । आपकी एकली अणपड़ नोकरणी गंगा का हाथ सँ कामद पुगा’र निचीती होगी ।

थोडाफ दना पछे ई कुसुम कळी की डाक को बोझ भी ऊँका डील ज्यू भारी होवा लाग्यो । नित आठ-दसेक कागद विज्ञापन का पडुत्तर मे आवा लाग्या । वा आवता कागदा नै एक फूटरी सीक फाईल मे सँज’र राखवा लागी ।

दीतवार की सुबै । कुसुम कळी आपका कमरा मे बदण-अगरबत्ती की लपटा मैकाई । लोन सू सोवता फूल तोड़’र गुलदस्तो बणायो अर आपकी टेबल ऊपर सजा दियो । आपणा धुल-धुल डील नै कुइसी ऊपर टुंसायो । कुइसी भारी पकड़ी की बणी छी, फेंर भी चढ़मड़ागी । हिरदा का समदर मे उछाळी खाती लैरां नै समेट कागदा की फाईल काडी । पूरा एक सौ इग्यारा कागद फाईल मे भेळा होग्या छ । उतणा ई चित्राम भी । वा बारी-बारी सू कागदा नै बाचती अर वा के लारें आमा चित्राम गोरी दीठ सू न्हाळती । कागद भात-भात का अजूवा सू भरपा छ । वा आधी फाईल भी कोनै घाच सकी । ऊँका मगज की नमा भरणा उठी । कोई चितराम सू कार्टून को सो उणियारो झलकै छी अर कोई मे फिल्मी नीमिखियापणा की वाम आवै छी । वां मे सू कोई एक कागद अर चितराम को चुणाव करवो ऊँका वास्ते गोरी कोने छी । कोई एक को फूटरो पणो चोखो लागतो तो दूजा रा गुण भावता । ई मुजब वा सगळा कागदा ऊपर फोरी-फोरी दीठ फेंला’र बार उम्मीदवारा का कागद अर चित्राम टाळ दिया । बच्योश नै पाछा ई फाईल में बद कर दिया । अब धार उम्मीद-वारा मे सू भी एक को चुणाव करवो ऊँ के वास्ते सोरो कोने छी । ई वास्ते वा चारा ई उम्मीदवारा को इटरव्यू नेवा की निरण करती । चारु नै एक ई समे अर दन की सूचना पुगादी ।

ऊँने इटरव्यू लेणो छी । इटरव्यू को गारा अणभो ऊँने कोने छो । पण आपकी नोकरी मुजब एक इटरव्यू जरूर दी छी । ई वास्ते आपका घर को वाता-वरण इटरव्यू नुमा बणायो । बरामदा भीतर इस्टूत गैरा’र नोकरणी बँठापी अर फनीचर नै सनीका सू जमवा दियो ।

पैला उम्मीदवार कमरा मे घुस्यो तद कुसुम कळी का बडा लालीपुत्या होठ मुळवया जिना कोने रे मक्या । नाव छी—शैलेन्द्र कुमार, चार फुट छे इंच तावो, इकलडो डींग अर औस्था पच्चीसेक बरम । शैलेन्द्र कुमार आपका डींग नै आधो झुका’र भादर डोक मेल दी । अर सामे पडधा कौब ऊपर बैठग्यो ।

कुसुम कळी पैलो सवाल धोंकवा लागी कें शंसेन्द्र कुमार आपू आप ई सवाल सर कर दिण्—‘बात आ है माताजी, कें वा आपकी डावडी है नै ? वा...’

कुसुम कळी अचरज मे पड़गी—‘कसी मूरखता की बात करो छो ? म्हारी अर डावडी ?’

‘हाँ सा, वा कुसुम कळी जी स्थान आपकी ई डावडी है नै ? ओं को कागद ई म्हारे फने गयो छो ।’

.....’

‘तो कुसुम कळी जी आपकी डावडी कोनै काई ?’

‘आपने गफलत होगी छै । मैं ई कुसुम कळी छू ।’

‘आSSSS !’ शंसेन्द्र कुमार की जीभ डावांडोळ होगी । कुसुम कळी का डील को आकार देखे’र हाथ-पग कीरतन भजवा लाग्या ।

कुसुम कळी एकाद सवाल करणो चाई । पण ओंकी तो जीभ ई जाणे ठठार’रे भँळी होगी । कुसुम कळो दुसळ खा’र बारें बँठी नौकरणी ने दूजो उम्मेदवार भेज्या को हुकम दियो ।

रूप कुमार ‘स्नेही’ अब सामें विराजमान छ । वा को रूप भी बखानवा जोग छै । माता का बणा सू भर्यो काळो भुसड चँरो । पान सू पीळा जरद हो’र पारें निकळ्या दात । जद सांस लेता, मूडा सू पायरिया को भभको कमरा मे फैल जातो । कुसुम कळी सवाल न्हाययो—‘आपको काम धंधो काई छै ?’

‘शुद्ध साहित्य-सेवा । जाणै लेखन तो चालै ई छै, मैं आजकाल फूटरा पणा का बोध की एक मीनावार पत्रिका काढू छू ।’ रूप कुमार ‘स्नेही’ का मूडा रूँ गबद थोडा अर बास गैरी-घणो निकळरी छै । अर हब्बी जिस्या नैन कुसुम कळी का नैरा ऊपर अस्या जमर्या छ जाणै भीत ऊपर बसमरी । पायरिया का भभका सू कुसुम कळी नै सांस लेबा दोरो होग्यो छै । कदै आपकी नाइ नै ओंची फेरती अर कदै सूळी । वा ओं दमघोटू वातावरण मू पाछो छुड़ावा को गैलो हेर’री छै अर रूप कुमार ‘स्नेही’ रोमांटिक मूठ बणाबा को जतन कर रैया छ—‘आप जिसी सुततर सोच वाली आगेलडी लुगाया की ई देम मे चायना छै । आप सू मिल’र घणू हरख हुयो । मैं धन्न होग्यो । अरे ? आप तो काई बोला ई कोने ? न्हाळो, इतरी गैरी साज भी काई ?’ स्नेही जी काई-काई कंता रैया, कुसुम कळी ने तोल ई नै पड़्या । घुटण सू मुप्ती पाबा ने छोड’र या दूजी काई नई मोच री छै । स्नेहीजी की जीभ टटवा को नांव ई नई लं री छै । वे बोल्या—‘जे आप जिसी जीवन को जोड़ावत मनै मिळ जावै तद आपरा उपन्यास ऊपर रंगई एक फिल्म बणात्यू । इसी घासू फिल्म कें म्हारी सगळी कल्पनावां ओं में फिट हो जावै अर फिल्म पडदा ऊपर आता ई हिट हो जावै । ऊ फिल्म मे हीरो को रोल मैं खुद निरूपण जाऊँ । तब आप हीरोणी को

रोल करवा ने राजी हो जाओ तो स्टार क्लब का नखरा ऊपर एक आखरी पाप जड़द्यू ।' अर स्नेहीजी टेबल ऊपर इत्यो घूत्तो भाद्यों कै फूलां को गुल-दस्तो कुसुमकली हाथ में नई घाम लेती तो फरस भावे गिर'र टूक-टूक हो जातो । चैरा ऊपर गुबरेली मुळकाण फैरा'र स्नेहीजी कंबा लाग्या—'अब आपणी ओड़ी सूं तो पूरी रजामंदी जाणो । मैं जाणू आपने भी कोई तर्र की अडचणा नई आवैली ।'

'आप औकात सू बारें की बात कर रैया छी ।'

फाट्या बांसकी जिसी हांसी ठाळता हुआ स्नेहीजी बोल्या—'रुसबा को रोल भी आप चोखी भांत निभात्यो छी । यो स्टाइल तो ऊं बणबावाळी फिलम मुजब इत्यो फिट हो जावेला के देखनियां एक दूजा ने कुहणी मारबा लाग जावेला ।'

कुसुम कली को चैरो रीस सूं तमतमाग्यो । स्नेहीजी ई तरां लट्ठ हुआ जावें छा कै एक-एक पळ ने अमोल जाण'र उठबा को नांव ई तै ले रैया छी । कुसुम कली झूमल छा'र फूट पड़ी—'ओमान ली, मनै दूजां को भी इन्टरभ्यू सेणो छे ।'

'अब दूजा की घायना ई काई रै जावें छै ? पण आप जावो तो कोई हरज कोनै । आपकी जो सगत मिली ऊं की ओळ्यूं कई-कई दनां म्हारा काळजा में बसी रैवेली ।' बोल पूरा कर'र ऊवा होता ई आपको थुड़दढो हाथ कुसुम कली सामे बघा दियो । कुसुम कली साटवयो छा'र परी सरकणी अर भारती संस्कृति की हिमायत करती आपका हाथ जोड़'र सनमान भी लई कइयो । पगत एक सबद तोप का गोळा ज्यू दाग दियो—'धन्यवाद !'

स्नेहीजी कमरा सू कइया तद कुसुम कली ने खुस'र सांस लेबा को औसर मिलयो । ऊ को काळजो धूकणी ज्यू चासबा लाग्यो । सोफा ऊपर पसरो बूद इसी हाल छी जाणें बड़ी बोसली गांठड़ी ऊपर-नीचे हो री छी । तीजो उम्मेदवार सामे परगट हुयी वो भी कुसुम कली ने अचरज में तैर दियो । 'आप को नांव ?'

'मनै बीरेन्द्र कुमार केवें छै ।' तीन सौ नम्बर का अड़दा की फोरी मुगंघ को टूक सबदा की लार भेळता पड़ुत्तर दियो ।

एक अगरबत्ती पेलवान की कापा अब सामे विराजणी छी । बार-बार भावन आता सर्म कुसुम कली देखी छी, ऊ की लम्बाई साड़ी छे फूट सूं भी बधीक जाण रही छी पण बोस भार कुसुम कली का अनुपात में एक चौथाई भी कोनै छी ।

बोली इतरी पतली क जिस्या गळा में कोई चिड़ी बैठा'र राखदी छी । पण बीरेन्द्र कुमारजी ऊंचा मोल का बूट अर टाई में इस्या सज रैया छी कै कोई कम्पनी का विज्ञापन एजेन्ट जाण पड़ता । पण ये तो कोई पब्लिक इस्कूल का

प्रतिपल छा । बात करवा को तरीको एकूँ एक साव-सुयरो छी । पण बै रसिक इतरा छा कै रूप कुमार स्नेही सूनू दस पांवड़ा बघीक । जै कुसुम कळी थोड़ीक भी सावचैत नही रैती तो ऊँका गेंद जिस्या डील सूनू बल्ला की भाँत सट जाता ।

तीन जथा का इंटरव्यू सूनू कुसुम कळी थाक'र इतरी बोझेली होगी छी'क चौथा नै बुलावा को सास कोनै रैयो छी । पण थोड़ीक देर सुस्ता'र ऊँ का मगज की नसा कळोट-फैर ली अर वा बारि ऊँधती नौकरणी गंगा ने चौथो आदमी पुगावा को हुकम न्हाक दियो ।

आवता को अभिवादन झेल'र कुसुम कळी सवाल कर्यो—'भाफ करज्यो मैं आपका सुपुत्तर जी ने बुलावो पुगायो छो । पण आप...?' 'हैं ५५५ हं, म्हारो पुत्तर तो बारैक बरस कोई छै । बो जा'र काँई करतो ?' बे पैसी हँस्या फैर हँसी नै मुळकाण मे फिरा'र बोल्या ।

कुसुम कळी के वास्तै या सब सूनू बघीक अचरज में गैर बाळी पैळी छी । आवता को उणियारो देख'र पैसी तो कुसुम कळी सँमगी छी । ऊँका सूनू भी सवाया आकार की दूद । लम्बाव कुसुम कळी सूनू चारेक इंच बघीक । खिजाब पोरवा कैस अर लट्ठूहा सी आख्या, डूंगर सा डील ऊपर-झूलतो जीलो सूट । कुसुम कळी अचरज सूनू मुनेसाल बजरिया ओही न्हाळती रैगी । बजरियाजी ई मुळक'र सवाल न्हाक्यो—'पाँ के अठै सूनू ब्याव को विज्ञापन कुणसी डावडी मुजब छपामो ग्यो छे ?'

'आप कुण कै वास्तै बघू तलासवा पधारया छी ? विज्ञापन तो मैं आपनै वास्तै ई पुगायो छो ।'

'मैं भी आपणा मुजब ई आपका दरसन वास्तै आयो छू ।'

'कागद में तो आपकी औस्था तीस बरस भाड़ी छी, पण आपकी...?'

'हां, म्हारी औस्था चाळीस सूनू एकाध बरस ऊपर-नीची ई छै । पण आपने विज्ञापन मे तो पच्चीस बरस ई भाड़ी छी ?'

कुसुम कळी बजरिया जी नै न्हाळ री छी अर बजरियाजी कुसुम-कळी ने । 'छोटो आप भी औस्था की बात । यो तो संयोग छी कै म्हा दोनू नै आपकी औस्था मार मजाक करणू छी । मैं म्हारी इस्थिति आपके सामँ छू । ई तैर में ई 'माइन मेंटल्स' भांव की फँकड़ी म्हारी घरां-घरू छै । घराणी चारेक बरस पैसी सुरण सिधारणी । एक बारैक बरस को टावर अर छेक बरस की डायड़ी छै । ब्याव को कोई विचार भी नै छी । पण अब सोचू छू कै घर की संभाळ करवा वास्तै कोई हुवँ तो टावरों नै माँ की ममता भी मिल जावँ अर आपका जीवन को एकलपणों भी फोरो हो जावँ । ई सूनू बघीक एक सबद भी मैं कैबो नई पाऊँ । आपका निरर्ण की सूजना आप जद भी चाधो पुगा दीज्यो ।' बजरियाजी पड़ी देखता बोल्या—'अब मैं चालूँ छू । नमस्कार !' कुसुम कळी

का चैरा ऊपर कैई-कैई भावा को चढाव-उतार चात्तुर्यो छी । ज्यूई बजरियाजी उठबा नै हुया कुसुम कळी अरदाम करी—‘आप चाय नी’र भी नै पधार सकोला ?’ बजरियाजी चिनीमाक मुळन्या अर आपका भारी भरकम डोल ने आराम सँ पोढ़ा’र बैठग्या । कुसुम कळी गंगा ने नास्तो लगावा वास्त हाको दियो । थोड़ीक देर मे टेबल ऊपर कैई प्लेटा मे मैक की लपटा उछळवा लागी । ज्या मे मिठायां, नमकीन, सब्ज का काटभोटा टुक अर बिस्कूट देख’र बजरियाजी मुळक्या—‘इतरी वेवस्था क्यू करी ?’

‘आपका डोल का आकार मुजब तो यो फीरो पड़ै छै ?’

‘या बात थे आपणे वास्त भी कै सको छो’क नै ?’ बजरियाजी फेर मुळक्या, कुसुमकळी झंपगी । अर दोनू ई नास्ता की प्लेटा ऊपर ई तरै पिळ पड़घा की थोड़ीक मिनटा में ई प्लेटा साब-बबर होगी ।

बजरियाजी जावा लाग्या जद अभिवादन का पड़ुत्तर मे कुसुमकळी इतरीक ई कै तकती—‘कदै आपकी पिफी सँ पिछाण करावो नै ?’

‘क्यू नै ?’ कदै काई आप जद चायो या आप सँ मिलवा आ जावेली ।’ बजरियाजी चलैग्या । कुसुमकळी धिड़की को पड़दो हटा’र न्हाळी । बजरियाजी की भूमिया कार ऊका बगला का बाडा सँ निकळ’र भड़क ऊपर दौड़वा लागी छी । बा ऊब्री सोच करै छी—बजरियाजी इंटरव्यू देवा आया छै पण काई’र काई लै’र भी चल्याग्या । कतरीक काई लेग्या ई को ई अनमान वा धिड़की की भाव मे ऊबी लगा री छी ।

ठंडी मुळक

• □ दीपचन्द सुथार

किलाम नै छोडैर ज्यूं ही काळू वारें निकळयो तो थोडेंक आन्तरें उभें डाकियै उण सामी इसारो कियो। कर्न आवताईज अेक निफाफो उण रै हाथ माय धमाय दियो। रेसीस री वगत ही। एकान्त मे जायैर बाचण लागी तो उण री आख्यां मे आंसुडा भरीज गिया, गळो गळगळो व्हैग्यो, चेरे माथें उदासी छायगी, विचारां रै गैरे समन्दर मांय डूबग्यो अर अेडो मैसूस व्है रियो हो कै जाणें उण माथें चिन्तावा री मोटो भाखर टूट पडधो। घंटी बाजताई किलाम माय जायैर पाछी पढ़ावण लागग्यो। पण पिताजी सू लिबयोडी ओळया रै रै उण री आख्यां सामी घूमती चकी चिन्तावां री रेखावां नै समन्दर री लैरा री भांत उभार अर मिटाय रयी ही। छुट्टी व्हैताई सगळा मास्टरा उण नै उदासी रो कारण पूछियो पण काळू-मुळक'र पढ़ूतर टाळ दियो।

काळू दुबळो-मत्तलो, कद ठिगणी, रंग-सांवळो, साधुवाद री परतीक अर परबुधियारो। बाळपणें सूरुज कोर्त री पोध्या रै सागैइज दूजी पोध्या बाचण री हद सू घणो कोड। बी० ए० पॅले नम्बर मू पाम करी, पण पिताजी री लूठी अर घणा बरसा सू चलती आ रयी बीमारी रै कारण सगळो घर रिपिया-भईसा मू घुपग्यो। अबै भाडें रै मकान मांय रै रियो है। अेडी हालत रै कारण मन मारैर काळू नै नोकरी करणी पडी। उणी दिना सू दोय सौ रिपिया हर मईन पिताजी नै बरोबर भेत्त रियो है। बाकी बचियोडे सू मोरो-दोरो आप अर छोटे भाई री पेट पाळ रियो है। नोकरी नाम्या हालताई पूरो अेक बरम भी नो हुयो, पण ईमोनदारी, अपणायत, भीठी बाणी, सातरी मंगत अर परोपकार री गैरी भावणा सूं सगलें गांव मांय इण री लोक-प्रियता री बेत्त दिन दूणी अर रात चौगणी फैलण लागी। तोय-दाय उण रै

मद्विचार, मुळज्योडा विचार अर सीदो-सादो रेंग-संग देख'र दांतां बिचें भांगळी देता यका उण री बडाई करता नीं याकता ।

ब्याळू किया पछें काळू कदील रें चानर्ण भिणाई-लिखाई अर विचारा माय मगन बहैयो । उणीज टेम दोय तीन मास्टर अर च्यार पांच मिनख कमरें माय जाय'र मार्चें मायें बंठग्या । मान-मनवार अर आदर-सत्कार रें पछें इटो-उठो री बाता करता यकां उदासी री कारण जाणणो चायौ पण काळू आ बात आछी तरें जाणतो ही, कें आपरी खाज तो आपरें हायां कुचरिया ही मिटे । इण वास्तं बात नें अणसुणो कर'र टाळ दी । घणी ताळताई फेर टाळ-मटोळ करी, पण आखिरकार बेळ्यां री हेत, अपनायत अर आत्मीयता नें नजर दीठ राख'र हियं हेठली सगळी बाता गागर मे सागर भरतां यका—
 “बोहा-बौत भळें रिपिया भेजण री बात कैई ।” आ सुण सगळा फिर करण लाग्ता । सोच-विचार रें पछें दूजो कोई चारो नी देख'र द्यूशन री राय दी । पण आ बात भी उण रें सिद्धान्तां रें परतीकूळ ही । आखिर आपरें खरचें माय भळें कमी कर'र अवं डाई सो रिपिया भेजणा सरू किया । होळ-होळ लोमां ने ठा पडी तो आठ-दस पूठ पाछें निन्दा करण बाळा भी उणरी प्रसंसा रा पुल बाधता यका उण रें सिद्धान्तां मायें चालच साम्या । बोझाक दिनां घाद उण री बाळमोठ्ठो हरख इणी गांव माय जाय'र बोपार करण लागी । बूढा-बडेरा कंता आया है कें—“पईसां-टबकां री लाळ साम्या पछें नीं छूटै ।” ओ उणरी सगली परस्विति सू वाकफ हुता यका भी अक नुवें पईसै री मदद तो अलगी रयी, उल्टी मईने में आठ-दस दिन तो जीमण री बगत जाय'र घामो देय देवतो ।

अक दिन काळू नें ई बात री पती पड्यो कें हरखू अक हफ्तें सू बीमार है । आ सुणताई उणीज टेम समाळण सारू उण रें घरें जाय'र सेवा-चाकरी माय लागयो । दस-पनरा दिना मे बो पूरी तरें ठीक बहैयो । इण बीमारो माय काळू री जेब सू दबा-भाणी, चाय-दूध आद रा पन्चास रिपिया खरच बहैया । पण हरखू रातो पईसो छोट'र धिनवाद रा दोय आखर भी जीव मायें नी लामो । पण काळू ई बात री रस्ती भर परवाह नी की । उणनं तो आपरो कर्तव्य निभावणी हो, सो रात-दिन सेवा कर'र पूरो कियो । इण सू उण रें हिवडें माय घणी र्जन हो । खेर—बोपार नें जमतो नी देख सेवट पाछो गांव जाय'र घघी करण लागी । होळ होळ काम-धन्यो चोत्रो जमगियो अर सातरा रिपियां भी कमा लिया ।

गम्भी री छुट्टियां हर बरस काळू आपरें गांव मायें बितावतो । जद-कद मारन माय हरखू मिसतो तद् दोनू बेती घणें हरख अर उमाव सू मिसता, चाय री दुकान मे बैठ'र मनहें री बातां करता, पण बित री भुगतान तो

काळू नै ईज करणी पड़तो । इण तरै कैई बरस बीत गया । पण काळू दोसती मांय भीन-मेख री ईज फरक नो आवण दियो ।

सगळा दिन जेक सरोखा नीं हुबै । इस्कूल खुलण आहा दोय-तीन दिन देख'र उण नै गादी भाई री चिन्ता रात'र दिन सतावण लागी । उण कनै चीज-जस्तु छोड'र फूटी कोटी भी नीं हो, जिण नै बेच किराये-भाड़े रा पईसा ला सकै । आखिर हिम्मत राख'र जीवण में पैलीवार उणरी दुकान रै दासै मायें पग परियो । हरछू पणै हरख सू गळै लगाय'र आपरें कुडै गादी मायें बिठायो । घणी-ताळताई इठी-उठी री बातां करी । गिलास भर ठंडो पाणी पायो । पण आवण री कारण नीं पूछियो । काठो कायो होय'र आखिर पच्चीस रिपियां रै वास्तै अरज करी । आ सुणताई उणरी आंक्यां साथी अंघाळी आयगी । हाथां रा सोता उड़ग्या । सेवट हीमत राख'र माथो कुचरलो अर आंक्यां नीची कियां होळैक बोल्हो—“आप जेई बैली रै घातिर जान भी तयार है ।” आ केय'र हाथ मांय रिपिया घामतो पूठो बोल्हो—“कद तोई भेज दोला ।” बात री उमळी देखतो यको काळू केयो—“—दस दिनां रै मांय मांय मेल बुंसा, आप किणी तरै री चिन्ता-फिकर मत करीजौ ।” धिनवाद रै मन्दा रै सागैईज काळू नै उठतो देख'र झट दूजी बार ठंडै पाणी री गिलास घामतो यको मुळक'र बोल्हो, “तीन रिपिया ब्याज रा भेज दिराइजो ।” आ सुणताई काळू री आंक्यां पळ भर रै वास्तै इण तरै बिर बूझी जाणै नाइया मांय बेवती रगत बन्द बूझ्यो । रिपियां नै गादी मायें मेल'र कष्ट मातर भांगी मांग खाना बूझ्यो अर हरछू आंक्यां फाड़'र देखतोईज रैग्यो ।

वाळगोठियो

□ कल्याण गौतम

सदा आळी धाई दिन रें डोढ वजताई चिपाई रो काम बन्द हुवायो । कनजी कारीगर अर तीनू मजूर आपरें कपडा री रेत अर चुनो झाडता पाधरा आणन्द-सागर कानी दुरग्या ! आणन्द सागर मे जावण री वाता आब इणा मे दिनुगें तू ई चाल रैयी ही । वात गिडकें खडग्यी अर आज दोपारें आळी चाय रो सैग खरजो कनजी कारीगर आपरें माथें ओट लीधो । तय हुयो'क चाय पीवणी तो आज आणन्द सागर मे ई ज पीवणी । आणन्द सागर इण नगरी रो नामी गरामी पण मुहगो होटल । ऊची दमारत, मृडार्ग चवढो बीगान, होटल री आर्भ बरणी दमकती छत, चिनवनी कुग्ग्या, अमकता लोटिया, अर ठीङ्-ठीङ् चमचमाता फिरत्यारा गा अजुवा होटा रें माय बडताई माई मिनख रो मन मोय लेवै । होटल रें आर्ग पांथ-सात फटफटिया, दो-व्योरक स्कूटरिया अर कोई दस बारेंक साईकिना तो अटग ऊभी रें वं । टेंस्वा अर काराई आवै, पडी'क ठमं भळं धूट नै धूवो उडावती न्हाठ जावै ।

होटल नै माय जुदा-जुदा पण उधाडा बेबिन । कंदिन मे जोडा । फूटरा फर्ग । जोडा रें माय मं केई-ई तो गावाणीई आर्भ री जळवाळा नै होळी री मो झळ । दामणी ग्य दमकें । हेमाणी आभा झळमळ करै । चौफेरी चकाचूंध । पिल-ग्रिन हसै । खळग्रळ्या चालै । चायरी चुस्वया नै निगरेटा रें धूवां बिब मोवणी मामा मा मीटा मुस्कावै । आख्या सू बतळावै । भळं मुधरा मुळकें ग्यारा-ग्यारा जोडा ।

होटल रें माय बडताई कनजी अर उण रें वेल्पां री तो आख्याई चक-राईअयो । काउन्टर माथें ऊर्भ मिनख री पंथी दुत्कार-रळियोही हज-हज करती मवानी निजर उण च्याग रें चौफेरी बटक्या सी ओढण लागी । पण वो होटलगो काउन्टरियो मिनख उण च्यारा मू मूई सूफी नी बोल्पो । कनजी आपरें तीग्यू बेन्यां ममेत मूडार्ग पडी खानी कुरस्या माथें बंठग्या । फूटरें

चितराम कोरियोहें च्यार काच रें गिमासा में बैरो पाणी ले'र आय पूरयो । उण रें चैर कानी तार'र कनजी कारीगर हुकम छोडयो—“च्यार पळे ट समोसा नै च्यार चाय...।” बैरो तुरत-फुरत पूठो घिरयो नै दूर्जे छिण स्टील री च्यार पळे टा मे गरमा-गरम समोसा, भेळें ई चाट नै हरेक पळे ट सामें चम्मच अर काटा । आप आपरी पळे टां मांय सूनू च्याम् ई बेनी चम्मच-कांटे नै काढ'र पस-वाडें मेल्ला अर समोसै नै हाथ मे ज्ञान'र पाघरा बाकें उं तोड'र खावण लाग्ता । गनजी नै उण देळा लग्गयो जाणें पमवाडली गुरम्यां मावला जोडा उणा नै हीण निजरया मू धूर रैया है, अर हवळें-हवळें दवी जुवानां आपरें डोळ सारु फथ्या कस रैया हें । कनजी एक'र रा उडती सी पखेरु-दीठ उं सावत होटल नै जोयो । इतरे तो एक खूणें उं उणारें कान मे वात-चीत रो एक टुकडो उछन'र आय पछयो—“बन्दर क्या जाणें अदरख का स्वाद...।” कनजी बडी नै झाक्या तो उणारी निजर वठेंई अटक'कर रियगी । समोसो हाथ मे रियग्यो अर बाको फाट्योटे । वै बापल उयू एक सास उण मिनग्र नै धूरण लाग्ता । उण मिनग्र री बगल मे तीतर-पग्री एक हर री भी परी, हीगळू मा होट, आठ्यां मायें मदलकियै कमम्बी रंग रो मोटो चस्मो । चस्मै माय जपकती प्याला सी प्यारी अषपळी आठ्या । घडी-गडी माथै रें झटका सायें झूलती मग्नूमी लच्छ-सी न्हानी-न्हानी लट । पैराग उण रो मिनग्र जैडोई । दोऊं जणा रें एकसाई झोटा माथै पै यधियोडा । अळगैउ देगणै नै माथै-रा केसा कानीसू तो दोया चिचै नग माथा रें भेदगे पंग माथोई पारक दीसै, पण उण मेमडी रा हीगळू मा राचियोडा होट नै चादि मां चिनकतां चै'रो हेला मारै हो के सा'ब री बगल मे बैठी जकी कृण हांय सकें है । स्यात आ बट-भागण उण री मेमडी ही हुवै । पण कनजी उण मेमडी नै नीं उण री बगल मे बँटे उण मा'ब नै धूर रैया हा, जका रें मूडेंउं मुणी उयाहो ‘बन्दर क्या जाणें अदरख का स्वाद ।’

कनजी नै एकई मांग मू आपरें कानी झावता देग'र वै दोउं जगई अबै की लचकाणा पडग्या नै आपरी निजरया कोरली । धूडजी मजूर बोल्या—
“जीमो कारीगरां ! बळणचो, आप ! क नैवै है ? इया भळें काई पूरो हो ? ये तो समोसा जीमो...।”

विचाळें मधजी ग्यान छमकियो—“तुमसी इण संसार मे मांत-भातरा...”
पण कनजी कारीगर मर्घ री ग्यान गुटकीरी सुणी—अणसुणो करता हुया आपरें हाथ रें समोसे री पळे ट मे न्हाव' जमा हुवता बोल्या—“धूडजी... ! मोडा ओ मिनग्र तो म्हनै की सँदो-सँदो लग्गवै, म्हारें घणें पुराणें बाळगोठिया जेंडो । कठें आं...मांताणीटें म्हागे बाळगोठियो बेती...हं...माद कोनी भायां अं...अ...हेमूटो...”

—“पारो बाळगोठियो ! ! अर अटें ।

—कनजी ! गैला तो नी हुया हो । आज बँडी ओपरी बातां भळं कीकर करो हो । थारो बेली अठं-कठं सू आयो ? आपा तो आप मजूरी सारू अठं परमोम मे आयोडा हां, कठं आपां रो गाव, कठं रंग्या बाळक-टावर नं कठं रंया बेली-मिन्तर । कदैई घोळी-घोळी चमकै जिकी सैगई जिनस चांदी...

धूडजी रं मूडैरी बात पुरी हुयै उणसू पंसा तो कनजी कारोगर उण भिनख नं जाय बतलाया । बं आपरं होटा मायं एक अमाप हरखरी तं'र विसे-रता, मिसरी सी मीठी बाणी मे, घणी खुशी, अणघाय आत्ममीयता नं ऊंचे आत्म विश्वास मे उमायोडा बोल्या—“अरे... बाबू हेमराज ! भला मिळ्या, कंडो संजोग रळ्यो हे आज बरसां पछं...। थे कद सू अठं हो...? राजी तो हो...?”

कनजी एकं सास मे ई सार-सार स्पॉई की बोलाया, पण सामलो भिनख उण कानी खारी मीटउ जौवतो यको बोल्तो—“अच्छा...। तो आज विनूयें सू अजू म्हैई मिल्यो हू थानं । फुरमाओ ? काई हुकम है ? कुण चाईवें आपनै... हेमराज...? पण कंडो हेमराज ? पधारो अठेंडं, बधो आम्हूनं... अठं कोई हेमराज हेमराज नी ।”

अर बो आपरो माथो झटक'र बगल मे बँडी मेमडी कानी जोय'र नीची आवाज में हवळ-हवळ बुद-बुदायो—“हं अ...! दुनिया मे कंडा-कंडा अजूबा जन्तु फिर है मीना । आज की कुबेला तियोडी गुटको फोडा घाल रंयो दीसं बापडं नै...।” भळं दोवा रं होटा मायं मुघरी मदभरी मीठी मुळक तं'रपी नं दूजं छिग दोडंजणा खारी जं'र मनेजी-मीटउ कनजी नै पगा री पगरवपा सूं लेय'र मायं री पोतियं ताई कोनी तरं बलोळण साग्या । कनजी ओजूई जडू—बप्पा बठं ऊमा स्सोई की देख-मुण रंया हा । उण रो चं'रो अघाणवक धोनो हुयोप्यो नै तिरस्कार भरी हीणता हिलूरा लेवण सायी, अर आख्यां पयराई उयोडी ऊंडी डोक मे डूब-डूब'र की जोम लावण नै ताकड कर रंयोही उणा रं मन में एक उयल-मुपल माबियोडी ही । माय नं गोटा-सा ऊछळं हा, नै भद्र छिया सा चालं हा, अंधाधुंध बिचार मनषण री आघ्यां-सी ऊमटं ही पण बं अकार रा भळं अपनं आप मायं कानू राखता हुया बोल्या—“अरे हेमजी ? पूं अजू म्हैई ओळख्यो कोनी...? म्है धारो बाळगोठिया हं कानूडो... बेतं कर दीसा री बं पोसाळां, आपा सागै-सागै भणीजण नै जावंता हा ।.....” कनजी रं मूडै री बात पुरी भी नी हुय पाई हो' क बो भिनख रोसो बळतो आपरं डील नै झटक'र कुसीं सू ऊभो हुय्यो, अर तेवर बदल'र बोल्तो—“अरे मिस्टर ! खाना हो यहाँ से या पुलिस को फोन करूं । आया बड़ा बाळगोठिया...”

उण भिनख रा मू तेवर बदळियोडा देख'र अंकर रा तो कनजी रं मन में की ठबको सो हुयो, पण दूजं छिग बं आपं सूं बारं हुवंता निजर आया ।

अंचाणचक उणांरी आंख्यां अंगारं ज्यू जगण गयो नै दातांतं कटीड-सां उपडया । की आव देख्यो नीं ताव, बै सामलें मिनख नै कोसी तरें वकण लाग्ता, “अरे बेईमान हेमूडा ! थारें इत्तो मयेधज ! म्हनै इग बात रो ठा नी हो, क यू अंडो वदळ्यो । हरामी ! यू म्हारें सागें तो खैर नी भणीज्यो हुर्वला, पण यू दोसा रो रेंवणियो कोनी ? थारो मकान डूगरी रें हेठें ल्हीडी-दोसा नें कोनी... ? अर बोल यू मूस्या पंगारी रो बेटो कोनी ? धनै व। बात भी चेतै वय हुर्वला जद थारें वापरी मादगी रा दिनां मे अंकर थारें वापरें रात रो बघत घणी दोराई ही अर आपा दोज आधी रात रा डाक्टर नै बुलावण नै गया हा, तद धनै कृतियो घायग्यो हो, अर छव महीना ही थारी टागडी सावळ नी हुयी ही । म्है तो आज कूडो अर पीयोडोई सई पण थोडा चेतै कर वें चितराम जद यू घर सूरि पिया नीर परोरं चुरांमाता रें मेळें मे न्हाळ्यो हो, तद म्है अर थारो वाप धनै जोवता फिरपा हा । बेईमान...।”

कनजी कारगर यू रीसा बळता बकें हा । अर वो मिनख तिरमिर-तिरमिर सीळी सी आंठ्या सूरु जाळें हो, पण अंडो लाथावें हो जाणें उणरी काया सुन्न हुयगी है, जाणें उण रो छाती मायें अंचाणचक दासकनाग आय अम्यो हुवें अर फुंकारा मारण लाग्यो हुवें वय ।

कनजी खगारेंर आप रो मळो नाफ कर्च्यो, अर अंक दस रिपिया रो नोट काडेंर आपरें बेत्या कानी कैवयो नै अणबोल्याई तुरत-फुरत पूठा पिट्या अर ठळें उण मिनख सूरु नेतावणी मे बोल्या—“जंडो मत पोमीज लाडी ! सर्म-सर्म री बात है । गैर जाणई । पण ओजूई रे यू म्हनै नी ओलज्यो तो अम्है इण भला मिनखा मे तो धनै ओरु के कैवू, थोडो बारें आव, थारा सागीडा पोत उधाडू । अर धनै चेतै अणाउ कें म्है कुण हूं...।” यू कैवता कनजी घुरतई होटताजें बारें निसरग्या । उणारा तीनू बैनी की समज नी पायरेया हा, कें आगिर जो रासो वाई है ?

होटन रो मालिक, तीन च्यारेक नोकर अर केई बीजा मिनख बठें भेळा हुयग्या हा । भीड मे सूरु एक जणो पूठयो—“काईं बात हुई, इंजीनेरसांव !”

—“की कोनी थार ! कोई म्हारनै गांव कानलोई मिनख है । त्यात कों गुटंको नियोडो लागं जको वावळ बकें है ।”

पण इंजीनेर रें मन मे सागीडो पछतावो पछाडां मारें हो । सरम सूरु उण रो निब्र छिण-छिण जमी कुचरें ही ।

कनजी नै यू बारें गयो देखेंर उण रा तीनू बैली भी तवका तोलो करता उठ्या अर चमकयोई मिरपा सा इन्न-बिन्न जोवता काउन्टर कानी टरपा ।

बिचाळ इंजीनेर हेमराज उठ परो'र हाथरो इसारो करती काउन्टर
वाळ मिनख नै कह्यो—“इणारो पेमन्ट भी भ्हे ईज करस्यू । बोसो किता
पईसा हुया...।”

—नीं नीं बाबू मा'ब ! पईसा जाप भळ काई नेग रा चुकाओ ?
सामलो बस रिपिया रो मोट देय'र गयो है । (धूइजी कह्यो)

मुणताई अचापनक इंजीनेर रै चैरै मायें हीणता हिलूरा सेवण लागी,
बो चमगूंगे दाई बाको फाड़तो झांखतोई रैयो । घड़ी-घड़ी भाई सहज हुवणरो
बा असफल चेस्टा करे पण, उप रै दिल मायें जाणै कोई भारी भरकम बूटां स
तक-तक'र हुजस्कं लास्यां जड़ रैयो हो ।

धूइजी नै लखायो जाणै इंजीनेर ने माय रो माय कोई धारदार चीज
बाइया जाय रैयी है । बे अेक छिण उण रै चैरै कानी भळ तबया, पण उणरी
मुन्न बापरती आंढयां सूं बच पदा'र हूजें छिण होटल सूं बारें नितरग्या । इंजी-
नेर भी उणां रै लारें-लारेंई पण ठरडतो बारें आयग्यो अर आपरा दोळ हाथ
जोड़'र कनजी सूं भांफी मागतो दीस्यो । मदछकियै कसूम्यै रंग रै चस्मै आळी
मेमडी हाथ मे ब्रैंग बोलावती पसबाई ऊभी ही ! मुघरो-मुघरो वायरो उणरा
कवळा-कुस्तळ मखतूली लच्छाने बरोळ-बरोळ जावै हो ।

दूजो चक्रव्यूह

□ कुम्बनसिंह 'सजल'

बी रा बाप रो सुरगवास हुआं आज तीन दिन हुग्या हा। वो रोज रा किरिया कमं सू निवृत हो की मनन सो करतो एकलो बैठपो हो। विचारधारा बी री मोसर (मृत्यु भोज) रा प्रश्न पर फेर जा अटकी। वो आपका यार दोस्ता नै कैवतो 'जब गिरस्ती री व्यवस्था बी रा हाथ में आवैगी तो वो गलत व बेबुनियाद रुढ़ियों नै पेड़ पर लागी सूखी डाली की तरां तोड़'र जला देगे। बी नै गरव होइयो हो कि वो आपका बाप की मौत के दिन बैकूटी जित्ती बेकार रश्म कोनी निभाई अर बैकूटी न निकालवो मोसर न करवा को सूचक है। वो पक्को निश्चय कर मेल्यो हो कि समाज सू चाये कतो ही जूमणो पड़ै वो गलत रिवाज कोनी निभावैगे। आपरी ई पैती जीत की याद सू बी रा होठों पे हँसी दोइगी।

"पार्न, भीतर भावूजी बुसाबै है।" वो देख्यो बी का चाचा को लड़को बीरसिंह यो संदेश से'र आयो है। बीरसिंह बी की माताजी नै भावूजी ही कैवे है जियां वो भी आपरी माताजी नै।

"क्यूं के बात है?" वो बीरसिंह नै पूछयो।

"मनै तो मासूम कोनी, पण उठै चार पाँच आदमी और बैठपा है।" बीरसिंह बोल्यो।

सुन'र बी का मन मे कीं शंका हुई पण बी आपरी शका मे दबा लीनी और उठ'र बीरसिंह के साथ भीतर चल्योगो। भीतर जा'र बी देख्यो बीं री माताजी कर्न बी रा तीन चाचा, एक सगे व दो परिवार रा, तीन मुगायां एक परिवार मे बीं री दादी, एक बी रा अर की पिरोतन अर एक पटवारण। सब लोग बी री माताजी नै बेर'र बैठपा हा। बी नै देख'र बीं रो मन फेर एक जाणकार आशंका सू धड़कना लाग्यो पण वो फेर आपरा मन नै पक्को कइयो अर आपरी माताजी नै बोल्यो "के बात है भावू?"

बी रो माताजी तो की बोली कोनी, बी रो चाचो बोल्पो, "महेस बाज बा है, आज दादा भाई न मर्या तीन दिन हुग्या। आज सूं गरुड पुराण रो पारायण चालू हो ज्याणू चाये।" सुण'र महेस न आपरा मन रो आशका सांव में बदलती दीखबा लागी। वो जानै हो के गरुड पुराण रो पारायण भी मोसर रो सूचना वै है। वो बोल्पो। "चाचाजी, जद आपां मोसर नी करा हां तो गरुड पुराण रा पारायण को काई औचित्य है?"

म्हाने तो गांव हाला जठी के भी निकला हा वा ही कैय हैं कि परताप सिंघ जी रो जनाबो बिना बैकूटी तो गही गिरगणू चाये हो मास्टर जी आ काई सोची? परताप जी गांव में, समाज में पूछ वाला भिनख हा। वा को मोसर तो होवणू ही चाई जं।" बी रा परिवार रो एक चाचो बोल्पो।

"आ बात तो ठीक है चाचाजी, पण आप जाणो हां, मेरै चार सड़क्या है इणा रो ब्याव, सड़कां रे पडाई रो खरचो अर ऊपर मूं पिताजी रो छोड़पोडो वस हजार रो करजो।" महेस बोल्पो।

"मास्साब, परताप जी पांके कने सो क्यू छोट'र मर्या है। ये कोकई भरोसै कोनी। इयां का पूछ आला ठाकर रो खरच तो होवणू ई चाईजं।" पिरोतण बोली।

"बिना बैकूटी ये ठाकरां न सेग्या, मन तो पणी ई सरम आई, पण हूं तो लुगार्ई हूं, की के कोनी सकी, बावलो धाने आ चाये ही? पा कने काई कोनी? भगवान को दियोडो सो क्यू है।" पटवाराण बोली।

महेस बडा घरम सकट में हो। वो क्यू बोन ही नी रल्लो हो। वो सोण्यो 'माताजी भी आज चुप है जद कि पिताजी रा सुरगवाग हाळें दिन माताजी ही बी न मोसर जिती गळत म्ळी में तोडबा रो माहस बघायो। महेस न चुपचाप देख'र बी रो चाचो बोल्पो "आज आपा न सो क्यू मिळै है। चापे जी महाजन कनां आपा बीस तीस हजार रो सामान उठा सका हां। मारो समाज आपणें ऊपर आगली उठार्यो है। आपा न दादा भाई को गोमर करणू ही है।

वो आपरा ई चाचा न आछी तरां जानै है। एक बार बी रो भोई चाचो बी का मगाबा पर एक आदमी कने पाच सो रुपया ल्यार खुद बरतगो हो, बी न पाच पीसा भी कोनी दिया। "अबी, रुपयां रो धाने काई कमी है। धाने धामें जिस्ता रुपया हूं देस्यु।" पिरोतण बोली।

महेस न जाणकारी है कि आ वा ही लुगार्ई है जो गाव हाळा न सात-सात रिपिया संकडा पर उधार रुपया देव है। "हूं पटवारी जी न के देस्यु धाने चाये जिस्तो सामान आपणी दूकान सूं लेयो। रुपया थारं कने होवें जणा दे

दीज्यो।" पटवारण बोली।

परिवार रो बो मिनख जो बी रो चाचो लागे हो, बोल्पो "महेश तू यूं कर। आपा पटवारी जी रो दूकान सूं मोसर रो सारो सामान से आवां पछे जद हीसाब करस्या तो आधा रुपया हूं दे देस्यूं अर आधा तू दीजै। महेश ई चाचा नै आछी तरां जाणै है। वो मन मे सोच्यो 'ओ वो ही मिनख है जद मैं मकान बणवारियो हो तो योही आश्वासन दियो हो अर पछे एक काणी कोही भी काढ़र कोनी दोनी।

महेश बोल्पो "पिताजी रो मोसर कर बा की म्हारी तो बिलकुल भी सलाह कोनी। म्हारै सामे जिको खरचो है आप सब जानू हो अर जो करजो चुकाणू है वो हूं जाणू हूं। ई स्थिति मे ई बेकार की रुढ़ी पर हूं तो पाई भी कोनी खरचूं।"

"तू दादा भाई रो खरच नी करे लो तो हूं करस्यूं। यो मेरो भी तो भाई हो।" महेश रो चाचो बोल्पो। "ये भाई सूं इसो ही मातो निभावो हो तो आप करदो मन की एतराज कोनी।" महेश बोल्पो। "क्यूं कर दे ये खरच, तू काई भीख मागै है। तेरे छनै आज तो वै सब क्यूं छोड़'र भस्या है। तनै की ही चीज रै विसर कोनी राख्यो।" बी रो माताजी बोली।

अब स्थिति बी रो समझ में आवा लागी कि ये सारा जणा माताजी नै मोसर खातर उकसाई है। वो जाणै है कि बी रां परिवार रा सारा भाई आ चावै है कि वो हमेशा कर्जदार बण्यू रहै अर कदे भी करजा सूं मुक्त न भई। ये लोग ई मौका नै हाथ सूं निकळवा नही देवो चावै क्यूंकि यो पांच हजार रुपया खरचा रो अवसर है। माताजी रो बात सुण'र महेश नै घरती आपरा पगां तळा सूं पिसकती लागी।

"लेकिन भायू तू ही तो बी दिन मनै समझायो हो। घर रो आमद खर्च के तेरा सूं छानू है। ई स्थिति में यो पांच हजार को बेकार खर्च कीं काम रो।" वो बोल्पो।

"ओ विरया खरचो कोनी, ममाज मे म्हारी नाक कटै है। हूं मरूं जणा चाये तूं फी मना करजे पण म्हारै सामे धारै बाप रो मोसर तो कर।" माताजी बोली।

"महेश, परताप पूछण हानो मिनख हो, आज ई मौका पर जै कीं कोनी वरां तो आपणा परिवार रो हल्ली होवै। सो तू सोच अर ओ काम तो तनै करपा ही सरती।" बी का परिवार में लागण हाल्ली दादीजी बोली।

"हूं एक सूं साध भी यो काम कोनी करूं। के मैं सारी उमर करजा मे पिसतो रँवू। म्हारी तनया भी इत्ता करजा का ब्याज वास्तै कम पड़ती। फेर टावर काई धारिंसा, काई पेरंता।" महेश जावा खातर उठवा लाग्यो। बी नै

उठतो देख'र बी रां माताजी बी रां चाचा नै कैयो "गिरवरजी, टहर में म्हारी जो तीन बीगा जमीन है चाई बी नै बेच'र ठाकर रो खरच करो। ओ नी करै तो जाणदयो। ई का टाबरां नै पाछबादयो ई की तनछा सूं।" सुणकर साच्या ई महेश की आख्या आगै अंधेरा छायगो। वो धम्म सूं उनटो बैठगयो।

"ये सोचो मास्टरजी, ठाकर के बार-बार मरैला। समाज में जकी रिवाजां हे बै तो निभाणी ही पढ़सी खर पे डरो क्यूं हो, चारै जमीन रहो, नोकरी रही।" पुरोतण बोली।

"गांव में इसो कुण मिनख है जका कै करजो नहीं है। करजा सूं काई बबरणू। करजो मिनखा कैई होवै है। अगर टैम पै म्हे की काम सूं चूरगा तो समाज में म्हारी नाक कट जासी।" महेश का परिवार रो एक चाचो बोल्यो।

"हूं कैरी हूं, बै सारी बिवस्ता करो। मिसरजी नै गहड़ पुराण बांचण रो कहैवाद्यो खर सारो इस्तजाम करो। ओ पीसा देसी तो ठीक है नही तो वा जमीन बेच'र हूं देसूं खरचो।" महेश रो मां बोली।

"पटवारी जो नै कै'र हूं दो तीन दिन में सामान मंगा देसूं, छाद, धी, बेसन सो क्यूं। ये तो ठाठ सूं होबणदयो ठाकर रो मोसर।" पटवारण बोली।

महेश सोच्यो बी की आज वाही गति होरी है जकी सात महारप्पां रा चक्रपूह रा चंगुल में फंस'र अभिमन्यु री हुई ही। बी नै नै 'हां' कैवता बणी न 'ना'। शनै-शनै सारा जणा एक-एक कर जावण लाग्या। अंत में वो भी 'हादयोहा' सिपाही की तरां पग बढ़ा तो बठा सूं बस दिषो।

बखत रो बेली

० मुरलीधर शर्मा 'विमल'

शिवरातरी नै घर-घणियाणी अर टाबर बास-भोहलै रो खुगाया अर टाबरा सागै शिववाडी चल्पा जावै । म्हैं म्हारै कमरिये मे ठालै पंसारी रै उठावै-मेल ज्यू, म्हारा पोथी पानडा रो उठावो-मेलो कलं । उणीज टेम म्हारा एक घणा नैड़ा साधी शर्मा जी आय जावै । मांय नै आर बैठता थका कैवै—
“एकर तो परबारो ही निकळ हो, फेलं सोण्यो मिसतो जावू तो ठीक रैवै, नई जणा ये ओळमो देवता म्हारी बेल को छोड़सो नी ।”

“म्है आज रात रो गाड़ी सू जैपर जा रैयो हूं, कीं मंगावणो हुयै तो बोलो ?”

“हुणै जैपर कांनो किया ?”

“बीस तारीख नै भाणजी रो ब्याव है ।”

“आज तो चवईईज हुई है, इतरा बेगा जार कांई करसो ?”

“म्है कोई भाणजी रै नातें तो जा को रैयो नी ! आ म्हारी सगी भाणजी भी कोनी । जा इण खातर रैयो हूं के इण रो बाप म्हारो लंगोटियो पार है ।”

“लिख्यो है, सागै रैयां बरस बीत ग्या, ई मिस सागै रैवणों भी हो जयासी । ब्याव तो म्हैं, बखत रो बेलीयो निभावतों, भाईयै सू अळगो होंवतो, एकंदम नुंवा तरीकें सू, वैदिक परम्परा सू करवा रैयो हूं । सामलो भी भलो आदमी है, एकंदम नुंवा विचारां रो । दहेज-परपा रो लूठो विरोध करणियो । सोने में गुहायो है । काम-काज की नई है । बस यारो ओळू आय रंभी है ।”

“ओ देखो कांई सांतरो कागद माढ्यो है ?”

मात-भासा में लिखियोहें कागद रै भोती जैड़ा आखरां में नवा विचारां नै बांचेर म्हनै घणो हरख हुवै । उण टेम शर्मा जी रै जे रै मायें बापर्योहें

चैनकै ने लख'र म्हारी उवारें जून बेली मे घणी रुची जागण लागै ।
“मारो भायलो हणै काई करै है ?”

“जैपर मे एक बैक में मनेजर है । मीन रा हजार डोढ़ उठावै है ।”
“काई नांव है ।”

“नांव तो दीपचन्द है पण हूं उणनै यारी रें नातें दीपू कहा कहूं हूं अर
बो भी म्हने मूलचन्द री जाग्यां मूलो कैय'र बतलाया करै है ।”
“मिनख काई है देवता है देवता ! साखां में एक ।”

म्है शर्मा जी नै और खुलण री गरज सू छेड़—“पीसैं आळी मोटी
आसामी है, इण खातर सारीफां रा पुल बांध रैया हो ।”

“श्याम जी ये भी जबर बात बणाई, बेलीपै रो पीसैं सू काई नातो ?
बो तो खैर पीसैं आळो है पण म्हारें अठें तो घर में भुवाजी पढघां करै है ।”

“बो म्हारो भायलो तो खैर हैइज पण उण रो एक बीजो रूप भी है,
जकै रो आज म्हे ही नई; जाणे जका सगळा घणो मान करै है ।”
“ऊमर मे मारो साईनो ही हुवैला ?”

“हां साईनो ही समसो । म्हा सू कोई बरस दोय एक छोटी है । म्हा
दाई उणरें भी दोय छोऱ्यां अर दोय छोरा है ।”

“हाल तो आ पैलड़ी छोरी ही परणीजती हुवैला ?”
म्हारी बात सुण'र शर्मा जी कैई ताळ तो म्हारो मूंडो जोंबता रेंवें फेर

चेरें मार्ये की संजीदगी बपरांवता कैवण लागै—“हां पैलड़ी ही समसो !”
“बपू, इण सू पैला रो टावर हाथ कोनी लाग्यो काई ?”

“भगवान करै इसो टावर कैई रें भी हाथ नी लागै अर जे लागै तो बीपू
जैबी छाती भी देवै । धन है उणरी छातो नै ।”

“कोजी छोरी पानै पढी हुवैला ?”
“छोरी तो घणी फूठरी है । दाग तो छोरी री मां में परगटपो हो पण

दीपू री कंडी सूझ अर माहें बखत रें बेलीपै रें कारण बो चादड़लै रें दाग ग्गू
बण नै रिय ग्यो । छैर, छोठो उण बात नै !”

“इयां नई शर्मा जी, बात सरू कर ही दी है तो हमें पूरी तो पानै
करणीहीज पड़ती ।”
“आ छोरी सुची जकें रो पुरोनांव सुचिता है अर जकें नै दीपू ए०६०

साई मणा-गुणा'र अबै एक डाक्टर लागै परणाय रह्यो है आ है तो म्हा १ बंन
री बेटी पण कैई और सू ।”

“मारो दीपू सब-मैरेज करी हुवैला ?”
“नई जी साई नै घोघें सू परणाय दियो ।”

“ब्याव हुवण रें कोई छव एक मीनां पछै सातवो सागताई आ छोरी

हुयगी !”

“जणा तो षणो रोळो-रप्पो हुयो होसी ?

“रोळ-रप्प में काई कसर रैवती ? दीपू रो बाप तो खबर सुणताई किसनगढ जा पूग्यो ! किसनगढ में ई तो दीपू रो सासरो है। पाछो आवताई कह्यो-पूरी-पाठी छोरो है। सतमांसी री बात बणा रैया है। आपा न इसी छिनाळ राह ने घर मे पाछी को लावणी नी !”

“फेर काई हुयो ?”

“हुयो काई, दीपू रै दूज ब्याव री तयार्यां होवण लागी। मोटी-मोटी आसाम्या चोखो देज-नेज रो सालच देय'र दीपू अर उणरै बाप रो घेराव करण दूबया। दीपू रा भाईत तो तयार हाईज। एक जाग्यां बात भी पदकी होयगी। पण दीपू साव नटग्यो—एक सुगाई होंवता यकां दूजो ब्याव नी कर सकू !”

“पर आळा पर सू नातो नी रैवण रो “अल्टीमैटम” दियो पण दीपू टस सू मस नी हुयो।”

जात बिरादरी आळा आप-आप रो सिट्टो सेकण सारू दीपू सूं भिळता, म्हारी बँन रो चरित्तर लून-मिरच लगा लगा'र बन्वाणता। दीपू काई दिन तो सुणी-अणसुणी करतो रह्यो। एक दिन पंचायती करणिया उणरै अठै जा दूकै। उण रै बाप री भी सै हो।

“दीपू उवां लोगा री ऐड़ी रांत काटी, कै पूछो मत। लोगां रै कानो रा फीड़ा झड़या। सै जणां आप-आपरो सो मूढो लियां दुर-बहीर हुया।”

“इतरो कैय'र शर्मा जी म्हारो मूंहडो जेवण सार्य ! मैं पूछू—दीपू उवाने काई कह्यो ?”

बो पैला तो पूछ्यो—जात री पंचायती लोगां मायें आगळी उठावण सारू ही हुवै है, कै जात री भलाई री भी चेत्तै है।”

आज ई मूंगीवाडें में लोगां रा दिन कटणा मुस्कल हो रैया है। पंचायती ओसर-मीसर, देज-नेज, जीमण-जूठण आळी किणी कुरीत नैं छोड'र अणूतो घरचो कम करा'र लोगा रै भलै री बेती हुवै तो बताओ ?”

समै रै सार्य बँवण री खिमता कई मे जायो हुवै तो बताओ। नई जणा म्हारै निजू मामलें में पंचायती करणे री कई नैं दरकार नई है।”

“जात आळा कुण किमा भळ-माणस है म्हासूं छाना नी है। अंधारै उजाळें में त्रिका भिस्टा पाटता फिरै उवाने आज कोई की कोनो कैय रह्यो। एक सुगाई जात सू भोळ-अण भोळ में कुठोड पग पडग्यो तो सगळा जणा उण मायें आंगळी उठावण लाग गया। बा छोरी म्हारी है, म्हा ब्याव सूं पैला म्हारी सुगाई सूं भिळ्यो हो। बोतो अजै काई कैवो हो ?”

“पारो दीपू बाकई जेवरदार यात कैयी। गाभा में सै नापा है। दीपू

इतरो ऊंडी नी बिचारतो तो पारी बैन रो जिन्दगी खराब कहे जावती ।”

“आ तो दीजती बात ही । दीपू रँ छोट्ठा पछँ उग रो धनी छोरी कोई नी हो । का तो जलम भर रँडापो भुगतती का बैध्या जेहो जीवन बितावती ।”

एकर तो दीपू में भी कमजोरी बापरणी ही । वो म्हने आर काहो—मूळा म्हारो मासरो पारी भुवा रो घर है अर बै लोग आपां रँ रसूक सूं भी वाकफ है । तू उठे एक कागद लिख दे—कँ बै लोग की बात रो सोच नी करे । म्हे खुदो-खुद जा'र म्हारी मुगाई नँ सिआसूं पण उणरी छोरी नँ उवां नँ आपरे कने राख'र पाळणी-पोसणी पड़सी । बांनँ भी तो की दण्ड भुगतणो चाईजै । सगळा सूं बेसी गळती तो पारै भुवाजी अर फूफोजी री है जका आपरी छोरी नँ कंटरोल में नी राख सकयः । टाबर जणनो तो सँज है, दोरो तो पाळनो है ।

“दीपू रो कैवणो बाजब हो । म्हे उणीज दिन पूरी बात नै चोखी सरिया मांड'र लिख देबू ।”

पण ये तो उणीज छोरी रँ ब्याव मे जो जा रँवा हो जकँ नै पारो दीपू अपरँ कने राखण री नां दीवी ही ।

शर्माजी म्हारी बात सूं आपरँ खैर नै एक सांतरी मुळक सूं भरता कँवै—उण छोरी नै काई समझ'र दीपू पाछी आपरँ कने लिआयो ई परसंग में हीज तो दीपू रँ परितर रो सागोपाग ऊजळो पय उषकँ है ।

“अच्छा !”

“हां, जकँ दिन वो आपरी मुगाई नँ से'र पाछो आवै में उणीज दिन सिझ्या पड़ी'सीक उणरँ उठे जा पूगूं । आंगण मे छोरी नँ रमता देख'र म्हने पणो अचूंभो हुबै !”

“बँदक में जा'र बँटपा पछँ में दीपू नै पूछूं—ओ पांचो कयूं घास्मो ? म्हारा फूफो जी तो साव लिहयो हो कँ छोरी नै म्हे राख लेस्मा । जणां दीपू बोलयो—बै तो राखण नँ त्मार हा, म्हारै ही उठे छोहण री को जंघी नी ।”

“पण कयूं ?”

“म्हारै ई कयूं रो जको उधलो म्हने मिल्यो बस उग रँ कारण ही म्हे उग ने देवता जेहो मानूं हूं नई जणा आज बधत री बाथां में अमूमते गानछं कने कठ इतरो टेम है कँ वो आपू-आप सूं बारे निसर नै खुद रँ अर गमाज रँ बाबत कीं बिचार सकें । समै रँ पाबंदा साने पावदा उठा सकें । ठरबीजणो बात बीजी है । समै रँ सारं चालणियो दीपू जेहो बिछो हो हुबै है ।”

“बो कह्यो—पैली बात तो आ हैकँ म्हे ऐसाण कर चुक्यो हो कँ आ छोरी म्हारी है । नीं सांवतो तो सोना री निजरा में गिरतो । अर सोना री

निजरां सूं बेसी म्है म्हारी निजरां में गिर जांवतो ।

“लुगाई लायो तो किण माथे किरियावर कर्यो ! खुद रै सुवारय ताई लायो । लुगाई नै छोड़ देवतो तो आ छोरी मतई छूट जांवती, पण खाली ई छोरी नै छोड़घा तो गुणैगारी नी होवता हुया भी भोत बडो पापी बण जांवतो । पापी मन नै ढोवण जैडी सामरय कठै सूं लांवतो ?”

आ छोरी साव अनाथ हुई जावती । म्हारा सासू सुसरा आपरी जायोदी नै नी सांभ सक्या जणा ई छोरी नै संभालण रो तो सुवाल ही को होनी ।

“मा रै लाड बिना एक ऐडो पिराणी पळतो जको सगळें समाज नै गाळपां ठोकतो । उण रै सखरै अन्तस री दुरासीसां सूं न भालम कितरांजणा होमीजता !”

शर्मा जी रै चुप होवताई में कैवूं—“बाकई शर्माजी, दीपू धारो एकलां रो ही बेली नई है वो तो ऊंडी विचारणियो बखत रो बेली है । एक म्हारो साबू है जको बैम-बैम मे आपरी लुगाई नै घासलेट न्हाखर वाला दी अर उहायदी कै स्टोव सूं बळर मरगी ।

अरे राम-राम ! ई माथे तो हिस्या रो मुकदमो दायर करर करणी रो चोखो मजो चखावणो चाई जै ।”

“चाईजै तो घणोई पण म्हारै सासरै आळा बापडा गरीब आदमी है । मुकदमै बाजी मे की आणी जाणी नई है, पीसै रो खोगाळ करणो है ।”

“आईज बात सांची है ।” इतरो कैवता शर्मा जी उठ जावै । फेरुं कैवै—लो अबै इजाजत हुवै, पांच बजगी है, सात ताई ठेसण नी पूयो तो जाग्या मिलणी मुस्कल हो ज्यासी ।”

वात रै मागै म्हारै हिरदै री पीड कुण जाण सकै ! टावर पारै पढ़या है...
 काई इनां रो घ्यान राखणो नौं चाइजै ? काई मै ओ नौं चावूँ के म्हारा छोरा
 फुठरा-फुठरा गाभा पँर'नै इस्कूल जावै ! पण काई कइं ! म्हारी आ आदत
 कोनी के दूजां मास्टरां री तरिया मै भी छोरां रै घर जाव'नै उणां रै मां-बाप
 सँ मित्तू अर ओ कैयू के—आपरो छोरो ठोट है, सा...अगर ओ कैय भी देखू तो
 ओ हर्गिज नौं कैय सकूँ के—छोरा नै म्हारै कनै भणवा भेजो 'क्यूँ के ओ
 कैवण सँ म्हारै स्वाभिमाण में की फरक पड़ै है। अगर कोई छोरो पिता री
 मरजी सँ म्हारै कनै भणवा जावै परो तो मै उननै भणाय देवूँ...पण छोरा
 रै सारै-सारै फिरणो म्हारै बस रो रोग नी है। पण छोरा इया पड़ण नै कद
 जावै है ! वे तो खासकर'नै उण मास्टर सा'ब रै घर जावै हैं, जिको उणां नै
 इस्कूल माय डरावै-धमकावै अर इम्तहाण माय कम नम्बर देखै...पण अइं
 कामां सँ म्हारो मन पणो दुखी हुवै है।

आज सँ अेक बरस पैला इम्तहाण री टैम मे अेक छोरो म्हारै घर
 पड़ण'नै आयी हो। उण छोरा रै बाप म्हनै कह्यो, "इण साल छोरो निकल
 जावै तो ठीक झेला, सा..."

"पास री गारंटी तो म्हारै कनै कोनी, सा..." मै कह्यो, "पण
 भणावण माय की कसर राखूँ ना नी।"

फेर काई हो ! दूजै दिन बाप बेटी नै भणवा भेजणो ई बन्द कर दियो।

...पण अबै म्हनै वे सब बाता करणी झेला, जिको मै हालताई नी
 करी ही...नीतर जुगाई सँ माया-फोड़ी हुवती ई रैबेला। ठीक है काल सँ मै
 आ कोसित ई कइंला के दूभूशन मिलै ! अर कहाणिया कवितावा बंद...अर
 मै छोट मार्च आराम सँ सोग्यो।

पण आज इस्कूल आयी तो शकियो म्हनै अेक लिफाफो देय' नै गयो।
 लिफाफो खोल'नै कागद बाँच्यो। अेक पत्रिका सारू सम्पादक म्हारै सँ अेक
 कहाणी री मांग करी है। सम्पादक कागद माय लिख्यो के मै आले दरजे रो
 कहाणीकार हूँ...अर मै कहाणी नी भेजूँ तो सम्पादक काई सोचैला ! पण मै
 काई कइं ? अेक भी कहाणी लिख्योही नी है...आफिस माय कुत्ती मार्च बैठो
 बैठो मै सोचूँ हूँ...अेक कहाणी लिखण सारू कम-सूँ-कम दस-पन्दरै दिन लाग ई
 जावै...पण घर बैठ'नै कहाणी लिखण लागूँ तो जुगाई सँ मगमगारी करणी
 पड़ेला...वा दूभूशन सारू म्हारो भेजो खाबैला...पण म्हारी आ आदत मो है
 के मै भी दूजां मास्टरा री तरिया छोरा नै ओ कैवतो फिक्र के पानै पास
 कइंला, भणवा परा आवग्यो, नीतर काले पारी-म्हारी बात...बेड़ी बाता
 म्हारै दिमाग में जावै तो घणी, पण छोरां रै लामा कैवण नी सकूँ। सायत
 म्हारी आठमा रो ओ बसर झेला...अबै आत्मा रै बिताफ मै पग आगे कीकर

घर ! अ बाता म्हाारी सुगाई नै किण तरिया समझावू ! अगर इण बातां रो छीच रांद'नै उण रे आगै परोस देवू तो भी वा ओ हीज कैवैला—कमावण रो नीयत कोनी है...कागदा माय आख्या फोड़णी हुवै तो आधी रात रा भी तयार हो...भला पढ़ा म्हाारै ही'ज पानै ।

कीकर भी हुवै, म्हनै अक कहाणी तो लिख'नै भेजणी व्हेला, क्यू के अक तो कोई कहाणीकार रो कदर कर'नै उण सू रचना मंगारवै अर अक रचनाकार खुद भेजै...दोयाँ माय की फरक पड़ै है !

कहाणी भेजण रो बात तो ठीक है, पण कहाणी लिखू कठै ? घर मांय तो सुगाई नै कहाणी सू चर है । घर म्हाारै हाथ मे कागद देखतां ई वा कहाणी लिखण रो सक ई करैला...अकाअक म्हनै तालाब माय हनुमानजी रे मिन्दर रो ध्यान आयो । उठै बगीचो भी हैं । उठै बैठ'नै कहाणी लिखणी ठीक है । पण सवार रो टैम घर सू बारै जावण सारू की बहाणो तो चाहजै !... ठीक है, सुगाई नै कै देखूला कै अक सेठ रे घर छोरा नै भणावण जावू हूं । वा भीत खुग हुय जावैला...पण महीणो पूरो हुवता ई वा पईसा रे बारा में पूछैला तो...तो कोई ! झट म्हाारै दिमाग मे बात आई कै एरियर बिल आवण आळो है...आ रकम उण नै दे देखूला । आ बात ठीक जधी है ! अर मैं चौपी क्लास रो हाजरी रजिस्टर लियो अर क्लास रो तरफ चालतो रह्यो ।

सांस रा इस्कूल सू मैं घर आयो तो सुगाई नै कह्यो, "सुनी है ?"

"काई ?"

"काल सवार रो टैम अक छोरे नै भणावा जावूला ।"

"भलै जावजो, किता रुपया तै करिया है ?"

"सित्तर रुपया ।" मैं कह्यो, क्यू के एरियर बिल सित्तर,सू कम नी है ।

"यै कहाणी लिखो तो भी थानै इतरा रुपया नी मिलै है अर आंछयां फोड़ो वे अळगी !"

"यू ठीक कैवै है ।" अर पाखती पढ़्या मांचा माय मैं सांबो हुआ अर कहाणी रो प्लॉट बणावण सारू मगज नै झटको देवण लागो ।

तीन जाली खाग्यी

□ ईश्वरसिंह कुलहरि

बी दिन, मैं सुनिया ही उठ्यो। उठकर घराळी नै कहाँ कैं दो रोटी ताबळी भी बगा देई। म्हे पैत्याळी मोटर स्पू ही स्कूल जाऊंगो। घराळी बी दिन न्यू जवादा ही चेळ पर हो। पट्याफट दो रोटी दणा दी। धी सू गोपड रात की बाटपोडी लक्षण की बटणी घाल भी नै भाई। बोली ल्यो जीमो। घड औरत्याऊ ह। म्हे डेड रोटी अर आघो कीतो धई आ की अट बेचो हाथ मे लियो अर ताबळो-ताबळो चान गच्यो।

गेले मे मोटर को चरॉट सुणयो, तो जोर स्पू भागयो। भागतां-भागतां हाकडै भरगयो। जद स्टेंड पर पूच्चो तो पतो लाग्यो कैं वा तो कोई बरात की मोटर ही। खैर। बीस मिनट पाछें म्हारली मोटर भी आग्यी। मोटर मे पग टेकण नै भीज गा कोनी ही। म्हे तो म्हारो चुपचाप ऊपर जाय की छत पर बैठायो। रामगड जाता ही मोटर मे नीचें जगां होग्यी। म्हे भी नीचें आ इले-वर कैं पीछे आळी सीट पर बैठग्यो।

बैठ स्पू म्हारी स्कूल का एक मास्टरजी भी मेरें बराबर आळी सीट पर आकतो बैठया। बैठता ही बोल्या आपणें भी काल की छुट्टी करस्यो के? म्हे बोल्पो बपांकी? मास्टर जी बोल्या म्हे सुणयो है कि कलेक्टर छाटू ब्यामजी कैं मेळ की छुट्टी करदी। मैं बोल्पो सुणन स्पू काम कोनी चालै। बाहर आसी तो आपां भी कर देस्या।

मोटर पैत्या की तर्था फिर खूब भरग्यी। कण्डेटर अर डलेवर चाय पी की आया र् मोटर फिर चाल पडी। मोटर पाच मिनट ताई तो सड़क पर चानी। पाछुअ कच्च रस्ते पडग्यी।

मैं देख'रपो हो कि यो डलेवर बार-बार आपकें सामनें लाग्योडें काच में के देखें है? म्हे भी झुबकी बी काच मे देख्यो। म्हानें एक जवान तो मुगड़ो दीबयो। मेरें डलेवर की बात समझ मे आग्यी।

मैं भी म्हारलै मास्टर जी की नजर बचावकी पीछे आली जनाना सीट कानी देख्यो । म्हनै वो गोरो सों मुखहो आछो ही दीख्यो । फिर एक बार फुर्ती स्यू पीछे देख्यो । अबकें पूरो दीख्यो हो । कुत्त मिलावकी बा भो फूटरी लागीही । एक मनचल्यो छोकरो भी बार-बार बी कानी देखरूयो हो । वो होळ-होळ गुनगुना'रूयो हो "पल्लो लटकें गोरी को पल्लो लटकें जरा सों..."।"

मैं विचारां मे डूब'रूयो हो । शायद डलेवर मेरै स्यूं भी ज्यादा डूबरूयो हो । अंत में दो कोस आलो स्टैंड नेठयो भी आग्यो । अठै स्यूं भी म्हारी स्कूल का एक मास्टर जी बैठ्या ।

मोटर थोड़ी सी दूर ही चाली ही कै एक छोटे सै रेत कै टीवें में फंसगी । पर-पय । डलेवर बोल्यो जाली लगाओ । छत्तासी अर कण्डेक्टर जाली लगावै लाग्या ।

इतन में पैत्याळा मास्टरजी दूसरा मास्टरजी न बोल्या "देखो ? ये बैठता ही कुसून होग्या, मोटर टीवें मे फंसगी ।" दूसरा मास्टरजी हाजिर जवाब हा । बोल्या, "मैं हूं जणां आ निकल तो जास्सी । नई ये अठैई फंस्या पड़्या रहता ।"

मोटर चाल पड़ी । एक आदमी बोल्यो, "देखो ? अतीसी दूर मं ही , तीन जाली खाग्यो । एक छोरो जीन पतो कोनी हो कै जाली के होवै, बोल्यो, "एक जाली कतै की आवै ?" छत्तासी बोल्यो, "तीस रिपियां की । "ई पर वो छोरो बोल्यो, "ई को मतलब आ नब्बै रिपियां की जाली खाग्यी । "ई मात पर मुसाफिर भोत हंस्या अर वो बिचारो शरमायग्यो ।

मैं सोचण लाग्यो कै मोटर फंसगी ही अर जाली लगावकी निकाल पी । फिर चाल लाग्यी । अंयाई आपणै ग्रहस्थ की गाड़ी चालै है । जब ग्रहस्थ की गाड़ी कडे पंन जावै तो हर आदमी जाली लगावण की कोशिश करै । जै कै कनै छोटी-बड़ी सब जाल्या हैं अर जाली लगाणो जाणै हैं बै तो आपकी ग्रहस्थ की गाड़ी आराम स्यूं निकाल लेज्या । कइयां कनै जाली सो हैं पण लगाणो कोनी जाणै । भोतसा कनै न तो जाली हैं अर न बै लगाणो जाणै है । अइयां की ग्रहस्थां की के हाल होतो होगो ? भगवान ही जाणै ।

आ विचारां में मैं डूब'रूयो हो कि पाणचकें ही आवाज आई—उतरो भाई डाठण ।

मैं येनो मेककी नीच उतरग्यो । पास मे ही स्कूल मे आ पूंख्यो । बी टाइम छोरो प्राणना कर की क्लासां में जाइया हा ।

मिनी कहाण्यां

□ डा० उदयवीर शर्मा

पेठ आपरें फळां सून लडालूम होयो छड़घो हो । फळ भी रस भरघा डाळी पर झूमता जीवण रो रस सूटे हा । एक दिन एक फळ आपरो मून तोड़तो बोल्पो, "मन्नं लटकता लटकता बोळा दिन बीतगा । मैं इब डाळी सून अळगो होस्सू । दुनिया मे जीवण रो रस झूटस्सू । तेरो मेरो काई सेण-देण ।" पेठ पडूतर दियो, "जा, मैं तन्नं पुरो रसदार वणा दियो, पका दियो । इब कठेई जा । पण याद राखिए तू मेरें सून अळगो नी हुई मकं । मेरो बीज तेरें में है । इण सून मेरो तो बघेबोई होमी ।" बात पुरी होता होता ई फळ 'टप' दे तळें आपडघो ।

□

भायना री मण्डळी मौर-मपाटे पर निकळयोडी ही । माग्य में भात-भात रा प्रश्न उठे हा, थर मिरें हा । एक रगीली बातावरण होणघो हो । जणा एव जणो बोल्पो, "जिनगानी सघर्ष सून मरळ हूवें ।" दूजो आपरो प्रभाव जमावतो बोल्पो, "जिनगानी दिवळें री ज्यू यळणें सून मफळ हूवें ।" टें बाल पर एक साथी तावणो सो आ'र बोल्पो "परिस्थितिमा री चोट खा रा'र घटावळ री तरिया बाजणें सून जिनगानी उजगार हूवें ।" जितणा साथी जितणा ई तरक सामें आया । जणा एक जणो जोर देंवतो बोल्पो, "ये मैग बाता तो 'भोगिया' री है । जिनगानी नी बीज नी तरिया माटी मे मिन'र वलिदान होवण सून अमर हूवें, त्याग सून जिनगानी नें अमरता मिलें । भोगण नें तो में ई त्जार दे ।" गुणता ई में चुप ।

५० / कोरणी वसम री

गांव में एक नुबँ मन्दिर में मूरती की धरपना होण आळी ही। एक जन्मसो मनरपो हो। भगत आवँ हारँ जावँ हा। भगती रो रमझोळ होरणो हो। घणी फूटरी अर मूँडँ बोलती मूरती मन्दिर में विराजमान होगी ही। वग पट धुल्लण आळा हा। मैं भी बी भीड़ में बैठघो दरसन रँ आणंद रो बेळा नँ घणँ चाव सू उडोकेँ हो। मेरो नाम भी लोग भगतां में लिख राख्यो हो। ई कारण मन्नँ आगती पांत में बैठण रो आमण दियो गयो।

टेम पर पट थुल्या अर जै जै कार रो धुन घर्ष जोर सँ एक साथे होई। बा धुन रुकी कोनी, गूँजती रई। मन मोवणी मूरती रा अग अंग घर्ष चाव मुषड़ता अर निपुणार्ई सँ बण्णा हा। सेरो चित आपो-आप भगती भाव सँ भगवान कानी गिब्यो जारघो हो। सँ भाव सागर में गोता सग्यारघा हा। मूरती रा दरसन करता ही मेरँ मन में भगती भाव रँ मायँ एक भाव और जाग्यो केँ इमी मूठी मूरती नँ बणाणियो कुण हो? बी भगवान सँ बड़ो केँ भगवान बीं सू बड़ो। इतरण में अचाणचक मन्नँ एक दरगाव होयो, "तँ चन्नण होगो, मूरती में सँ भगवान रो साचल रूप परगट हांगो अर बी रूप में रूप मिलाया हाय में ह्योड़ी छीणी अर टांकी लियां एक जणो और दीख्यो" आंख धुली अर मेरो भ्रम मिटगो। मन हळको हळको साथे हो।

□

ता आग्यो, "नदी! तेरे भगती निरमळ जळ में मन्नँ भगवान रा दरसन हावँ। तेरी आतमा तो घणी ऊजळी है।"

नदी पडुत्तर दियो, "आतमा तो तेरी अर मेरो एक ही है। यो तेरे तप रो ही फळ है। तू ठीक पड़घो तप है। जियो आप होवँ वैनँ दूजो भी बिमोई दीखँ।"

□

गैनाथी चालतो-चालतो गैते नँ पूछ बैठघो "अरे गैना! तेरे पँ देयां जठँ ही धूळ ही धूळ पड़ी देया। यो कोई अंग है। तू मदीव बगतो भी रँवँ है है फेर भी धूळ ई पांती आई।"

गैतो बोल्हो "तेरे सरीखा चाल्या तो धूळ ही रँगी। मैं तो सत-पुरसा, बीग अर सात महानमाबा रँ पाण ही जगमगाट करतो रँऊ। मेरो गोमा तो ओं मूँ ही बधँ। अँरा-मँरा तो घणार्ई बगता रँवँ है पण गलपुरसा रँ बणायेडे गैना में ई एमगत रो बरग्या होवँ है।" गैनाथी रँ घणो बिणग्यो लाग्यो पण

नोर काई ? बात साची । भैंसा न देखें तो धूळ उड़री ही ।

□

एक मुँठो, जाण्यो मान्यो अर पीसा आळो मिनख बैस्या रें घरपां गयो । बठें सेण देण मे झगडो होगो । बात आगे बढणी । जणा बो बोल्यो “तू पापण है, कुलटा है, मेरो मूडो देखण रो घरम कोनी ।” इग बात पै बा बोली “मैं तो मेरो पेट री भूख मिटावण ताई यो घघो कसं पण तू तेरी मन री भूख मिटावण ताणी अठें कमू दूबयो । बता पापो तू कै मैं ?” मिनख री मांमली आंख खुलणी अर बो पगां पड़गो ।

□

खेत री भीव पै ऊभो एक कूँचो मस्ती में अहरां तैरपो हो । भीं पै आपोडा छिरणा पून रें झोका मे नाचें हा । छिरंगा री मस्ती में आपरो हरख मिलावती एक चिडी भी पून रें पाण झोटा लेवें ही ।

झूमतो झूमतो कूँचो बोल्यो, “अरें चिड़ी तू मेरें पै बँठ'र मेरें मनरा सै भाव जाणगी । इव तू जा र दूजं कूँचें नै ये बातों मतना बताई । नई तो तू आपसरी मे लडाई करा'र कूँचा रें घर मे लाम लगा दे ली ।”

चिडी झट दे पडूतर दियो “ये काम तो मिनखां जूण रा है । मैं तो ‘पांख पलेरुवा’ री जूण मे हूँ । मैं तो आजादी सूं विचरूं, मस्ती सूं रोही मे रमू । मल्लै इण दंद फँदा सूं काई सरोकार । तू निरमै झूम ।” या मुण र कूँचो घणो राजी होयो अर बी रें मूँहें सूं निकळी “तू घणी भोळी अर सूधी है ।”

□

एक दिन मैं मळ मळ म्हायो घोयो, तेल फुलेल लगायो, सोवणा सरप रुपड़ा घारपा, घणो सज संवर'र एक बुकाव साघण ताणी ह्यार हो'र मुखडो देखण दरपण ठायो । दरपण मे मुखडो जोबतां ही दरपण में सूं आबाज सी निकळ'र मेरे काना मे पडी “अरे तू नित हमेशा मुखडो ही मुखडो जोबतो रेंवें कदै तो तेरो मनडो भी देख लिपा कर । जीसू मन रो मैल-माख दिख ज्यारै ।”

□

मिन्तरा री मंडळी जूडी, विचारां री गोळ धामू, बातों रा कसेवा

उड़ण लाग्या । भांत भांत रा विचार आवै अर जावै । एक जणो प्रश्न करधो,
 “कोयल लोणां सूं दूर बागा मे रमै, सोवणी लागै । कागलो घर घर झाकतो
 फिरै पण छारो लागै । कोयल री ‘कूहू कूहू’ मीठी लागै अर कागल री
 ‘कांव कांव’ छारी लागै । ई रो कौई कारण ?”

दूजो मिनतर लगतो ई बोल पढ़धो “जे कोयल रै जगत री हवा लाग
 ज्या, तो बा छारी बोलण लागज्या । ई में पखेरूवां रो काई दोस ?” सै
 गम्भीर हुग्या ।

बूजी

□ बूजलाल स्वामी

बूजी सारं गाँव में, ई नाँव सू ही जाणी पिछाणी जावै । मोटघार चुगाई, टावर अर बूझा सगळा बीनै ई नाँव सू ही बतलावै । बूजी लांगी नै कदेई बजार में चीज-बस्त लेवती, कदेई तलाव सू पाणी ल्यावती, कदेई आटो पीसा'र ल्यावती सगळां री निजरा में आवती रैवती । चासती-घाजती सगळां सू राम-राम करती, चावै जाण-पिछाण हो या न हो । कठई मेळ मुळाकात हुंतो बठे पड़ी आछ पड़ी बैठ'र घर बीती, पर बीती भी कर लेंती ।

बूजी बरस सत्तर नई ही । पण कड़क ओजू सांगोपांग ही । ई ऊमर में भी डोकरी न कुड़ी अर न हाथ में कोई लाठी राखती । हमेस धामरो ओढ़णो अर झीणी सी नाचळी पहर्योड़ी राखती । हाथां में काळी-काळी सी एक-एक दो-दो चूड़ी, जिण में सोनें री तांतं ही । कानां में सोनें रा मुरसिया राखती । पणा में टापर री चंपल, जकी बारह भास रैवती । ई रहन-सहन में ही बा हरदम रैवती । मिमाळे में पाळे रै जावती बास्तें एक बोदो सो धूसलियो तपट्योड़ी राखती ।

बूजी बास में सगळां सू पैंती उठती । उठती पाण जोर-जोर ६ राम-राम, राम-राम करती, जको आस-वास ताणी सुणीजतो । हाथ मूंडो धो दाणा पीमती । बूजी कदेई कळवाकी री पीस्योड़ी नो धायो । आटो पीसां पछे सामटेन रै च्यानर्ण घर रै मांय अर बा'रें कुहारो कावती, पण मूंडे सू राम-राम री रट सगायां राखती । हाथ अर जीभ दोनू साथे धावता, जाणें दोनू होट कर राधी है । बास री मुगायां बास्तें बूजी अत्तारम घडी ही । बूजी री पट्टी अर राम-राम री अवाज सुण, मुगायां उठती अर धन्ये सागती । मुगायां

कैंवती—उठो ए डाबड़्यों, बूजी जागगी । बूजी राम-राम के करती वास आळां वास्तं कूकड़ो ही बोल ज्यातो ।

बुहारी साड़ी कर, डोकरी दिसा जावती अर पाछी आ, तळाव सू पाणी त्यांवती । गौव में बाटर सप्लाई री टंकी ही । गळी-गळी में टूट्पां भी लाप्योटी ही । बूजी रें सांमलें घर मे ही टूटी ही । टूटी रो पाणी पीवण मे घणोई आछो हो, नीरोग हो । पण बूजी नें तो पीवण वास्तं तळाव रो पाणी रुच्योटी हो । ई वास्तं एक टोकणी तो रोज मूंडे अंधारें ही तलाव सूं भर त्यांवती । तलाव भी साव नेंडो कोनी हो । किंतो आंतरें ही हो । तळाव सू पाछी आवती जद ताणी की'की' ज्यानणो होवण लाग ज्यांवतो । बूजी नें मेसं मे लुगायां मिलती जकी बूजी नें टोकणी भर ले ज्यावती देखती जप्पा घणो अधमो करती । केई लुगायां टोकती बकी बोलती—बूजी, ई ऊमर मे इती बडी टोकणी, इती दूर सूं कियां से जावो हो ? टोकणी रें ऊपर एक गूणियो ग्यारो मे'ल राख्यो है । कमाल ही करो हो बूजी । पण बूजी कदेई पाछो ऊपळो नी देवती । बोली-बाली सुणती रेंवती । घरां आय के जरूर अग्यरी मन री बात बँवती कें लुगायां मन क्यूं टोकें है । लुगायां रो में काई लेंकें हैं ।

तळाव सूं पानी ला, डोकरी दो-तीन मटक्यां अर घड़ा टूटी रें पाणी सू भरती । पाणी रो आपतो पूरो राखती । कदेई-कदेई टूटी उत्तर दे देवती पण बूजी रा पड़ा उत्तर नों देवता । तलाव रें पाणी री माटकी एक तिपाई पर ग्यारी राखती । ज्याहें मेर कपडो लपट्मोडो जकें नें गधियां मे सारो दिन तर राखती । ई कारण माटकी रो पाणी घणोई ठंडो रेंवतो । दिन मे कई मोड्-मार अर लुगायां बूजी बनें आवता, बा नै भर-भर पिलासा पाणी पयवती । बूजी पाणी री ई माटकी रें की नै ई हाथ नीं लपावण देवती । खुद-ही बूजी लोटे या गिलास मे घाल'र देवती । कोई गिलास नीं लागण री बात कैंवतो तो बीं नै भी घिगाणें ही एक गिलास तो पिलास ही देती । जको एक गिलास भले पीयतो बीं नै बूजी गिलास घिगाणें पावती । कोई पाणी नी पीयतो तो बूजी रो आतमा दुःख पावती । ओ ठंडो पाणी बहें आपतें सूं राखती । ई वास्तं वा सगळां नें बडे चा'व सूं ओ पाणी पावती, मन में भोव राबी होवती । डोकरी पाणी री चढ़ाई करती बोलती, —“पाणी क्यूं नीं पीयो । दरयो पाणी पानें परां नी मिलें । ई में तो कैंवटो घाल्योडो है, कैंवटो । एक गिलास पी के तो देखो, किस्मोक काळबो ठंडो होबे है,” अर आगसैं पिनघ री हां ला ला सूं पंखी ही मुठ्ठाती-मुठ्ठाती दट पाणी रो गिलास पावण वास्तं त्थार कर गेवाही दिस नीं होवती तो भी पाणी तो पीवणो ही पयतो ।

पाणी रो पूरो आपतो कर, सिनान करती । सिनान कर मिथर जावती । मिदर मे पनी देर ताणी भवन-भाव कर भगवान मे रिशाकनी । मिथर पृ ५५०

सारी तुलसी अर चिरणामृत लावती जको गेलमें बाँटती चालती। मिदर सँ आय के गोबर पोछो चुग कर लावती, बेपड़ी पापती। घर में बेपड़ी रा डिगला कर राख्य हा। पछे रोटी पाणी में लागती।

डोकरी कदेई चाय कोनी पीवती। लोग-मुगाई बी' न चाय रा न्योरा पणार्ई काढता पण नूजी तो सोन रो टको दिया ही चाय नी पीवती। रोटी-बाटी घाय डोकरी थोड़ी घणी देर भी आराम नी करती। कदेई सूई-भूणियों से, टाको-टेमो देवती, कदेई टूटी-फूटी भीत ठीक करती, कदेई मांचे या मांचली रो दावण छीचती। भयंकर गरमी में भी डोकरी एक घड़ी चैन नी लेवती। गरमी में जद सगळा न नीद रा झोटा आवण लागै। सगळा जठे माचो सकावै अर की रो भी काम करण रो मन नी होवै, बी' टेम भी डोकरी रो मन काम करण में रै' वं। कदेई-कदेई तो काळ-ज्याळ भी घोलें दोपारे दाळ या दळियो दळन बैठ ज्यावती। एक हाय में पंखी अर दूजें हाय मे घट्टी रो हायो। पून छावती अर घट्टी चलावती रहती। जीम सँ राम-राम करती रैवती। तीन-तीन काम सागै करती। राम-राम करणो तो सारें दिन मे भूलती ही कोनी। सोवता, उठता, बैठता, फिरता अर धन्धो करता राम-राम तो करती ही। भगवान कृष्ण गीता मे जको उपदेश अर्जुन न दियो है कँ तू कर्म भी कर अर मने भी हरदम मुगिर। जाणै आ डोकरी ई उपदेश से आखर-आखर पालन करै।

नूजी आपरें घर में एकली ही रैवती। घर आळो कोई भी सागै कोनी हो। अणजाण तो आ जाणतो कँ डोकरी रै आगै-तारें कोई कोनी। पण डोकरी रै बेटा-बेटी, पोती-पोती, दोहिता-दोहिती सगळा हा। डोकरी रै दो बेटा हा जका जोधपुर ही रैवता। जोधपुर में ही आपरो काम-धन्धो करता। सारो परवार कनै राखता। डोकरी नै दोन्यूं बेटा कहूयो, "मा, तू भी जोधपुर चाल। शांति सँ रोटी खा अर भजन भाव कर। एकली पढी कुछ पावै, फोड़ा भुगतै। पण डोकरी नै तो ई घर अर गाँव सँ अणूतो लगाव हो। ई गाँव बिना डोकरी नै कठई आवडतो कोनी। डोकरी साल मे एकाध बार बेटा-पोता तू मिलण वास्तें जोधपुर चली ज्यावती अर दस-भाच दिन रह आव ज्यातो।

डोकरी पैली मास्टरा नै आपरें घर मे भाडेंती राखती। कदेई एक-एक अर कदेई तीन-तीन, ग्यार-ग्यार। सगळा न रोटी बणा देवती। सगळा वास्तें बापदी पाणी भी भरती अर सेवा चाकरी पूरी करती। पण बदले में मास्टर रोटी बणाई रा भी पूरा पीसा नी देवता। कइ मास्टर तो पीसा घाय घाय रै चल्या गया। कोई जोर तो चालतो कोनी। इसी सेवा भाबी मुगाई रो पीसो छावता भी लोग नी हिचकै।

मैं भी मास्टर बणके पहली पोत ई गाँव में लाग्यो। मैं गयो बी' टेम डोकरी एकली ही रैवती। मास्टर पीसा घाय-घाय'र घोघो देय-देय'र जावा

रहता, जकें सूं डोकरी रो मन छाटो पड़्यो। की' नै ही राखण रो जीव नीं कर्यो। संजोग सूं म्हारें रिश्तेदारां रें मारपत मन बी' डोकरी रें घर में ठोढ़ मिलगी। डोकरी बोलणें में घणी ही आछी। दो च्यार दिनां मे ही मन बी' रें संभाव रो पतो लाग्यो अर बा' भी म्हारो चाल चलन जाणगी। मैं भी म्हारो डोकरी रें सार्ग ही बेगो उठतो। न्हा, घो, पूजा पाठ करतो, गीता रामायण बांचतो अर पछे लिछण पढ़ण नै बैठ ज्यावतो। एकलो तो हो हो। एकलें मिनख रें रोटी पोवणी सगळां सूं मोटी आप्त होवें। पण अठे आ' आप्त टळगी। डोकरी न्याइ-न्याई रोटी वणार खिसाय देवती बदलें में बापड़ी दस रिपीड़ा ही लेवती। डोकरी री तो मनस्या रिपीड़ा लेवण री नी ही, पण कि मजदूरी रें कारण से लेवती।

दस रिपियां रें बदलें तीस रिपियां रो काम करती। बरतण भांडो मांजणी पाणी ल्यावणो, झाड़ू काढ़णो, सिपाळें में पाणी न्यायो कर न्हावण घर में राखणो बगैरा सारा काम बूजी ही करती। मन तो बैठे सूं बेसी राखती। मा सूं घणो प्रेम राखती। खुद कि चीज वणावती या बा' रें सूं ल्यावती तो मन दियो बिना नी खावती। बा भी म्हारें विचार सूं राजी होगी। बास में मेरी बड़ाई करती-फिरती, कें मिनख कोनी देवता ही म्हारें घर मे आयो है मन रामजी कह'र बतलावती। कदेई नांव सेयके नां बतलायो। बिना जी-भारो दियो कदेई नी बोली। म्हारें सूं पैसी जिस्ता भी मास्टर रैवता सगळा दारू खोरिया नसा करणिया हा, पण म्हारें मे ई तरकी री की लत कोनी ही, ई वास्तें डोकरी म्हारें पर घणी राजी ही।

मन डोकरी कनै घरा जीस्यो ही आराम मिल्यो। म्हारी मगळी चीज-बस्त डोकरी ही ल्यावती। डोकरी ही घान-भात ल्यावती, साफ करती अर कलचाकी सूं पिसा'र ल्यावती। ई सूं बेसी और के आराम हुंतो। मैं घरा कदेई-कदेई ठंडी रोटी ग्यावतो। पण डोकरी मन कदेई ठंडी रोटी नी खुवाई। सिस्पा कदेई इस्कूल मे मोड़ो हो ज्यावतो तो डोकरी बूल्हे रें सारें रोटी री हधाळी करती बैठी मिलती। मन घर में बड़ता ही ओळमो मो देती, बोलती—राम जी, मोड़ो घणो कर दियो नां। रोटी ठंडी हुगी हुवली। ठंडी रोटी खुवाद कोनी लागें। ल्यो बेगा सा जीमो। म्हारें हां या ना रो ऊपळो दियो पैली ही रोटी पाळी मे परोस देवती। मन पूरा गाभा भी नी उतारण देवती। बेगो सो पाळी कनै आ'र बैठणो पड़तो। डोकरी एक-आधो रोटी रोज बेसी धुपाय देवती। घाप्पां पछे आघी रोटी और पालो में पाल'र कंबतो—रामजी, रोटी तो मोड़ो ही छाई है। इसी रोटी मूं काई होवें है। पाछी मूख लाग ज्यावनी। घान तो पूरो छाओ रामजी। मेरे कनै कि जबाब नी मिलतो। बोनो-बानो रोटी घाय सेवतो।

बूजी जद रोटी बणावती होवती बी टेम मेरें कर्न या डोकरी कने कोई भी आवतो बी नै थोड़ी घणी रोटी खुवायां बिना नी जावन देवती । डोकरी रें घर रें आगे बैठघो कुतियो भी डोकरी रें घर रो सदस्य हो । रोटी पोवती जद पैली पोत कुतिये वास्तु रोटी बणावती । रोटी बणाय, टावर नै जिया हेनो मारें ज्युं हो कुतिये नै हेतो मारती—छोरा, आध रे रोटी बणगी । ग्याई-ग्याई छाय ले । कुतियो भी बूजी रो हेनो सागोपाग समझतो । हेनै रें सागें ही आय जयावतो । घर री पेड्या पर रोटी छा, पाछो भाज जयावतो । डोकरी टावर नै ज्यु साह करे या बढमासी कइया सिडकें उण भांत ही कुतिये नै कदेई साह करती अर कदेई सिडकती भी । कुतियो भी जानें बूजी री सगळी बाता समझें है । बो' भी कदेई पूछ हलावतो, कदेई होळें-होळें धूं-धूं री आवाज करतो अर कदेई डोकरी रें पगा पधतो । डोकरी भी बी सागें ई तरीकें सुं बोल अतळावण करती रेंवती ।

कुतिये पछें एक गाय री बारी ही । बी नै भी ग्याई-ग्याई रोटी खुवाय'र आवती । पछें म्हारें जित्यां रो नम्बर हो । छेकड़ आप जीमण नै बैठती । डोकरी री खुराक भली बगी ही । भूख भी सागोपाग लागती । बी, दूध अर दही रो गार कोनी हो, पण छाछ जरूर मांगर त्यावती । फेर भी ऊमर शाक हाड ठीक ही चालें हा । ई ऊमर मे भी किण रें भी शाक नी ही, उन्टी बूसरो री सेवा और करती ।

डोकरी सगळें गांव में लोकप्रिय ही । ग्याय-सा'वें, एई-मेई डोकरी नै सगळा बुनावता । डोकरी भी वटें भाव सुं जाती । राजी मन सू काम करावती । मीठो घान खायर आवगी बी रो हक देपर आवती ।

भ्याव साका ही नी दुछण पाछण अर ताव-बुझार मे भी डोकरी आडी आयती । पतौ सामना पाण डोकरी झट पूग जयावती । आप सुं होवनो बिसरो मा'रो पगावती ।

याग आळा लो डोकरी नै घर रो सदस्य ही मानता । डोकरी नै आघी घडी मिठावर बात नी करता सो बा री रोटी री पधती । डोकरी भी हस्त-मुळवती बैठ जयावती । दो ध्यार आछी-मंदी करके फेर आपरें घर्घ पर ताण जयावती ।

रात मे डोकरी कठेई नी जावें । दिन छिये ही मांचो नैटो ले लेनै अर नीद नी भावें जिडी देर पकी-पछी राम-राम करे । मिमाळें मे डोकरी मावें पर नी सोवें । एक दिन डोकरी आपरी बतीतो मूडें मू काडर मिराणें राखी । रोज ही सोवती टेम मिराणें राखें । दिनुंमे पाछी चढाव सेवें ; दिन मे एक मिट भी नी बार्डें । बनीसी भी इमी सागें जानें माचला दात है । बी दिन जद डोकरी दात मिरावे राख्ना सो दिनुंमे री डोकरी नै दात साध्या कोनी । मै भी डोकरी

नै दांत बूँदण में सा'रो लगायो । डोकरी घणी देर फिरोळा लिया । साळ रो घूमो-घचूमो सम्हान लियो पण लाध्या कोनी । सेवट बूँदता-बूँदता ऊँदरै रै बिल रै ऊपर पड्या नाध्या । बिल छोटे हो, ई वास्तं दात माय गया कोनी, नीं तो डोकरी रै भारी आपत आय ज्वावती । मैं डोकरी नै कह्यो—बूजी, दात कोई डबड़ी में घालर राख दिया करो । ऊँदरो अर कुनो जात कुजात होवै है । खावै नीं तो बूँदाय जरूर देवै । डोकरी बोली—राखणा हो पडती नीं तो हांटी हेठ हो ज्याऊँ । नामहँ खाघो ऊँदरो किया सेग्यो । गंडक नारेळ रो के करै । आज ताणी तो कदेई छाँटयो ही कोनी । मैं तो हमेस सिराण ही राखू । मैं बोलयो—बूजी, नानी रांड एकर ही होवै । डोकरी कि कांभी बोली । पछै रोजी नै सोवती टेम एक डबड़ी में दांत घान'र राखती । ऊँदरै वाली बात डोकरी कदेई नीं भूली ।

ई तारीकें सूं बूजी आपरी जिंदगी रा दिन मोछा करै ही । बा कर्मवीर मिनघ री साक्षात भूति ही । कर्म में ही पूरो भरोसो राखती । ई कर्म रै पाण ही डोकरी इती उमर में भी मुख-चैन री बत्ती बजावती । भगवान करै ई डोकरी नै माघो नीं झालणो पड़ै अर घासतो-फिरतो नै ही रामजी बुलाम सेवै तो बापड़ी री कामा सुंघर ज्यावै । मैं डोकरी कनै बा'रा महीना रै यो । पूरा बा'रा महीना बाद म्हारी बदली म्हारै याव रै सा'रै होयगी । डोकरी जद म्हारी बदली री बात सुणी तो घणी ही बेराजी अर दुखी हुई । मूढो उतार निमो । मन भी घणोई दुख आयो । डोकरी जकी म्हारी सेवा चाकरी करी ई रो बढळो मैं पाँव दल दे'र नीं चुकाय सकयो । ई डोकरी री सेवा मन जितगी भर याद रहसी अर ई डोकरी नै मैं जीस्युं जठै ताणी नीं भूल सकूं ।

इस्कूस सूं बिदाई आळ दिन मैं इस्कूस सूं सीघो ही वग-स्टैंड गयो हो । पण डोकरी भी बस स्टैंड आयगी ही । आँखियां में आंसू भरेबा, बोली नीं नीसरी । मेरी भी आँखियां में आंसू पड़ण लाग्या । बोल नीं सकयो । मैं जेब सूं दो रिपिमा रो नोट काढ़'र झतायो । पण डोकरी हाथ जोड लिया । रिपिया नीं लिया । थोड़ी देर में मोटर आयगी । मैं डोकरी रै पणो रै हाथ तमा'र घालण लाग्यो, डोकरी गळ-गळा कंठा सूं बोली—रामजी, ये तो थारै टोबरो कनै जावो हो । भगवान यानै मीरोगा राधै । मोह लगाय, म्हाने दुखी करके जावो हो ।

मैं पाछो की उपळो नीं देय सकयो । गीती आँट्या सूं एकर डोकरी कानी देव्यो अर मोटर में आय'र बँठग्यो ।

आज भी मेरो आँखियां आन बूजी री स्टैंड आळी मूरत ज्युं री ज्युं है । ई सूरत नै मैं मुलाय नीं सकूं ।

ठाकुर सा'ब

□ भीखालाल व्यास

ठंलण रं प्लेटफारम मायं पडियोड़ी चौबी बेंच, जिकौ के उण मोटोड़े नीबड़
रं नीचं पड़ी है, उण मायं म्हें उणां नं रोजीना सिझ्या रा बेंठघा देखूं। घोळी-
फट्ट मूछां, माया मायं छोटा-छोटा घोळा बाळ, खबर मायं अंगौछी, घोर्ता अर
बायां हाळी बनियान। बं रोजीना ठंडा पोर रा अठं आय जावें अर जठाताई
अंधारो नी ब्हे, अठं बेंठा रेंबे। अंधारो ब्हे जरें अठा सुं बहीर ब्हे जावें। मै
जदै सुं अठं आयो हूं, उणानं अठं नित बेंठा देखूं। म्हें सिझ्या रो खेलण नंजाबूं
जरें ई उणां नं उठें बेंठा देखूं अर पाछो बळूं जरें ई। म्हें पैली तौ उणानं नम-
सकार कर'र बहीर ब्हे जाती, पण एक'र कठें थम्प्यो।
'आओ, बेंठो !' ननोसिक उणा रो बोन मुण'र म्हें छाली जगै मायं
बेंठग्यो।

'खेल आया।' पाछो हल्कीसिक मूछां रो कंपन।
'हाँ सा।' अर उण पछें पणी देर ताई रो चुप्पी। बी म्हारो उणां मुं

पिछाण रो पैली मोनो।

उणां पछें तो म्हें उणानं मिळती इज देवतो। पण हानताई उणा सुं
म्हारी कदैई पणी बात नी ब्ही।

उण दिन म्हें निरात मे हौ, कयूं के हवा तेज चालण सुं उण दिन बाँती-
बाँस रो खेल दिह्यो कोनी। म्हें उणां घनं आय'र बेंठग्यो।

'आप ठाकुर सा'ब रोजीना ई अठं आय'र अकेला इज बेंठा रेवो।'
म्हें ब्रूम्यो।

उणां नं साराई मिनज ठाकुर सा'ब इज कंवे, हालांकि उणां रो नाम
मोवनसिंह बर्वाण है।

“हाँ सिध्या री टैम बारें निकल जावूँ। कठ फिरण नै जावौं, सी अठे आय'र बैठ जावूँ। अंधारो न्हे जितरें अठे इज बैठ ठंडो हवा खावां।’ उणां र मुडा मांय एक ई दांत नी हो जिण सू पोपळा मूडा सू न्हे बोसता जरें होठ थोड़ा मुड़ जावता।

—ठाकुर सा'ब, आप नो मणा बरसां ताई नौकरी करी। म्हे बात नै आग बधावूँ।

—हा, म्हे सन् १९०६ मांय नौकर व्हियो हो। सिरफ सोळा बरस री ही जरें। उणनचाळीस बरसां ताई म्हे मास्टर रियो। जिणरा बाप नै पढायी, उण रा बेटे अर पोता नै ई पढ़ाया। अर न्हे पोपळा मूडा सू हेंसन लाग्या।

उणां री हुंसी माय म्हे ई साथ दियी। बोल्थी—धूँ इज है सा, चाळीस बरसां माय तीन पीढ़ियां तो न्हे इज जावें।

—हां, जरें इज तो केवू। चालीस बरसा पैसी रें टैम अर आज र टम मांय घणी फरक पडग्यो। काई बी टैम हो। हमे तो न्हे इन्दरलोक री बाता बणगी। उण टैमरा मास्टर री उणी कदर हो। छोरां नै ठोकता तो हाड-हाड बोस जावता पण मजाल है के छोरें रें मुडा सू ‘धूँ’ ई निकल जाय, के उणरौ बाप सामी आंख करने ई देख लें। आज तो नी न्हे छोरा रह्या है, अर नी न्हे मास्टर।

—हां सा, हमे तो छोरां रें हाथ ई नी देय मका। म्हे हुंकारो भर्यो।

—उण टैम ती केवता हा के—छड़ी बाजें छम-छम र बिदिया आवें छम-छम। पण एक बात है, उण टैम री पढियोड़ी छोरी घणी हुंसियार न्हे-तो। हमें छोरों रें मार नो पड़े है तो छोरा ई किमाकसु धरें है, जिको, दिखें इज है। आजकन री गिहा ताई उणां रें बेरा माये मुस्ती फिरग्यो।

—और काई, पण मू है ठाकुर सा'ब, छोरों रें हमें ती, हाथ लगावां तो ई छोरों हेठो पड़े। म्हे मुलबयी।

—आ बात आप सचो कैवो, हमें डालडा घायोड़ा छोरा अर मास्टर। हिम्मत ई कोनी। काई न्ही जयान्ती ही...रिपिया रा मण गळें मिळता। म्हे पैसी बार नौकर व्हियो जरें आठ रिपिया तणखा मिळती, पण आठ ई मू-कळा न्हेता। उण टैम तेरें रिपिये मो'र मिळती अर देसी धी...पांच आने पक्को सैर, पैताळीस पइसा भर री। कैवता-कैवता ठाकुरसा'ब बिपारों मांय धोमग्या।

—हां सा, न्हे तो सस्तीवाडें रा दिन हा। हमें तो पढ़न सुणन नै मिळें।

—न्हे न्हे दिन म्हारी आंख्यां सू देख्या है। छोरों रें धरे पठावण जावतो जरें बिदांमां री सीरो अर दूध नास्तें मांय मिळतो। पण एक बात है मास्टर सा'ब, उण टैम जितरौ सस्तीवाडो हो, मिनघ उतरौ ई भलो हो अर आज जितरौ मै'मीवाडो है, मिनघ उतरौ ई पक्को बणग्यो है।

—हा सा, हम तो चारुमें'र सुन्ना-सफ, जग्या है। कुछ भांग पढी है।

—जो आ इज बात है, जर इज तो म्हेँ चाळीस बरसा ताई छोरों न पढाय न भी मिनय न नी ओलख सकियो।

म्हने लग्यायो, ठाकुर सा'ब की गभीर बात कंवणी चाबै है। उणा रें चंगा मायें हमे रें जमाना री हासता जानी सँ'री रोप दिथै। म्हेँ उणा रें कयण न नी गमज गवयो ही सा। सँ'ली ब्हेँ ल्यु उणा कानी देखण लाग्यो।

म्हारे मन री बात स्यात् ब्हेँ ममअग्या हा। ब्हेँ स्यात आज आप रें मनरी बात 'मोन'र कंवणी ई जावता हा।

—म्हारे जयानी री टेंम खुब आराम मूं ग्रावण-बीवण मांय त्रिपीड़ी है। जितरी स्या'यो उण म् सवायो पारय कियो। म्हने म्हारा छोरा री पूरी प्रेम मिलियो। आज जो म्हारा पढायोडा छोरा घणी ऊँची जगो मायें है। म्हेँ उणा नें उपदेस देवतो अब आज म्हनेँ मायें म्हारी त्रिपीड़ी उपदेस अकारय की गियो नी। ब्हेँ म्हनेँ मिळ, म्हाग म् आभीरवाद सेव, घणी-घणी ऊँची जगो उणा नें गहनकार बगोडा देखू तो म्हारी जीन रात्री ब्हेँ, पण पाछो फिर'र देखू तो यू मार्गें जाणें म्हेँ जो उपदेस देय रह्यो ह, जो उपदेस दिया हे, जो सीधामण दीनी हे, बा गफा लूठी हे। नेवता-केवता ब्हेँ सांमी देखण लाग्या।

सिम्या होम री ही। सूरज भगवान आपूणी दिय मांय आराम करण जावता हा। जागे मांय ललाई कंय री ही।

—क्यू मा ऐंटी काई बात है ! म्हेँ उणा री ध्यांत भय कियो।

स्यात् आज ब्हेँ आपरें हियें री मगळी बात म्हनेँ केवणी जावता हा। बोल्या —म्हारे टाबर नी ब्हियो। बय घणी-मुगाई दोय जीव हा। मुगाई रें केवण म्हेँ म्हारे भाई रें छोरें नें गंजळि जियो। छोरो इनरुम टेंस बिभाग माय बाबू है। म्हारे खनता पइसा, बीमा रा पइसा अर पेसन री एकम मिळी जितरें तो बी मीठो-मीठो बोनतो, कदे-कदे उपरी मुगाई म्हारे छनेँ रैवती, पण जई उणानेँ बिमजग ब्हेँग्यो के म्हारे छनेँ फूटी-नोटी ई कोनी, उणें म्हनेँ टरराय दियो। हमे बी तो म्हारे कनेँ कंद कंद-कंदे आवें पण उण री मुगाई तो कंद ई को आवनी। दण मारता दिनां माय इसो त्रिछो पइसा आ तो म्हेँ कंद ई सोची ई कोनी ही। जद इज तो केबू के जिणां नें मिनय बणावता उमर निराम दी, पण जद घर रानी देखू तो यू मार्गें के म्हेँ म्हारे जीवण मांय की सकलता को पारि नी। नफा पिजून इज मिनय पणी गवायो। उणा रें आंठयां री कोरां मोप नैना-नैना दोय मोती बमबसा, उणां ए छीरेंतक पोछ दिया पण अयातो म्हेँ जावण म्हेँ तो उणां री हाथ इज आंय तक आवतो-जावतो

देख सक्यो।

—आ तो इण जमाना मांय सगळी ठीङ् दिखै। मिनखा पइसा सू मोह राखै। म्है बोख्यो।

—आज इण उमर माय जद म्हनै आराम चाहिजे, म्है तीन-चार टावरा नै पढावूँ, उण सूं मिलै जिण सूं म्है दोन्यू जीव पेट नै भाड़ी देवां। सरकार म्हनै मांन दिव्यो, राष्ट्रीय इनाम दिव्यो, म्हारी जगै-जगै सनमान ब्हियो, म्हारै सनमान मांय जुळून निकळया, म्हारी अभिनन्दन ब्हियो, पण आज के दिन जद म्है घर मांय बैठे इण टावरा माथे माथापच्ची करू, करे इयो लागे, जाणे ए सारा ई मनमान, मांन, अभिनन्दन अर पुरमकार सारा गी आभरी जगै, आभरी ठीङ्, एक इज है, वो हं पइयो—पइयो। माया—माया—भारा तीग नाम—कूसी, परसो, गरमराम। इण घुटण री भिन्दगणो सूं ऊबेर म्है अठे अंकात मांय आवेर बैठू।

अठे बैठेरा सूं म्हनै सानि भिळै, अंकात माय मोवण गी मौकी मिलै अर म्हनै उण दिनां री याद आवै जद ग्हागी जगै-जगै मनमान ब्हेली। इण आवती-जावती गाडियां मांय कई मिनघ मिलै म्हनै गामकार तरै, म्है उणा रा हालचाल बूझू। कोई कंवें आपरी दिवा सूं स्लेक्टर हूं कोई कंवें नै सोल-दार हूं, कोई कंवें डामदार हूं, म्हारी जीव घणी राखी ब्हे। म्है उणा नै 'बेता' केयर बुझावू। म्हनै लागे इतरा मारा म्हारै टावर हं, म्हारा घर-हाळा है, म्है अंकुगो नी हूं, म्हारी पिरवार घणी नांदी-नोरी है, अर मन माय इण उमर नै काटण री हुंत ब्हे।

म्है उणा रै बेरा फांती इगान भू देखण लाग्यो। म्हनै उण बेरा माथे महानता रा दरमण चिह्ना—ओ घे री, ओ माथी घंठी आइमी कितरी बड़ी बात सोच रह्यो है, कितरा ऊंचा बिचार है इण रा, बिसालता री मूरत, परतभ 'यसुधर्व-कुटुम्बकम्' री उपदेश देतो कोई महान रिस्ति।

अंधारी यधग्यो हो। ठाकुर सा'ब अर म्है दोन्यू ई उठेर बहीर ब्हिया।

म्है रोजीना उणा नै उण बैच माथे बैठा देखूं, पण नममकार करेर बहीर म्है जावू। गानू, काई ठा ठाकुर सा'ब गी आइया आगे इण टेम रिण बगल रा बिनराम आयोडा बहैना।

म्हारो भोळो भाळो गोपाल

□ भोमवत्त जोशो

बेणीगोपाल दीखण मे फूठरो रूपालो हे। पण भगवान उणां रा जीमणां पग मे खोट वाङ् दी। इण में भगवान नै दोस देओ अर चावो उणा री पूरबला जन-मरी करणी मान ल्यो। अणूतो गोरो मिचाक तो नी है, पण हां उणां नै किसन जी रो साळो भी नी कै सका। चाणती टेम एक पग हिलोळो सेवे, ज्याणे बळद गाड़ी ऊचा-नीचा गेला पर चाल री होवै।

मा-बाप री एकली भौलाद, आख्या रो तारो, अधारा घर रो उजाळो, मन रो प्यारो, बग बड़ावण वाळो, मणो प्यार, हेत, हमलास रा पालणा मे पळ रियो हो। बेणीगोपाल नै देखण सू आप अनमान नी लया सको कै ओ आठवी मे पढ़ण वाळो टावर है। उणा नै आप चौथी सू ऊची किलास मे पढ़ण वाळो नी जाणोळा। पोच्या अर कोप्या रा बोझ सू उणा रो जीमणो खांदो दब ग्यो जो ओघा नै ही आठ कोस सू दीख जावै। उणां रा गांव मे पाचवी सू छके इस्कूल नी ही जिण सू उणा नै डोड कोस आणो अर डेढ़ कोस पगांरा पांण आणो पढ़तो हो। पढ़ण मे कदेही नागा भी करतो, उणा री माया ऊपरली फिर जाती तो बात दूजी ही।

बेणीगोपाल रो मूडो गोळ, काठा गेहू रा पतळ फलका ज्यू उपसेरो, आख्या मोटी पण ऊण्डी बँठेड़ी ज्याणे पांच कोस पर सौ बाट रो बिजली रा लट्टू जूतेड़ा हुबै। आंततो उण टैम आख्यां रें चार-मेर पाच-सातेक सळ पड़ जावै, सळ री ऊपरली चामड़ी काळी अर सळ मे भोळी होवण वाळी चामड़ी गोरी ही। मापा पर केसां री कटिंग अणगण कुवास सू करायेड़ी ही। दांतां री पूरी ऐरनी करतो हो जिण सू उणां पर पीळा रंग री रेख मंडणी ही ज्याणे पीतळ रो पतरो पड़ा गेल्यो हुबै। आख्यां रा भूबारा में कदेही कदेही गीठ बिपकेड़ा रह

जावें । गाभा पेरें तो मूगा है पण दरजी उणा नें जियाद ~~पेरण में बूट भी है पण हाकादरबड में नित पेरें नी आवें~~ ~~जोमणों पण मोहो जियादा हो डोडो पड़न लाग भ्यो हो ।~~

एक दिन इस्कूल मे मोहो आयो तो म्हें कारण जाण बा ताई हमसात सूं पूछ तियो—“क्यूं रे गोपाल इतरो मोहो क्यूं आयो आज ?”

बेणीमोपाल बरतो बरतो केवण लाग्यो—“मा' छब म्हाला पीताजी सो जीव भोगी कोनी जिण सूं मोहो होग्यो ।”

‘काई बात होगी बार पीताजी रें ?”

“गोपाल पाछो याद करतो करतो केवण लाग्यो—“अजमेस में डाक टल चाल बीमाती बताई, एक...एक तो बलड पेसल, अल...अल-दूजी हाल-टेक, अल...तीजी गैस ली, अ...ल ...चौथी डील बिखन वाली ।”

म्हें मन ही मन हंसरियो हो, उण हसी नें बार नी निकलवा दे रियो हो, क्यूं कि बार निकालतो तो गोपाल री बोली बन्द हो जाती । इण मू मू इस्यो दुखी मुहो बणार मुण रियो हो ज्यान वे सबळी मांडगिया म्हा रे हीन लाग री दुब । बेणीगोपाल री बोली ही इसी है क मुणवा बाळा नें आपू आप हंतणीं आ जावें । छोरा जद उणरी बोली पर हसे तो मू वानें घणा हेना करु अर गोपाल नें भी केह दियो कें घारी बोली माथे कोई भी छोरो हसं तो तू म्हुन कह देबो कर । पण भोळो गोपाल आज दिन ताई कोई छोरा रो ओळगो म्हारा ताई नी ल्यायो भसे ही छोरा उणां में छुब हसो अर बिढाओ ।

गोपाल म्हारा हिया मे रमग्यो । इण रो कारण आप ओ मत जाण-ग्यो के हूं बासटो ह । पण फेर भी म्हा रे समय में नी ठी ? उण रो घोडोक दरद म्हा री जवरी मुसीबत बण जाई । गोपाल कांता मूं भी थोडो क ऊंचो मुण । थोडा दिनां पछे म्हे उणां नें पूछयो—“क्यूं रे गोपाल अब क्वांन है रे पारा पिता जी रें ?”

गोपाल गेल्या ज्यु होर गाबट नें होळा होळा हिलावण लाग्यो पण मूंका सूं कोई उपलो नी दियो । अर एकण और मुणवा ताई कांता नें ऊंचा कर तियार होग्यो । इयां देख रें में पाछो जोर मू केकायो तो गोपाल मुरज्यायोडा मूंका मूं बोल्हो—“भातछाब कार्त सकवाली मोदयो होगी पछे म्हाला गांव मे माता जी सें पान मागें लेग्या । उठे भोपान भाव आयो जो...जो...कियो क...म्हालो ही दोग है, तीन दिना में डीक कन देखू, म्हुनें साजी कन दोनो, पछे उगो सें जोत उवाली अल...अ...ल आला डील सें भभूत मणली, पण हाल ताई म्हुनें कोई फलक नी दीछ ।” केता केतो गोपाल रें आख्यां में आमू चमकण लाग्या, म्हा रो भी हियो भरग्यो । गोपाल नें पूछ र म्हे गलछी करग्यो, ज्यान में उणां पाकेडा दूपणां री पाटी उछाड़तो, उणां रो दुधर्पो लोयो जाण होग्यो । उणां

ने मैं हमलायें सून समझायो क जियादा सोच नी करणों, जो भगवान करसी सोई
 खरी है । उणां नें हुसियार डागडर नें दिखायो, तियार हो जासी । पण सपूत
 बेटो बाप री मांदगी सून भाषो रंग्यो, दुबळा नें दो असाढ़ । म्हनं उणां री
 नानीक जान मे हजार दुख देख'र इजरज होरिया है, भगवान उणां रें दुख नें
 भट भेटे ।

बापड़ो लीछर

□ लेखराम सोनी

एक गाँव में एक लीछर रेंवती । बी नै सारा गाँवगा लीछर कँवता, जिक्रै तू बी' नै थोड़ी कब्जी हुगी । बण देबयो कँ सगळा मनै लीछर कँवै हे तो फेर हस्यो मौकी कद आसी । ई लीछरी गो फायदो उठावणो चाहीजँ अर आजकल सगळै लीछरां गो चालै ई हे ।

आ' बात बिचारणे बण भायण देवणां सुरू कर दिया । जठै भी दो चार आदमियाँ नै भेळा होएड़ा देखतो बठै ई राजनीति अर राज भी बातां करतो । सगळां तू घणो बोलतो अर दूसरा गो सुणतो ई कौनी । पचायत धर मै जामने आसण जमा देवतो अर आपगो दलियो दलतो रेंवतो । मारवाड़ी में आ का'कत भी है कँ बोले बीगा बोरिया ई बिक्र जयावै अर नी बोले बीगा आम ई पड़्या रेंवै । अनपढ़ अर भोळा आदमी बीगी बातां सुणन नै बीगी चौकी पर जा पूगता । कई जणां तो चिलम तमाखू पीवण बास्तै ई पूग जयावता अर बो' आपगी लीछरी गो घासो पांवतो रेंवतो ।

बी' नै लीछरी थोड़ी घणी फळापी भी । वो पंचायत मै चुनावा मै पंच बनग्यो । एक तो करेलो अर फेर नीम पर बढग्यो । अब तो लीछर आपनी लीछरी गा रंग दिखावणा सुरू कर दिया । सरकारी करमचारी जे बी' नै तलाम नी करता तो कि करदो करदो रेंवतो अर अलाम न करबियां गो गिफायत कर देवतो । कुम्हार को कुम्हारी घर तो जोर चालै कौनी तो बयियै गा कान मरोड़ै । गाँव आळा पर तो लीछरी घणी चालती कौनी तो बिचारां करमचारियां नै सार पढग्यो । कर्मचारी भी बीभी लीछरी तू तंग आग्या । पंच बापड़ा के करै । बो'भी कुण सुणै । बिचारा सरपंच कनै पुकार करी तो सरपंच बोस्यो—बारो के सेब है, बो' बकै है तो बकण देबो । बक के रें जिली । कई करमचारी तो

घुप होगया पण कई बी'गी हाजरी देणी शुरू करदी । पाजरी देवणियां नी लीजर
साब बडाई करनी सुरू करदी ।

एकर बण सोच्यो कै ई गांव नी इस्कूल गो एक भी मास्टर मेरी तिय
कोनी बाँचै । मास्टरा मे बडी आकड है । बां' नै पतो कोनी कै ओ' लीडरा गो
जमानो है एक आघ लीडर नी जी-हजुरी आच्छी हुवै । मैं भी पूरो लीडर हूँ ।
मेरी भी की तो पावली पांच आना मे चातै ई है । फेर के देर साएणी ही, पंग
आपणी लीडरी गो पबको रंग मास्टरा पर दिवावणों सुरू कर्यो । जद भी बी'
कनै दो चार आदमी भेळा होवता, तो कँवतो कै यानै बेरो है के इस्कूल मे
टाबरां नी पढाई किसीक होवै है ? मास्टर एक आंक कोनी पढ़ावै । बी' तो रोज
मण्डी चल्या जै, अर गांव आळा मास्टर आपनै छेत चल्या जै । हंडमास्टर सगळें
मास्टरा सू डरै । राज तो सगुहाल करै कोनी । इस्कूल मे तो गोघा छोड़
राख्या है गोघा !

बंण लिख्यो ई बात नी शिकायत करदी । इन्स्पेक्टर मैं दफ्तर सू कई
दिना बाद मास्टरा नै पतो साग्यो । दफ्तर मैं एक बाबू मास्टरा नै बतायो कै
पारी तो शिकायत होगी । शिकायत कण करी है आ बात बाबू नी कोनी
बताई ।

आ' बात सगळा जाणै है कै लीडरां मे दो व्यार चमपा (जी हजुरिया)
भी होवै । लीडर साब रोज इन्स्पेक्टर साब मैं दफ्तर मे चमपा समेत पूग
ज्यावतो अर रौळा करतो, कँवतो मे म्हारै दस्कूल मे गोघा पाल दिया । न
तो छोरो न पढ़ावै अर न पूरा इस्कूल ई जावै । मास्टर तो रोज गिबपर देखन
मण्डी चल्या ज्यावै ।

बी' लीडर सू तग आएड़ा इन्स्पेक्टर माव छोटिये अपमर नै मौकै नी
जाँच पढतान करण वास्तै भेज्यो तो पतो बात्यों कै मास्टरा'गो कि बगुर
कोनी । पंग लीडर किया मानै । वो' बोल्थो मैं अपमर तो मास्टरा कनै गू
पूरा प्रायोगे द्या कैवै ।

आखरकार इन्स्पेक्टर साब घुद लीडर'गै कैवण सू जाँच करण वास्तै
आया । आगमे देख्यो तो इस्कूल में आदमी भेळा हो रया हा अर घणा रोग
मास्टरा नै' पता में दीस्या । इन्स्पेक्टर साब कै आवता ई लीडर बर्न आर
आपणी लीडरी भाषा मे बात करणी सुरू करदी । घुद'ई बोलतो गयो पंग
दूसरां नी गुणै ई कोनी । खाता देरसाव मुणता रया । मोड़ सू एक भी आदमी
कोनी बोल्थो । पछे इन्स्पेक्टर साब कँवण साग्या कै लीडर साहब अर मोरो-
पणी बी' म्हारी भी गुणो । यानै तो काँव-जाँव करता एक पंटो होय्यो । म्हारै
बनै इतो पानसू टेम कोनी ।

लीडर बोल्थो साब जगता गो राज है, लीडरां गो राज है । लीडरां

गोन मुणस्यो तो फेर कीगी मुणस्यो । म्हारे कैवण सूं गांव आळा मास्टरां गो बदली तो जरूर कर ई देवो ।

सा'ब बोल्या, नेताजी बात थारी सोळ्हा आना साची है । राज जनता गो, राज लीढंरा गो, थारी नी मुणस्या तो फेर कीगी मुणस्या । पण गांव'गे मास्टरां सूं तो थाने फायदो ई है । अं' न तो मकान मांगें, न लकड़ी मंगावें, न दूध मंगावें । दूर'गा आसी जिका लकड़ी, पानी, दूध सब मंगासी ।”

लीडर कै'वण लाय्यो—“सा'ब, म्हाने अं, मास्टर कोनी चाहिये अर ओढकानी ईसारे करतो बोत्यो—क्यूं भाईयो, मेरी बात ठीठ है या कोनी ?” पण एक भी आदमी लीडर'गी हाँ में हाँ कोनी मिलाई ।

इन्स्पेक्टर साब समझ गया अर रीसां मे बोल्या—लीडर सा'ब थाने अं' मास्टर कोनी चाहिये तो मैं तो इस्कूल मे मास्टर ई भेंजस्यू, तसीलदार थोड़ाई भेंज देस्यू । इस्कूल गो जांच पढ़ताल'गो काम म्हारी है, थारो थोड़ो ई है । ये आ' लोडरी थारे घर जा रें करो ।

वापडो लीडर आपगोसो मूंडो लेगे, घरा उठ्यो ।

आविष्कारा रो विधाता : पूनमजी मिस्त्री

□ भर्जुनसिंह बोस्वावत

तखतगढ़ । राजस्थान री पासी जिला रो एक गांव । जठे एक गजब री वैज्ञानिक अंगरेजा री देम सूरु सगा'र आज ताई साधना करे । बासठ बरस ही उमर मे उणा बावन आविष्कार करेने मानवां री घणी येवा कीदी है ।

ऊँची घोती, खादी रो कुर्तों, सागणा साबुटी काळा अंगरेजी बाळ, डाढ़ी मूछा साफ, गेहूँवा रंग, डोंगो कद, भरीये डीले—ओ है मिस्त्रीजी रो होळीयो । इणा री पंचमुखी हड्डमान रो इष्ट है । आपरी जनम १९१४ मे सुपारा री घरे हुयो । उणारे बाप लकड़ी नै मकान बनावण रो काम करता था । इयां रो पुरो नोम पूनमजी लछाजी मिस्त्री है अर पी० एल० मिस्त्रीजी री नांव लूं ओळधीजै, सरीर नै दूद सुपार रो है । आपरी भणार्ड-पडार्ड तखतगढ़ मे इज न्ही, मिस्त्रीजी रो जीव ठेट सूरु इज मशीनो री काम मे हो । अणा बाळपणा में इज दो बीसी मण बोझ री एक मोटी तिजुदी बणाई ही, जिणने गलत कूंची सगा'र घोलवा री कोशिश करै तो उण चोर रो हाथ तिजुदी में इज गिरफ्तार भ्हे जातो । इणी भांत एक रेल रो इजिन भी आप बणापो थो पण अंगरेज ये चीजां मे सीदी अर नाबालिग समझ नै कोई पण ध्यान नो दीनो । अंगरेजा री राज में इज आप एक आना प्लेटफारम टिकिट री मशीन बणाई जिणरी ग्रासीयत हेती कै असली नकली सिक्का रो पिछाण करणी अर भार रो टिकट देवणो । नकली सिक्को जे नाछै तो टिकिट नो देवै । अंगरेज सरकार छः मीना तक इणरी जांच कीनी पछै बितायती मशीनां री जवा मिस्त्रीजी री मशीनां सेंगा पेसी बम्बई री ठेमण मार्चे मेलीजी अर मिस्त्रीजी नै अंगरेज सरकार मान पत्र दीनो अर ७० मशीनां फेद तावड तोवड बनावण रो हुकम दीनो । पण उण

टेम स्वराज सारू 'भारत छोड़ो आंदोलन' जोर में हो नै अंगरेज भारत छोड़ण आळा इज हा, इण खातर आप ओ ओडर मंजूर नो करियो ।

मिस्त्रीजी री जिन्दगी में म्हा नेकेई खासीयतां दीसै । उणारी जिन्दगानी सतरंगा इन्दर धनक रै ज्यूं विज्ञान रा आवा में पसरतो जाय र्यो है । सिसार में शायद इज कोई ऐहो वैज्ञानिक व्हेला जिको इत्तो भगत भी व्हेला । मिस्त्रीजी हइमानजी रा पक्का भगत है—दो डोरा रोज दिनूय पूजा करै । पंचमुखी हइमान आपरा इष्ट देव है अर सगळा आविष्कार आप इणारी पुन-परताप अर दया-महूरबानी इज समझे है । केई बार सुपना में हइमानजी खुद इणा नै आविष्कारां रो इशारो करै अर मारग बतावै, भेद बतावै । आप एक सार्य वैज्ञानिक अर दार्शनिक है, आविष्कारक अर भगत है—एहो दाखलो दुनिया में फेर कठेई शायद इज मिलै । दूजी बात, इतरो मोटो लूठो वैज्ञानिक व्हेला पका पण भणार्ई-पकाई खाली पाचवी किताब ताई इज है । इण लूँ ऐहो सार्ग के कवि इज मो जनमे वैज्ञानिक भी जनम लूँ व्हे सके है, आ भी कुदरत री देण है । इण भात सादगी, आध्यात्मिकता अर वैज्ञानिकता री त्रिवेणी संगम भायै गांव रा बाता-वरण तीर्यराज लखतगढ़ बस्योहो है । सै'र री भाग दौड़ नै हाका दरबड़ लूँ आगो, एकांत, गांत गांव री गोदी में बैठो ओ तपसी मून झाल'र छानो मानो बैठो-बैठो कितरा गजब रा काम काट दीना है, के केबा रो काम नी । केई बार मिस्त्रीजी नै दिल्ली अर बम्बई रा बुलावा आया पण इणा रो पदुस्तर हो के— "म्हाने म्हारी जनम भीम लूँ पणो सगाव है अर भगवान जे म्हारी उण सै'रों में जरूरत समझतो तो म्हने उठे जनम देतो, गांव मे ब्यू देतो । इण बास्ते अठै जिको साधन सुविधावां मिल सकै उण लूँ इज म्हने मानवां रो सेवा करणी चाइजे । म्हने इण माटी लूँ प्रेम है अर सै'र रो बातावरण म्हारै पूं भी माफक नी व्हे ।"

मिस्त्रीजी घनेरा उबयोणी आविष्कार कीना है—जिन मे खास खास नीचे मुजब है :—

- (१) चलती साइकिल मे हेण्डल मे लागोहो बटन दबावण लूँ अपने आप हवा भरीज जावै । पूरा खाली द्यूब में बीस सेंकिण्ड मे हवा भरीज सकै है ।
- (२) एक बल्लद रै भार लूँ चालण आळा एक पाणी काइण रा पम्प रो भी आविष्कार कीहो । १६ फुट ब्यास आळा पेड़ा भायै बल्लद जेहो कोई भी जिनावर रै खाली गोळ गोळ फिरण लूँ निकळ जावै, भलई बेरो कितो ई ऊंडो ब्यूनी व्हे । एक बल्लद रै भार लूँ ३५०० गैसन एक कलाक में अर ६००० गैसन पाणी दो बल्लदी रै बोस लूँ निकळ सकै गर, जे बेरो से ७० फुट तक

उण्डो छै ।

- (३) एक हाइड्रोलिक जळ निकळवा री मशीन भी बणाई है जिन सूं बिना सक्ति नै मँणत रै जापी पाणी बारें आय जावै । मशीन अपने आप आपी खुले नै बंद छै ।
- (४) मिस्त्रीजी एक ठपणे आप चालण आळी पंधा नै उजाळा रो भी बन्दोबस्त कीनी । इणमे भी चलावण मे बिजली बीजी किपी सक्ति री जरूरत कीनी । जद कोई आगदी किणी भात बिछा-वणा भायें वेंछे तो अपने आप नाइट नाम जावें थर पणी चालू छै जावें और पाछो उठता ही बंद छै जावें । जे पाछो नो उठे तो तीन कलाक ताई चालती रेवै । गर जे फेरू चालू राखणो छै तो पाछो उठ नै बैठणो पड़ेता ।
- (५) इणी तरै एक रोबोट री आविष्कार कीदो । जिन सूं कोई कार या जोम फाटक सूं २५ गज आगी रेवै जद जो दारगान ऊवो छै आवै अर सीटी बजावै, सलामी देवै, साइड बनावै अर फाटक अपने आप खुल जावै । गाडी निकल्या पछं अपने आप बंद भी छै जावै । ए सगळा काम-काज अपने आप हूँ जिको कार रै पाछी जावण री वेळा नी छै ।
- (६) एक फोल्डिंग चेयर कम बेट बिष फोल्डिंग टेबिल बणायो है, जिन मे कुर्मी, टेबल नै पलंग तीनी है । चावो तो टेबल कुर्सी लगा'र लिप्यो पढो नै सुबारी मरजी छै तो पलंग बणाव नै सुई जावी ।
- (७) एक दो-मीट आळी अपने आप चालण आळी कार भी बणाई है जिको बिना पेट्रोल कें गैस रै चासे है जिन मे चावी लगावा की भी जरूरत कीनी । इण में राबं होवण आळो सक्ति नू अपने आप मिगण आळी सक्ति घणी भेळी व्हेनी रेवै । सक्ति भी अपने आप चालण री क्रिया सूं इज भेळी छै ती रेवै ।
- (८) एक आविष्कार इण तरै रो है कें जिन रै पांग सङ्ग व्यवस्था सूं बिजली पैदा कर सकै है ।
- (९) एक ऐही पासनेट री बसी बणाई है कें जिन टेम हाइट परी जावै उण टेम अपने आप लाग जावै ताकि अंधारो नो व्हे सकै अर काम नी सकै । इण सेम्प मे पासनेट अर ड्राई सील छै जिनो बिजली आवता हो अपने आप बळ नै बिजली आवता रै अपने आप भुर्ज ।
- (१०) एक गाम आविष्कार गो चमत्कार है कें दो रेनगाहियां एक

इज लैण मायें आय जावें तो बीमेक पांवटा आगी दोनूं रेल-गाड़िया अपने आप रुक जावें, किणी भांत टक्कर रहै इज नी सकें, इणरी मिस्त्रीजी गारंटी लेवें । इण रें चास्ते रेल्वे लाइनों नुंवी विछावणी पढ़ें ।

(११) अवार आप एक “हॉरिजेन्टल ऑटोमेटिक पावर प्रोटेक्शन मशीन” रो आविष्कार कर रया है, जिण नें चलावण सारु किणी भात री सक्ति, तेन, कोयला के ईंधन री जरूरत कोनी-पहेला अर मशीन रें चलण सू जिकी सक्ति पैदा भूेला उण सू ट्रांसमीटर सिस्टम सू केई तरें रा मानछां रें उपयोगी मशीना अर यंत्र चलावण रें खातर काम मे लीयो जा सकेलां, ज्यू कै विद्युत जनरेटर्स चलावणो, बेरा सू पांणी काठणो नें पावर लूम वगैरा चलावणा वगैरा ।

इण आविष्कारों रें अलावा ऑटोमेटिक कम्प्रेसन कनेक्शन, मोटरगाड़ी रें पेड़ो फुलावां रो यंत्र, खोर पकड़वा रो यंत्र, पुड़िय नें रोटियो बणावण री मशीन, एक घास टिफिन केरियर, कलम कर्न ले जातां ही अपने आप खुलण आळो नें बंद होवण आळो दवात, लगातार बेवा आळो पांणी रो कनेक्शन वगैरा-वगैरा मोकळी मशीनां अर यंत्रों रो आविष्कार कीनो है ।

सगळो आविष्कारां री मोटी खासीपत आ है कै करीब करीब सॅग अपने आप चालण आळा (ऑटोमेटिक) हैं, उणां रें चलावण सारु कोलचा, बिजली, तेल कै ईंधन री जरूरत कोनी ।

पड़दा भरम रा

□ सुरेन्द्र 'मंचल'

पात्र : मिन्दर, मजीत, गिरजाघर, कवि, सायर

[संगीत रो सुर उभरे भर होछे-होछेबबे]

मिन्दर : मजीतऽऽ ! सूतो हे क' जागै ! अबै तई काई अछे । उठ ! सिफवा फूलरी है । ओ मजीतऽऽ !

मजीत : कुण धेला ! अमा मिन्दर ! काई केवै भाई बुतपरस्त !

मिन्दर : ईद रै दिन धूं गुमेज मे आवसियोहो हेतो, पण अबै आँकियां काढ़'र देख, दिन भर मे कतना लोग सुगाया, गहारी छण डेछी वै नाक रगड़'र आतमा ने साम्ती दीवी । म्हे ध्दारे तूं किणी बात मे कम ग्ही हूं ।

मजीत : सा होत बिसा कूबत ! बर्यु कूबो चुमेज करे रे मिन्दर ! बोषा बना बाजै भणा । ई बाता मे सार को हे न्हीं । ध्दारे सारसी भीत तो निरख ! इस्फूस रा छोरा टाबर मूखी कर कर'र जाबै । किती गिछाबै । नाक फाटै !

गिरजी : (गूँझतोड़ी आवाज) बाह मजीत बाह ! दूआ री छोट तो गट दीत, पण खुद री भाँ ने डाकण गुण केवै ! ध्दारे सारसी भीत तो निरख मे ! रमजान री बीबी दिनुवैई छाणा सेप जाबै ।

मजीत : (हँसल'र) ओ गुण ! दो जण री बाता रै बिच्चे टांग अडा-बगियो । अनूयो !

गिरजो : (तोन बार घंटा घरणार) म्है हूं गिरजो । प्रभू यीसू रो इबा-
दातगाह ।

मजीत : क्यूं पंष्टा बरणांर माथी चड़ावै ! ईसामसी रै पवितर नांव सूं
कितनो कोतग रचायोडो है थूं । सो कुण न्हीं जाणै ? छानो मानो
बैठ जा ।

गिरजो : अरे अफंडी ! ध्दारा अफंड जग में चावा । देख, ध्दारें पैं ऊबी
मोलवी जो क्यूं हाका करे ? खुदा, थोड़ो थोड़ी ना सुनै ।

मजीत : देख भई गिरजा ! तन्ने बात करण रो सलीको ईज न्ही । जाणै न
बीणै । अरे मूरख, मोलवी सो खुदा इबादत करै है । इण ने 'अज्ञान'
केवै । क्यूं भाई मिन्दर । ठीक हे न्ही ?

मिन्दर : कई धूड़ ठीक है । कबीर सायब री साखी उड़ीक—

काकर पायर जोरि कै—

मस्जिद सई चुनाय ।

ता चढ़ि मुत्ता बांग दे—

क्या बहरा हुआ खुदाय ।

मजीत : तो कोई ध्दारा राम जी अतरा ठाला है क' हरदम इण भाटै रो
मूरत में ईज बैठपा रैबै ! उणां रै और कोई काम ई न्ही ?

गिरजो : व्है दोन्यू ई अफंडी हो । अबै तई सगळें इतिहास ने व्है लोई सूं
रातोबट्ट रग राखियो है । मिनव-मिनव में खाईयां खोद राखी है ।
अबै तई ध्दारो पेट न्ही भरियो ?

मिन्दर : ओ हो ! अरे, गिरजा सा'ब, आप तो अबै तई अखम कँवारा—
दूदां म्हायोड़ा ईज विराज्मा हो ? क्यूं ? पोस्लीता रा दिन सद
गिया । पोष तो सुरगां जावण रा सटिकिफिकेट भी देबणां सारू कर
दिया हेता । भूल गियो उण रो नतीजो ? दूजं ने सीख दिया वेला
अपणें खुद रै गिरेबान मे झाकि'र देख ।

मजीत : (धीरव सूं) भायां, सड़ाई में साडू को मिलै न्ही । धीरै बोलो ।
आज रो मिनव सै समझै । उबीं तो आजकल "वसुधैव-कुटुम्बकम्"
री बातों करै । सुणो, उबीं कवि काई गावें—

[संगीत रो सुर उभरै अर होळ-होळ डबै]

कवि : मंदिर मस्जिद गुरुद्वारों ने

बाँट दिया इन्सान को !

धरती बाँटी, अम्बर बाँटा—

मत बाँटो इन्सान को ।

[संगीत रो सुर उभरै अर होळ-होळ डबै]

गिरजो : (ऊँची साँस ले'र) हाँ भाई । बात तो साव साँची । आपे इण मिनघ नाव रँ जीव ने कठा तई बिलमायोडो—बाँटपोंडो राखालो । अब भरम रा पढ़दा फाटण नाग गिया है । कठा तई टांका दे दे'र टांग्योडा राख सकाला ।

मजीत : चुप ! सूर जी बाधूणें चाल्या ! नमाज रो टेम न्हें गियो ।

[संगीत रो सूर उभरें—इबें]

मोतवी (अजान की तीखी आवाज) अल्लाहूSSS !

(संगीत रो सूर उभरें-दबे)

समूह रो सूर : (घण्टा भर नगाड़ा रँ साथे ऊँची आवाज)

धो रामचन्द्र कृपानु भजु मन,

हरण भव भय दारुणम् !

नव कंज, लोचन कंज मुघ-

कर कंज, पद-कंजारुणम् !

[संगीत रो सूर उभरें-इबें]

जूजो समवेत सूर : वन्दना करते हैं हम !

वन्दना करते हैं हम !

[संगीत रो सूर उभरें—इबें]

मिन्दर : (फुसफुसातेझो) देहया म्हारा ठाट ?

मजीत : बाहू रे मिन्दर, बाहू रे म्हारा ठाट ! सँ झोग ? देख, उबी सेठ जी अब हाल भेक गरीब बलाई री गाय ब्याज पेटे छीण'र ह्यापो है, अर अठँ सबा रीप्या रा पतासा बाँट'र भगत बण गियो है । अर, उबी देख, उण घग्गै रँ नजीक ऊम्पोड़ी पुजारी रो बेतो, उण विघषा तिणगारी ने घूर घूर'र काँई देण रियो है ?

मिन्दर वा मजीद वा ! छानो रँ ! धूँ घोळो घप्प करिस्तो है, त्रिको जागू हँ । मोन, थोमू म्हारी पोत ?

गिरजो : मिन्दर चुप ! मजीद तू भी चुप । अतणे जोर सू मत ना सड़ो । म्हने तो डर लागे है । सापस मे लडपा कास को मरैन्ही । लो मुणो, उबी सायर काँई फुरमावें है—

[संगीत रो सूर उभरें—इबें]

राम बालों को रहमान से बू आती है ।

लहमे इस्ताम को भगवान से बू आती है ।

किस तरह करँ यिदमने इत्सा कोई—

जब कि इन्सान को, इन्मान से बू आती है

[संगीत रो सूर उभरें—इबें]

मिन्दर : मुण्यो के नही ! कान रो मेय सफा कर'र सुणो । अबे आपां
 रो जादू इण आदमी रो जात पै नही चानणो । आपां रो वातां
 इपा रै काना पड़गी तो आपां तो आपा, पण छोटा मोटा सगळा
 जापणां भायां रो जिनगी खतरे में पड़ जावेली । पछे नहीं तं
 राम यचावण ने आवेला, न खुदा, न ईमा मसीह । अबे तो ओ
 मिथ नीतर ई भाखरां-नांगळ, सिन्दरी, हीरा कुण्ड, राजस्थान
 नहर, जेड़ी जाग्यां ने मिन्दर, मजीत, गिरजा अर मुहदारां रै
 ज्युं पूजणो मरू कर दिमो है । जिकण सँ काल रो कमर टूट रो
 है । चेतां में दूणो घन घान होवण लाग्यो है । भरम रा भाखर
 ढह दिया है । हा, अबे, पणी गी अर थोड़ी रो । थोड़ी मे छिन-
 छिन जाय । आदी रात रो गहर बाज गियो । अबे निमस्का
 सुणन दियो ।

महीत : मलाम !

[संगीत टमरे—इबे]

महं जनता हूं

□ भगवतीसात व्यास

जन्म जन्मात्तरां री काणी तूं
 एक राजा'र एक राणी ने
 काढ़'र
 सारं जो बचे अजाणी
 पोध्या में नहीं मळं जिणरी विगत
 असोप पण घट-घट रम्योही
 अदीठ पण
 मनख री मंघ रे सार्ने बस्योही
 जुगां-जुगां री ठोकरां भेलती
 मे'ळ माळिये री घजा न्ही
 गांव-गोठ री धूळ
 कदै आकासां उइती
 तो कदै पाताळां पोइती
 सगळे ही अंधकार नै ओइती
 महं हर जुग रे
 नुबै मूरज री गिबता हूं
 महं जनता हूं ।

महं देख्यो हूं कौरव-पाण्डव जुद्ध
 रगत रा खेवाळ

हण्डा रा अड़ावळ
 दिसावां नै चीरतो हाहाकार
 घरती नै घोजतो जै जैकार
 अर. इण सब रै बीच सूं
 नियरतो गीता रो ग्यांन
 कृष्ण रो बिज्ञान
 काम न्हों आयो
 म्हारी लटां खेंचता दुशासन रै
 म्हूं निरगन्ध गांधारी

माटी रो बेटी
 माटी में हळगी
 राम रावण रै बैर रो
 जणूती सैनाणी
 निरदोस सुळगती लंका
 हद्दमान नै हाथ जोड पूछती
 म्हारो दोस काई ?
 म्हने बयू जाळो ?
 हद्दमान काई कैवें—
 उणने तो राम रै अभियान रो
 पुष्टी करणी ही
 आपरै सरीर बळ रो पुष्टी करणी ही
 म्हूं खुद आग ही
 पण मूण घर जळगी
 म्हूं इण भारत रै कण-कण छणी
 महाभारत रो अबूझ भासा
 लंकारी राख में दम्योड़ी
 अचपळो सवाल
 म्हूं आदकवि रो
 अणलिखी कविता हूं
 म्हूं जनता हूं ।

तुरक-मठाण फिरंगी रो पयफेरो
 सत्ता रो

सिधामण रो
 अणवक निरत
 कतरा ही कतले धाम
 म्हारी पुतळ्यां में वन्द है
 घोडा री टापां तळीं
 ममळपोडी पयनां रा जलांस
 म्हुं हियई मे सहेबू हूं
 विळधना टावरां री चीतकारा

कंकू री गोधां ने काटता
 दुजारा
 सामण्या रो उतरतो पाणी
 कंचन रा वसम भरें
 मद रा छळता प्यासा
 ऊंचा-ऊंचा गडू कांटा रो
 मन मोवतो जोवण
 एक मूग रो दो फाह बीच
 टणी अणवण
 कतरी ही पनात्प्यां र
 कतरी ही हळदी माट्यां
 भर मनरा ही धानवा रै
 रणत रंग्या भाटी मू
 मूळ री मरोड रो मोल तो
 पूछ देखी
 शामद न्हीं बत्ता मके
 म्हुं बत्ताळें
 इण मरोड रै ग्यातर
 अरण्या ग्हे करोडां मुण्ड
 फेर भी म्हुं निपुनी न्हीं
 म्हुं गरम गंगा हूं
 साममान ममता हूं
 म्हुं जनता हूं ।

यो म्हारो देस छे

□ श्रीनन्दन चतुर्वेदी

यो म्हारो देस छे
ई को मुकट छे हिमाळो
ललाट पै छे तरपुंड
जेहळम, चनाब, राबी को
बीदी छे मोट्यार डल सील
ई की नाइ पै पड़ी छे
चांदी की चमचमाती कणठ्याँ
सतळज अर ब्यास
ई की छाती पै मंहयो छे अतहास
बीरता को जोहर को ।
काँघा सूँ कम्मर ताई
पड़ी छे मनी होई अनेव
जमना अर चामन की
कम्मरबंद छे नरमदा की धार
गंगा सोंघ अर बरमपुत्तर छे—
उत्तरीय
पगाँ पड्यो छे
मोतयाँ का घाळ सै'र
होई महासागर
ई घरती को कण-कण छे तीरथ—
ई नै बाँट्यो छे इमरत

जणा-जणा सूं कैर
 कै—जीवो अर जीबा दो
 जुगाँ-जुगाँ सूं जगत का कणा मं
 घोल्यो छै सदेसो—
 तू इमरत को बेटो छै
 सोवै मत मनखड़ा
 चालबा सूं चालै छै भाग
 तू चाल !
 चाल रै चाल !
 ई नै परनाम म्हारो छै
 यो देस म्हारो छै

ॐ हाथ.....

□ म० ना० कौशिक

ॐ हाथ..... !
किस्सियां चलाता
पाणी री भक्ति नै खोरता
मन मुजब
मेड़ा काटता समुद्र री छाती पर
पण—भाज
कट्योड़ा हाथो कने
दूदपोड़ी डांढा है
मुपना तो बँ'इ है
पर दिन दूजा है ।

ॐ हाथ..... !
कदीइ
सस्तर अ'र सास्तर उठावता
भाज
परायो परताए पावण नै
मन्त्रां पर गहूया
मिन्दरा रै सामे बँठूया
जे कतारा साम्बी'इ साम्बी है
पण—हाथ
बाधा पड़दा है ।

अ हाय.....!
 सूरज उगावण नै
 रातां रा पहाड़ काटता
 दिन विसूजण री वाट देखै
 उमर रो एक दिन और बीत्यो
 जाण—चैन री सांस सेवै
 आज—आ'रा मूँहा
 आपरै'इ
 हाथां स्यू डूब्योड़ा है ।

अँ हाय.....!
 जद जद ऊँचा उठता
 आसमान आसीरबाद भेण नमतो
 पण आज—आस्यूँ
 बैसाखी रो सा'रो'इ झळ कोनी
 हाथा रँ दुःख स्यूँ हाथ
 आंघा हुयोड़ा है ।

अँ हाय.....!
 सिन्धु रँ गरभ स्यूँ
 अणमोळ मोती स्यावता
 आज—छूट्या पर कपडा ज्यूँ
 ककाळ पर लटक्योड़ा
 हाथां री संज्ञा'कें बत्ती
 फी लागै कोनी
 सरीर रँ सागै जाबैला
 जिनगी रँ सागै आयोड़ा है ।

अँ हाय.....!
 महावीर, मसीह, गौतम—गांधी बण्या
 दूजां री पीढ़ सहळावता
 कदेइ थक्या कोनी
 आज हाथा में'ड पीठ इत्ती है—कि
 हाथा रा'इ
 आसू अण-सूछ्योड़ा है ।

८४/ कौरणो कलम रो

लाज

□ श्यामसुन्दर भारती

जद उण दिन
धान तोलती बेछा
दुकानदार
म्हारी आँख मूँ बचायने
ताकडी रै डाटी मारी,
जद म्हारसै मित
म्हारै मुँडे मायै नी
म्हारै सारै म्हारी मूँड बछायो,
नै जद
उण दिन दफतर में
रिगमत सेवण सारू बी
देबल रै मोखे कर
हाथ साम्बों करियो,
तद म्हूँनै सघायो
कै सोयाँ रो आँखयाँ में
हाल तक
साज बाकी है ।

रुवायां

आज आई है जकी बार आ ढल जावैला
बात ही बात में सब बात बदल जावैला
मानखा चेतणो चावै तो चेतजा भीतर
बगत रो जातरु हबकै सू निकल जावैला ।

□

बिणज बीपार ताई सगळी रात जागै है
फिकर में डूबियै री आंख ई नी लागै है
हाय पण छोटियो टक्को ई साप नी चानै
मानखो सगळी उमर जिण रै तार भागै है ।

□

गीता नै कुराण रो भगडो क्यूं है,
हिन्दू नै मुसलमान रो रगडो क्यूं है
क्यूं मानखै री हालत है बिगड़घोड़ी
राकसियो अठै देव सू तगडो क्यूं है ।

सूटो

□ डॉ० उदयवीर शर्मा

सामीझी सूसातो सूटो, पूण पाण बगतो आवै ।
रुग्घ घुजीजं पोघा कापे, पांच पथेरू बिलछावै ॥
रोही रुंचं धूळ उडावै, जीव जिनावर डरपावै ।
सन हीणो धाडी सो सूटो, रोही नं सूटै पावै ॥

सूटै रो सरूप कुण भाचै, कुण छीचै ई रो बितराम ।
सूसाणो सरणाटै जाणो, रूप हीन निरभीक निकाम ॥
प्रलय सरूपी जबरौ झाली, निरमोही पंछपां रो काळ ।
पणो कुकर्मो राकत धर्मी, बेमोर्क आपो बिकराळ ॥

बिरग्या ओळा धर्ण बेग सूं, चढ़ चाली जद पून बिवाण ।
रोही कापे छेत्ती घुजै, आवै फाँफा बेपरवाण ॥
ढाँढा बिलछं डूढा तिढकं, पढ़े पथेरू हो विदरूप ।
जद करतो अट्टहास रावणी, सूटो प्रगटै असतो रूप ॥

छान झूपडा मना रळ्हाए, दीन टापरां रो रख ध्यान ।
ह्यापो पावै, कारूपी पोर्वै, करै गरीबी मे गुजरान ॥
जं गुदहा भारं सूकै सो, मना भिगोये फेरू भाग ।
काढे रात गरीबी बंठी, गीता गुदहा तन मे आय ॥

दीन हीन जै दुख सँ दासै, उबलै भूखो नंगो डील ।
 तो सूटा मत छांट छोड़िये, छोड़यां चुभसी जाण कील ॥
 दुखिया रा तू छोड़ आसरा, समता रो फटकारो मार ।
 दुख देवणिया रखै धरा पर, नरकीटी बँज्या बी धार ॥

पढ़या धरा पर सरकी ताप्या, मूढ घरोया दुबला दीन ।
 बा नेह जै गयो सूटिया, सँ भरज्यासी राख यकीन ॥
 अथ नंगा भूखा दुखियारा, नित उठ अपनो करै जुगाड़ ।
 बाहीणा रो राम रूसरयो तू मत हुंमरै परन बिगाड़ ॥

खून पसीनो कर दिन तोहँ, ल्याणो-ध्याणो नित रो काम ।
 बा इडा मे क्यूँ सिर फोड़ै, दया दिग्या क्यूँ मनड़ो पाम ॥
 रोटी पोतां बठै न जायँ, घाती बेला नै तू टाळ ।
 करम चांदड़ा देछ गरीबी, बणी रोटियां मेरै काळ ॥

जै सूटा खिमता तेरै में, ऊबड़-धाबड़ नै दे पाट ।
 डूगर बहज्या खाहा भरज्या, सगली धरती बणै सपाट ॥
 समता रो बरखा तू कर दे, दीन दुख्यां रा दुखड़ा मेट ।
 भुसरपा, सुमरपा, दबरपा, बियरपा, पड़यो कधादा भूखो पेट ॥

बड़ा दलेचा रो के बिगड़ै, सह सेवै बै सगळा ताप ।
 दीन परां रो उहँ छानडी, मुरगी रै ताकू रो चाव ॥
 छाना टपकै आसू टलकै, दोग्यां रो तू दरद पिछाण ।
 मतना करिये छुंरो राध में; मोटा परतू काढ जपाण ॥

टाबर जद रोटी नै कळपै, देछ दसा उमळै मां बाप ।
 रुदन करै बी घर रो कण-कण, कुण देखै यो मूक बिलाप ॥
 बीं पड़िया जै तू बड़ निकळै, थमिये, मत करिये पद-नाप ।
 हिवडो है तो बूंद मेर दो, मता बड़ा बां रो संताप ॥

मूँदें माथे पढ़यो दीनड़ो, सूंटें चक्कर चढनी छान ।
 करज कड़ा कर ग्वाही बाँधी, डहणी, कल्यो सो सामान ॥
 ज्यू मंगतै री झोली या सूं, लेज्या कोई टुकड़ा घोर ।
 हाथ साफ करणो न्यू सूंटो, सुबकै दीनो पढ़यो निजोर ॥

ठगक छोड़ दे मामन्ती री, पवन-कुल्लौ इब हवा पिछाण ।
 जन मन रै नेहँ आ सूटा, मत पीवै दीना रा प्राण ॥
 समता रा बादल त्या नभ मे, भंगल रो बरसादे नीर ।
 मिटै गरीबी, बचै दीनड़ा, उजळै निखरै राष्ट्र-शरीर ॥

जनहित प्यान जगा तू मूटा, सुण दीनां री दीस उगास ।
 सेवा कर बी लोक-प्रभू री, मन्दिर जी री दीन-निवास ॥
 या जीवन री सार कमाई, करी जिका री उजळो रूप ।
 मजरी बाल, बाल तू प्यारा, जग नै लागै घणो सरूप ॥

वैम

□ रामेश्वरदयाल श्रीमासी

सपनां रै हायां में बिक म्हे
म्हारी खुद रो मोल घटायो
जिको ऊजळो सौ निकळघो हो
वो तो निकळघो सफा अंधारी ।

मैलां री पीड़ावा मिटणी
छेलां नै मिळ गई जयानी
पण गैला में सूखण बाळा
बाँधै हाय भूख रो भारी ।

ज्यारै सोना रा पिलंग है
वै पीवै बिलायती दाह
पण भारी लावण बाळां नै
आटो कोनी मिळै उधारी ।

पैला तिकडम पाण मिळै ही
तिकडम पाण अजै ऊमी है
बेहुरा बदळधा तो काई ह्वै
नीं बदळघो कुरसी रो डारी ।

बै री वै लच्छाळी बातां
वो हस-हस नै आयत-सागत

मम को कैसे रक हरीक
मोने से बड़ जड़े पारी ।

मम रोने ही जगदी
ज. विन्दो हरी जगदी
ममों से जगदीनी बाले
जगदी से तेज दुपारी ।

हर मम ने रोटी दे दे
हर नाम ने दे दे कपड़ो
देखनाचं ने रोटी दे
इतनी कठं राज है पारी ?

कठै तक ?

कठै तक कथि सुरु-सुरु नै गावै ?
आखरा सू कठै तक भरमावै ?

गुरसिपां में जरूर जादू है
जिकी बैठै, वो ई बदल जावै ।

जमाने री हवा री रंग इसी
जिकी देखै, वो ई गंभळ जावै ।

देवता बापवा रगत चाढ़ां
वो ई परसाद मेल दळ जावै ।

लोग भण्डार भर दुबळा दीसै
नै म्हाने बातदी सू पोमावै ।

पाँच लहौड़ी कवितावां

□ साँवर दइया

अरवात

आमैं री अणंत कोरां ताई पूग
टाबरां छातर चुगो मेळो कर
सिहया पाछो बावड़ सकूं आळें में
वा पांग दीजें म्हनै

जुगां सू अंघारै मे गम्पोडा
सुयां रा मारण सोध मकू
भाषी मानश्च छातर
वा बाँध दीजें म्हनै

नीतर ओ मानक !
मै'र रं नाबे
मै'र कर'र
कोई मै'र मत करीजें
म्हारें मायें !

दो रूप

बटैई तो
भाग बाटलाई
मोतनिया दिह्या ३

गुलाब रै फूला पर दमकती
टोपा-टोपा ठैरघोड़ो पाणी

—आ जिन्दगाणी !

अर कठई

अमावा री भट्टी मे

नितूकी जरूरतां रै तबै मायै

टोपा-टोपा पहतो पाणी

—आ जिन्दगाणी !

आमा

घरती-दफतर री पैसी गिपट सू

छुट'र आवतै

तप्यै-थक्यै सूरज री अगवानो खातर

सिद्धी साड़ी पैरपां कभी मिथ्या

हेताळू हाथां सू परसती बीरो डील

सेयगी समन्दर-महलां में

रातवासै खातर

दिन ऊग्यो तो

भीर रो बुक्को सेय'र

सूरज टुरग्यो पाछो

सागी आमा मायै

उजास बांटण खातर—

घर कूपां : घर मजतो !

घाणी में जुत्पां पछे...

उमर रै आदूगरियै

केसां रै कर न्हाखी

चांदी री कळी

पाण आयोड़ुं डील मायै—

पहग्या सळ

बीता हुय'र सटकग्या—

हुंगरिया उरग

इण घाणी में जुत्यां पछै
 कुण जागै किस्ती गळी
 नाठग्या उमाव
 सीवणा सुपनां सजावण आळी आध्या मे
 हेरो न्हाळ्यो परबिद री चिन्तावा
 भांत-भांत री
 राग रागणियां री जग्या
 गीतां मे बसग्या—
 आटै दाळ रा भाव !

बबळाव

सुण भायसा
 बै दिन गया
 जद धारै आवण री खबर मुणताई
 ग्हारो मन करण सागतो पड़ी
 अबै तू आवै जणा
 मुळक र मिमू तो सरी
 पण मन में सोचतो रैवू—
 आछी अळयत गसै पड़ी !

म्हूं अर म्हारी भोम

□ सुरेश पारीक 'क्षशिकर'

कतरी बाछी लागे म्हनै या भोम
हैं पर उगेड़ा हरपा हरपा हंघ
बादळा तू बाता करता
ऊंचा ऊंचा डूगर
कळ कळ करती
बारा मास बेंवती नदया
झरमर झरमर शरता
निरमळ पाणी रा शरपा
जे मिनख सुरम रा मोटो मोटा
सपना संजोवै
वाने किया समझाऊं
या बात वा रे हियड़ा भैं
कणी भात रमाऊ
कै जठे जिनवाली रा मीठा
नत नुवा भीतङगा मृजे
मिनख मिनख रे मागे
भाटा नै भगवान वणा पूजे
मन जणी ठोर पैठ
मांघ मोच खुशी रो दिहोळो मूर्त
मन रा बाग म्हे परेम रा

फूलड़ा फूसै
मूँ, सांच पूछो तो
उण ठौर नै ही सुरम जाणूं हूँ ।
उठै ही राम राज मानूं हूँ ॥

जग री चावना

□ गिरधारीसिंह राजावत

भाज
ओ बाखी जग
षोर है, प्रष्ट है
सुन्वो है, सफ़वो है
अर स्वार्थी है ।
पण धारं में
आमे सूं एक भी अवगुण
मोजूद न्है;
आ समाज नै
फूटी आँख ही नी मुहावै ।

जग
कत्तो' इ बुरो है
पण तने तो
निष्ठावान, विश्वासजोग
नेक, शरीफ, त्यागी
अर सेवा-भावी
यानि दूध रो घोयो'इ
देखणों चारै ।

बात कुछ अटपटी है
पण बाजिव भी है

क्यूँक—

भां काची कूपळां पर
धारे ही व्यक्तित्व री प्रभाव
धणो पड़े है !

अंधारो अर उजालो

□ जयसिंह घोहान 'जोहरी'

अणचाया अंधारा खिण मोकलो दुख भिंधेर देतो,
सिन्ध्या ढलवा उपरान्त ऊंग्याणी जांघयां पै पतक पड जासी
मीदइत्यां सपना में दुखती दरप भर जासी
मुणसाण भाव पै सन्नाटो तिर जासी
अर कुन्दण कोरां पै काली ओळां फिर जासी
इण रे विपरीत—

दुरासाळें मरी चांदणी ने रुंद र
जिण बेळां भभक तो भाण ऊगसी
उण बेळां उजळा जासी मम री घेरी घाटियां
सुळण जासी आसा-हॅख री रातोडयी कूपळां
पिणळ जासी हिवडा-हिमाळा री हेम कुन्डियां
अर हुळस जासी ज्ञान-भाटी री मोनन मणियां
घणी टणकी विद्या करे आंधूणे अंधारा स
उजळ उगाण री बेळां ।

अमरीष

□ नन्दकिशोर चतुर्वेदी

मैं जाप्यों हो कै
कटगी अवे अन्धारा री काळ रात
आकाश मे उग्यो
नव सूरज नूकी रोशनी साने
अवे सूना आंगणा
बैरान बगीच्या
अर सूखा खेतों में
बैवेला सावणी पून
टूटेला सरणाटा री मून
काल तक ज्यों नामा रो जादू
चमके हो सूरज ताई
गमके ही आसूं भारत री तरणाई
मोटा शहर रा राजकीय बाग ज्यूं
सबे और चरम सुखा री
अणहद नाद रा आनन्द सी
अनुमति गमके ही
कै अब मुद्रिया रा खेत मे
पटवारी पुलिस रा अहंगा नी लागी
न चक्कर लागे
कचेरी रा हाकमां री कुर्सी रे
ज्यूं के बदलिया है

सोम अर व्हांका चेहरा
व्ही अणचीत्या तूफान मे
पण ओ काई
भरपा दोपेरा पडणी घुंग
मेरो अन्धारो
चालणी लूट, चारुं लूट

मियानो कुण देव ?

□ दूर्वासिंह काठात

जेठ री घू घू करती
'सू' मांय तपै,
चोटी सूं एही ताई पाणी सरै
जाणे स्वांत बूंदों सरै ।
घनेरा फागण आया अर गिया
पण
घूमरों री घमरोळ
अर बंग मायें थाप
रै सायें
धिरकणो कद भूस्यो ।
सिन्ध्या बेतों पर पूर्ण—
अर देखै
बा पाणी वो भूय बुसाती मरवण
पण
कुछ्छाट करता भूखा टावर
धानि हियदा
रै खेप
मंतोष री गुटकी दै ।
अस्यो सन्तोष अर राबर
आकास-माताळ मांय
नी दीसै ।

आगँ उण रा सेतों माँय
 संतोष नीपजँ,
 क्रान्ति री ठोढ़
 गाँधी रा
 आखर उगँ ।
 सेती सूखँ
 घन धूकँ
 घर-बार बसँ
 पण ओ लाहलो
 साबरमती रा
 'राम-राज' रा गीत गावँ ।
 वो किण रँ आगँ हड़ताल करँ
 वो किण रँ आगँ माग करँ
 वो किण रँ आगँ परवरसण करँ
 हण सवासों रो मियानो
 कुण देवँ ?

पंखेरू

□ ज्ञानसिंह चौहान

मुणज्यै भाई सांघी वातां,
कान सगाज्यै काठा ।
गरज पड़े तो हलबो हलै
नी तर कोरा रोठा ॥

बोल्यो बोल्यो रे पंखेरू मनमौजी बोल्यो ।
बोल्यो बोल्यो रे समानो मतवाळो बोल्यो ॥
मतलब मीठो, स्वारस्य सांघो,
गरज यूजरी बोलै ।
मीकै मीकै मूडै ताळा,
'निछमी' मुंडो गोलै ॥

बोल्यो बोल्यो रे...
बोल्यो बोल्यो रे...
दही दूध मायण रो लोम्प्यो,
'कान्हो' नाचै गावै ।
जूण बदळतां जुग जुग जावै,
धूणी घणा तनावै ॥

बोल्यो बोल्यो रे...
बोल्यो बोल्यो रे...

बल द्वारे बावन बण बोल्पो,
 "नान्हो कान्हो द्वारे ।"
 गरज नही मुख फूल्ये बोले,
 "काम कंई है चारे ?" ॥

बोल्पो बोल्पो रे...

बोल्पो बोल्पो रे...

माखण बाँटघो, ग्वास्या भेळा,
 खम्या खेखरा, नाच्या भेळा ।
 सुण रे कान्हा कान लगाव्ये,
 भारत में कद भेळा ॥

बोल्पो बोल्पो रे...

बोल्पो बोल्पो रे...

दूजां नै ओ 'दूदो' दासै,
 तिल रो ताड़ बनावै ।
 काँच उपाड़ो भैरा भाई,
 हाथी गोता खावै ॥

बोल्पो बोल्पो रे...

बोल्पो बोल्पो रे...

भूखो बाँच्या पाटी सूतो,
 घाप्यो जगत जगावै ।
 भूख पत्तीनो देय बनावै,
 घाप्यो आग तगावै ॥

बोल्पो बोल्पो रे...

बोल्पो बोल्पो रे...

नेम घरम भूखां रै पांती,
 घाप्यां रै मळियारा ।
 साँचें काळिख, रंग्या मिलै है,
 घाप्यां रा बणियारा ॥

बोल्पो बोल्पो रे...

बोल्पो बोल्पो रे...

साँच सबरका पैर्यां डोलै,
झूठ 'झूट' में सोवै ।
नहीं साँचनै चणा चबीणा,
झूठ जलेबी खावै ॥

बोल्यो बोल्यो रे...

बोल्यो बोल्यो रे...

मैं 'ल' माळिया माल मलीदा,
दो 'नंबर' री यारी ।
जलक जलक झाँकें झुंपी सू,
छरी कमाई छारी ॥

बोल्यो बोल्यो रे...

बोल्यो बोल्यो रे...

नीर छीर मतलब रा बेसी,
तप आयां उड़ जावै ।
साँची बातों तीखी तीखी
मोर पाँच यू गावै ॥

बोल्यो बोल्यो रे...

बोल्यो बोल्यो रे...

अजूबो

□ मगरचन्द्र दवे

कित्ता अजूबा होवे है ए लोग...!
चोर ने केवे
तू चोरी कर
कुत्ता ने केवे
सावचेत हो'र भूंकतो रीजे
ने, रखवाळिया ने केवे—
चेत'र रीजो—गड़बड़ सुणीजे है...!

बूआल्ही ने केवे
डोसी छुसट है...
बाबा आदम रे जमाना री बार्ता करे
आको-दिन गाडियोडा मुर्दा उखाडे
आगे ही जाय'र सासु ने बतलाये—
बीदणी ने लाज-शरम कोनी
बडा-बुजुर्गा री मे
की नी समझे...
गांवडा री रीत-भात सु तो—
उण रो की नी लेणो-देणो...

कैसा होवे है ए लोग...!
जिण ने—

मिनख-मिनख ने सड़ावण में झज—
आपन्द आवै !
घर उजड़ता देख
वाँ री छात्‌याँ ठंडी होजि...
फित्ता अजूबा होवे है ए लोग...?

थांरो सूरज तूई उगाव

□ वासु भाचार्य

हंयां-कियां पार पड़ेला
नीं पड़ेला
उछड़ जायला
म्हारा भायला
जमणे सूं पैसी ही पग ।

घोषी बाप्यां रे विसवास
फुरण्या फुलायां
डोळा धुमायां
भीर भवारां ताण्यां
सपर चपर जीभ चलायां
कोई बोळको नीं हुवेला

उछड़ जायला
म्हारा भायला
जमणे सूं पैसी ही पग

ई खातर
जे पावै ऊगणों
मंजस भाथे
पावै पूगणों
तो फूल पत्ता डाळयां सूं पैसी

बीज कानी निजर पसार
बीरो पीढ़ जाण पिछाण

ई खातर
हिये मे ठावस
मायें में मजबूती धार
सुणनी सबरी
करणी मनरी
माईतां री हयें सीखरी
बाँध गांठड़ी
पैर पगरछी
बार निसर

तन उठीकै—

गाँव—

गाँव री पगडान्दयां
काटां भरिया जाँ रा रस्ता
बे झूपड़ियां जर बे डाण्या

निजू भाषा भति भरोसै
नूँई बेतणां
तू फेलाव
बमूजै भरियै भाभै में
धारो सूरज तू ही उगाव
धारो सूरज तूँई उगाव

थे

रूपसिंह राठौड़

हूँ...तो
दूध रो दाज्योड़ो
छा नै
फूँक-फूँक नै पीऊं
एक ये हो
कै बल्लूँ पर
खूण और बुरको
इण वास्तै—
कै हूँ सदा—
इस्योई लादू—
नै मरुं नै जीऊं ।
हूँ नी जाणतो—
कै—आ पांगली डाकण—
भरकां नै इज खासी
साँप रा पग—
अलाय इज जाणै—
म्हाने के बेरो हो—
रे कंकई माँ—
इहा दे जाळ माँ ।
खैर ! कोई बात नीं—
टके री हांसी फूटी—

गंडक रो जात गई—
महे तो इस्याई सादांना
थारी इज वात गई ।

कित्ता कांइया हो ये
खुद इज फंसाय
जमानत बी सेल्यो
उणासूं—
पुचकारो बी ये
अर जरको बी देख्यो ।
चीमटाऊं रोकणियो
भैल बदलण मा
ये हो पूरा मांड
म्हाने तो मोत
ऊपराऊं पडघाई कोनी मिल
कै थारी
पाटईऊं पडताई
होज्या नानी रांड ।
कैबा नै तो
ये हो
लिछमी रा पूरा
पूत—
अफल रो
दिवाळो नितरग्यां
दीर्घ
ये व्यावाळा हो
जुत ।
कित्ताक रोवै
टाबर टीकर—
वित्तीयक रोवै
नार अभागण
जिका नाथै
थारै मिर-माटी गारो
मरज्यावो नाक डबोर
दकणीं भा—

घरख है
 पारो मिनख जंवारो ।
 पारै हियै री
 कयां फूटी—
 इव भोत पारै सिर गाजै
 कै सायरां ठीक इज कैयी
 मौत आयो गादड़ो
 गांव कानी भाजै ।
 औजूं बी
 म्हे गयी गैलनै
 देद्यां—
 जे—ये—त्यो
 आनै री सुद
 नी—तो
 ह्याबैला कागला हाडी
 मार्चैलो
 इस्त्यो जुद ।

मैं अवीजी चढ़ रयी हूं...

□ मण्डलदत्त व्यास 'पयिक'

रुंछ

धरि ग्यान रो

ओ !

पसरियोहो आर-पार

सोक-परसोक

दिगदिगन्त (व्यास कूट)

जिणरी छाव नीचे

निपजती ही जारयी है

करुणा भयोही कूपळां

फूल साहित रा रंगीला

जूनें जुग री जाजमा नें

सटक नें

नुषी मसनद की बिछावती

इण छाव नीचे सैं मिळै है ।

अर म्हें,

बेतही सटयहावती

जह पड़ी

लिपट नै

ऊँची चढ़ण री चाह तियां

उग रयी हूं ।

फूल री फाटी भुं'फाटी

कूपळां नुवी नुवी है
तात रा बाहु लचीला
खुरदरे घारे तणे पर
सिरकती बळ खावती
म्है अबीजी चढ़ रयी हूँ ।

सीली झील

□ प्रेम बोलावत 'पंछी'

बाद बाघो तूट'र
हमेश धुव जावै है झील री छाती में
जरूरी तो नी है हर नाव रै बास्ते
एक किनारा रो अस्तित्व ।
मत बोवो !
झूठा वायदा रा बिनार
कै अबै इन गूमी झील में
कोई जुवार नी है ।
तूटबा सूं पैली
थकीज्योड़ी सहरां इन भांत कहाँ कै—
सीला सांसी री बिणगारियां इन
घणी नी है
अघजळपो सिलो जळाबा नै ।
पण
अनाथ मजबूर्यां रो
एक ही कांटो घणी है—
जिदगी भर हंसबा हलाबा नै ।

एक कविता

□ नमोनाथ भवस्थी

उधूं उधू बहै है मिनख ऊपर
कम होवे है ठोर भर
छावण सागे है ज्यारूं मेर सू संघर्ष,
अगाड़ी होवे है देखण हाळा रो फिकर
भर पड़दा रै मांय सूँ
उफर्ग है बरावणी खबर।

मिनख कई बार
झूठा सांच सूँ डर'र भायै है।
पण सनमान धर जिनयाणी री एम्पासी
धाम सेवै है बीं रो हाथ—

जद मन पैसी बार,
जाण सकै है क
टैम धनो पोहो है भर काम ज्यादा।
इण चाल चुक मं
मी तो बो सोवै भर मी किणी नै सोवण दे।

इण ठोर सूँ ई
मेक पगडण्डी मुहं है
जठै मिनख
अेक चतुर बैरुपिया री नाई सागे है।

મનહો

□ કૈલાશ 'મનહર'

આંસુ આંસુ ખીજ્યો મનહો
દરદા દરદાં છીજ્યો મનહો
મૌત ખાયલી આય મિલેં કદ ?
જિનગાની સૂં છીજ્યો મનહો...

રાતાં રાતાં રોવે મનહો ।
બીજ પ્યાર રો વોવે મનહો
કોઈ તો હિમલાસ બંધાવે
, બાટ જિના રી જોવે મનહો...

લિચમ્યો પારે માંઈ મનહો
કુરી કરી છી કાંઈ મનહો
મરવા નેં છૈં પ્યાર બાપહો
દેહો પારે તાંઈ મનહો...

जेठ-वैसाख

□ चमन यी० राव

बीजण चमकसी
सूरज मे,
बूढण पाणी—
परकास ।
टपकै बूंद-बूंद तन स
क्यू लागै
पिब प्यास ।

एक च्यूटी तावड़ी

□ रामस्वरूप परेश

कुण बसेरी

तागळी-सा आगणा मे

एक च्यूटी तावड़ी

त्रिनग्यानी धांदे अठे बूदी

सै जेज री जूती करे गुंदी

मूळं चिपरी उजळी किरण

आगुवा सू पांपरे अंधारी डावड़ी

एक च्यूटी तावड़ी

नित गुंवा गाभा बदळले अपणेत

माणघो दे घणेरा प्रीत रा उपदेत

एवढ-छेउट मिनघ मोकळा

पण मिनघ रे बीच सागू आवड़ी

एक च्यूटी तावड़ी

छिपकल्या रो डर घणेरो घेर

इजगरा रो थोळियो ठे वर

बायरा रं सागै सागै चाल

हियारी सै मळपा कर तावड़ी

एक च्यूटी तावड़ी

वारणा पर मंडरपा चढ़ता मोर
 मांगणां में सुधरपा डाकू-चोर
 आखरा रा बदलपा सँ अरथ
 मांगधा नै तोत बदल ताकही
 एक च्यूटी तावही ।

जेज री डोळी मतां डाकै

जेज री डोळी मतां डाकै ।
 प्रीत री पोळी मतां डाकै ।

चाँद भूँ घुलतू स्यापो
 समदरां लूण ही पायो
 जमी सँ से गिगन ताँई
 निस्फळ तू मतां पाकै
 जेज री डोळी मतां डाकै

जमी पर पग जमै कोनी
 गिगन मे तू थमै कोनी
 मुरग नै तारि न्हे स्यास्या
 भणूँती बात मत भाकै
 जेज री डोळी मतां डाकै

कठै इतियास तू बगरपो
 कठै भूगोल तू भगरणो
 किणी रे पाव नै सीता
 के पारी भांगळी पाकै
 जेज री डोळी मतां डाकै

धुसी रा धुंजिया रीता
 ददं पण लाय अणचीता
 तू मांहे मांढणा कूळ
 चौक मे घापडपां घाप
 जेज री डोळी मतां डाक

मरुधर बीच

□ रमेशचन्द्र शर्मा 'इन्दु'

बादल पाणी दे या ना दे यहाँ पाणी तलवारों में ।
रही जवानी सदा उफ़णती मरुधर बीच कटारा में ॥

भूखो नाहरियो मर जासी, पण मांग जुगाळी कोण करै ।
चातरुडो प्यासो मर जासी घूब तलावां कोण धरै ॥
राज-धली रो रगत अस्यो रे, आबया पाणी कोण भरै ।
जुग जुग पडपा अकाळ घणां पण मूछपा नीची कोण करै ॥
कै घेरपा रो रगत पियो कै कूद पडपा अंगारा में ॥
रही जवानी सदा उफ़णती...॥

घोघा वाप्पा, कुम्भा, सांगा, अण घायां जुग भीत लडपा ।
गोरा-बादल, दुर्गा-दादो बूद रगत तक लडपा भिडपा ॥
छपना भोग तज्या म्हेला रा, अपना हाथा जोर करघो ।
चूढावत नै हाडा राणी सीस काट नै सूप दियो ॥
मेवाड पती (राणा) रो पाणी कोनी मायो नही नाळा में ॥
रही जवानी सदा उफ़णती...॥

धिरपा विपत रा बादल मुड मुड सत री बाट तजी कोनी ।
जीवन दान दियो जुग जुग नै मागी भीष कदा कोनी ॥
सदा लोहडो गळै नगायो, सोना री आस करी कोनी ।
देई राम सो लई बाजरी भाता री बाध भरी कोनी ॥

मात पालनै मरण मिछायो भगणो कौण हजारो मे ॥
रही जुवानी सदां उफणती... ॥

घणा छून री नद्या भवाई, आज पसीनो भावैला ।
सूछा रेतं रा टीबा मा गीवा छान उगावांला ॥
मार रा राग घणा गाया, फमळा रा गीत सुपावैला ।
जुग-जुग रो साथ सदां दीयो या जुग री साथ निभावैला ।
भुज-दण्डा रो जोर करां भावां गंगा मरु-सारां मे ॥
रही जुवानी सदां उफणती...॥

गीत

□ रामनिवास सोनी

चाल अगाड़ी चाल बटाऊ धने चालणो पड़सी ।
हिम्मत हारपी नहीं सरेला घांरी जूण सुवरसी ॥

मारग दे काँटा भूटा री करले नेक पिछाण ।
सुख रा साथी मिले मोकळा दुःख रा हैत अजाण ॥
जीवन लांबो छेत उमर भर धने साटणो पड़सी ॥
चाल अगाड़ी... ॥

जमी उगाळो आग गिगन सू बळझळ चीरा उपडे ।
मोटा टोळ करे अरडाटा मीत मानवी मकड़े ॥
भाग धरोसे दे मत मोळा पीढ़ बांटणो पड़सी ॥
चाल अगाड़ी... ॥

ब्यूँ आकासी निजरी ताके छोट पराई जात ।
स्वाती बूँद ओस दे टपके किरा बुझेना प्यास ॥
प्रीत पुराणी पय कंटीलो पके काटणो पड़सी ॥
चाल अगाड़ी... ॥

आदमीं अर आदमीं

□ मोहम्मद सदीक

आदमीं रँ आदमी भंरुटिया भरँ ।
चूँट सेवै चामड़ी चरुटिया भरँ ॥
धीच सेवे खासड़ी भंरुटिया भरँ ।
म्हारे म्हारा आदमी भंरुटिया भरँ ॥

ह्वां-रुडो मानखो तो सामने भरँ ।
काची काची कूँपळा सै ऊगती डरे ॥
कूँगड़े ज्यूं आदमी अकूरड़ी चरे ।
माटी रा गितूणा अठ्ठे टूटिया करँ ॥

सामी देख लाय अठ्ठे लोणड़ा डरे ।
फूसका रँ डेर मायँ आय क्यूं घरे ॥
हीये माँ लो घाय किसी बातस्यूं भरँ ।
भासरो उजास बठ्ठे रुठिया करँ ॥

दूँठे हाळी ठोढ़ किसी भीमरी डरे ।
बाकेरो बघाण किसी पीढ़ ने हरे ॥
हाजमा-हजूर थारे आदमी जरे ।
पीढ़ा ने पळोस पाछे सूटिया करँ ॥

जामणी रा जाया हाथ खून स्यूं भरै ।
 लोई रो तलाव देख पाळ रे परै ॥
 काळजे मे हूक उठयां नैन तो भरै ॥
 हीणे हाथा बारसी जे छूटिया करै ॥
 पाणी रे पतासे नाई फूटिया करै ॥"

रोजीना रामा'ण

सूने-सूने पीजरे रा खाली खाली खण है
 मोळ मोळ चैरां माथे
 दुखड़ां रा गण है ।
 घूघरां मे गुंज कोनी
 कोरी भण-भण है ।
 बांसडी मे बैटा अर-हीजड़ां रा गण है ।
 सूने-सूने पीजरे रा खाली खाली खण है ॥

आसा री उठार म्हारी
 आकासां मे छा'री है ।
 माड़ी नीत आदमीं री
 आदमी ने छा'री है ।
 लागे जाणे फीफरां में
 सांस जग्मी जा'री है
 भूवाजी भल्लार म्हारे
 आंगणे मे गा'री है
 रोजीना रामा'ण बठ्ठे पग-भग रण है ।
 बोले जिकै मूढे माथे मोटा-मोटा धन है ॥

काचरो है काचरो—रे
 ध्यान राख घात—रो
 फाड़ देवें दूध ओ तो
 आदमी री जात—रो

योड़ो-घणो मोल कर
सामलें री लातरो—
भाजरी रा सिट्टा कोनी—सांपलां रा फण है .

घोळी घोळी वातां बिच्चे
काळा काळा सिल है
घोरा हाळी घरती माये
सांपलां रा बिल है ।
काळजे री ठोड़ अठ्ठे
खाट्टू हाळी सिल है
कीटी ने तो कण कोनी—हापीड़ा ने मण है ।
कामपेनू कोनी ईरा खाली खाली यण है ।

मिलण री बेळा आई रे

□ बुलाकीदास मावरा

आज मिनख रें माघें माघें पाग सवाई रे ।
मिलण री बेळा आई रे ।

दबियोड़ी ही भोग रेत स्यूं ।
दुवस्योड़ा हा ताळ;
इण विघ्न आघी आई ही
कै जीणों हो बेहाल;
पण बीती बा रेंण, प्रभाती राग सुहाई रे ।
मिलण री बेळा आई रे ।

आशा रे हण तम्बूरे रा
कसबा लाग्या तार;
घडी हरख री पूठी आई,
दुःख नै दिवो विसार,
आयो रे जनराज, मना री करो सफाई रे ।
मिलण री बेळा आई रे ।

क्यूं करइंवाण करे सावणिया ?
भारी बीती भार;
नाळपा स्यूं परणीजें मुरवा,
थारा दिनड़ा चार;

धमक उठपो नहरणा रो पाणी, अम्बर तार्ई रे ।
मिलन री बेळा आई रे ।

तू मालक धारी मेहनत रो,
धारी किस्मत आला;
नुंको जमानो धारे घर में—
करे जस री माळा;
रगड़ा-झगड़ा छोड़, उठो सै लोग लुभाई रे ।
मिलन री बेळा आई रे ।

सलट धूँपटो धा बोलेली,
बल्ल्यां ने दो छोड़;
छुक-छुक करते टेबटरिये स्मू,
सेबो नालो जोड़;
मिट जाती सो लोई-धूम्यो, धणी कमाई रे ।
मिलन री बेळा आई रे ।

बीज घणा रे, खाद घणो है
धारी हिकमत नाचै;
इन माटी रे हाथो माये
कुदरत मैदी राचै;
धारे आगण सुगनी नाचै, साथ सुहाई रे ।
मिलन री बेळा आई रे ।

ठिकाणां लेखकां रा

अर्जुनसिंह 'अरविन्द', काली पलटन रोड, टोंक ।
 अर्जुनसिंह शेखावत, प्र० अ०, उ० प्रा० विद्या० फालना गाँव, पाली ।
 ईश्वरसिंह कुलहरि, प्र० अ०, रा० मा० विद्या० ढाँडण, सीकर ।
 डॉ० उदयधर शर्मा, प्र० अ०, रा० मा० विद्या० बड़वासी, झुंझुनू ।
 ओमदत्त जोशी, स० अ०, रा० मा० विद्या० बाघसूरी, अजमेर ।
 कल्याण गौतम, डिगल साहित्य सदन, चौतीना कुवा, बीकानेर ।
 कुन्दनसिंह 'सजल', स० अ०, रा० मा० विद्या० पाटन, सीकर ।
 कैलाश मनहर, स्वामी मोहल्ला, मनोहरपुर, जयपुर ।
 गिरधारीसिंह राजावत, रा० मा० विद्या० कोतिया, नागौर ।
 चमन घो. राव, म० अ०, रा० मा० विद्या० कानोड, उदयपुर ।
 जयसिंह चौहान 'जौहरी', जौहरी सदन, कानोड, उदयपुर ।
 दीपचन्द मुखार, रा० उ० प्रा० विद्या० नं० १, मेडता सिटी, नागौर ।
 हर्दासिंहकाठाल, व० अ०, रा० उ० मा० वि० देवगढ मदारिया, उदयपुर ।
 नमोनाथ अबरथी, ख. वैश्य प्रा० वि० ह्रीदा की मोरी, रामगंज, जयपुर ।
 नन्दकिशोर चतुर्वेदी पो० पाछुन्दा, बाया बेगू, बितौडगढ ।
 डॉ० नृसिंह राजपुरोहित, पुरोहित कुटीर, पाडप, बाडमेर ।
 प्रेम शेखावत 'पछी', पो० नामल कोजू, बाया इटावा भोपजी, जयपुर ।
 व० ना० कौशिक, प्राचार्य, विद्यापी शिक्षण महाविद्यालय, श्री गंगानगर ।
 ब्रजलाल स्वामी, रा० उ० मा० विद्या० भालारामपुरा, श्रीगंगानगर ।
 बुलाकीदास 'बाघरा', सूरसागर के पास, बीकानेर ।
 भगवतीलाल ध्यास, ध्यास्याता, तिलक टी. टी. कॉलेज, डबोक, उदयपुर ।
 भोखालाल ध्यास, राज० मा० विद्या० अजीत ।
 मगरचन्द्र दवे, स० अ०, रा० मा० विद्या० हरजी, जालौर ।
 मोठालाल खन्ना रा० प्रा० विद्या० साँडवाव, जालौर ।
 मुरलीधर शर्मा 'विमल' रा० मा० विद्यालय, मेडता शहर ।
 मोहम्मद सदीक, रानी बाजार, बीकानेर ।
 मंडलदत्त खास, रा० उ० प्रा० विद्या० नं० २, मेडता सिटी नागौर ।
 हर्पासिंह राठोड़, स० अ०, रा० उ० प्रा० विद्या० बास घासीराम, झुंझुनू ।
 रमेशचन्द्र शर्मा 'इन्दु' रा० उ० मा० विद्या० ग्योह, बाया खेरली, अलवर ।
 रामनिवास सोनी, भगतजी की पोत, मेडता शहर, नागौर ।
 रामस्वरूप परेश, पीरामन उ० मा० विद्या० वगढ, झुंझुनू ।
 रामेश्वरदयाल श्रीमाली, प्र० अ०, रा० मा० विद्यालय, जवाली, पाली ।
 लेखराम सोनी, रा० उ० मा० विद्यालय, भालारामपुरा, श्रीगंगानगर ।
 धामु आचार्य, बाहेती चौक, बीकानेर ।
 श्यामसुन्दर भारती, रा० उ० मा० विद्यालय, गुडा बालोतान, जालौर ।
 धीनन्दन चतुर्वेदी, १४/३१६, वजाज ग्याना, टाकोतपाड़ा, कोटा-६ ।
 सांवर बड़या, जेल रोड, बीकानेर ।
 सुरेन्द्र अंचल, रा० उ० मा० विद्या० भीम, उदयपुर ।
 सुरेश पारीक शशिकर, स० अ०, रा० मा० विद्या० हुरडा, भीलवाड़ा ।
 नार्नासिंह चौहान, व० अ०, रा० उ० मा० विद्या० टाडगढ़, अजमेर ।

